

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका
चतुर्थ अंक | वर्ष 2024-25

नागकेसर



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला-799 006

अगर वृक्ष

अगर वृक्ष त्रिपुरा का राज्य वृक्ष है और यह माना जाता है कि राज्य की राजधानी, अगरतला का नाम इस वृक्ष के नाम पर रखा गया है।

अगर का पेड़ या एक्वीलेरिया मैलाकेंसिस (*Aquilaria Malaccensis*) दवाओं और इत्र का एक प्रमुख स्रोत होने के साथ-साथ, आईयूसीएन सूची में गंभीर रूप से एक लुप्तप्राय प्रजाति होने को आया है, हालांकि यह त्रिपुरा राज्य में बहुतायत में पाया जाता है।



यह वृक्ष, जो कभी विलुप्त होने के कगार पर था, अब भी पूर्वोत्तर भारत में अस्तित्व में है। सदाबहार पेड़ों में इसकी वृद्धि दर सबसे तेज है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दुनिया की सबसे दुर्लभ और सबसे महंगी लकड़ी 'अगरवुड' (*Agarwood*) है, जिसे 'भगवान की लकड़ी' भी कहा जाता है।

नागकेसर

अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका
चतुर्थ अंक | वर्ष 2024-25



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
त्रिपुरा, अगरतला-799 006

नागकेसर

चतुर्थ अंक

प्रधान संरक्षक

श्री रणेंदु सरकार, महालेखाकार

मुख्य संरक्षक

श्री काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
सुश्री तनुश्री बिश्वास, व. उप महालेखाकार (लेखा व हक.)

संपादन परामर्शदाता

श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कालीपद पॉल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मण्डल

श्रीमती दीपान्निता दास, वरिष्ठ अनुवादक
श्री सुमित कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
श्री अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
श्री कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
श्रीमती स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ पर छायांकन एवं लेख

श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

रणेंदु सरकार
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं (लेखा व हकदारी)



संदेश

हिंदी पत्रिका 'नागकेसर' के चतुर्थ अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशन संयुक्त रूप से दोनों कार्यालयों, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा महालेखाकार (लेखा व हकदारी) के कर्मठ और लगनशील अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों से संभव हो सका है, जिन्होंने कार्यालय में कार्य करते हुए अपनी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा को संरक्षित किया है और साथ ही साथ कार्यालय में हिंदी के वातावरण को बनाए रखने में सहयोग दिया है। वे सभी बधाई के पात्र हैं।

इस विभागीय पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिंदी के प्रति रुझान का विस्तार करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। भाषा मानव के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। आपसी संबंधों को जोड़े रखने का साधन है। मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भविष्य में अपना अमूल्य योगदान इसी प्रकार देते रहेंगे और हिंदी को अपने साहित्यिक ज्ञान एवं रचनाओं के माध्यम से आगे बढ़ाते रहेंगे।

आर. सरकार.

(रणेंदु सरकार)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं (ले. व. ह.)



हिंदी उन सभी गुणों से
अलंकृत है जिनके बल
पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में
सभासीन हो सकती है।

मैथिली शरण गुप्त

संपादकीय



राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना न केवल हम सभी का परम कर्तव्य है, अपितु संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इसी अनुक्रम में, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), त्रिपुरा, अगरतला की संयुक्त हिन्दी गृह-पत्रिका 'नागकेसर' का चतुर्थ अंक (मार्च 2025) आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'नागकेसर' पत्रिका के आवरण पृष्ठ और पार्श्व पृष्ठ राज्य की सांस्कृतिक विरासत तथा प्राकृतिक झलकियाँ प्रदर्शित करते हैं और इनसे संबंधित महत्वपूर्ण संक्षिप्त विवरण भी दर्शाते हैं। पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने स्वरचित व मौलिक अनुभवों, संस्मरणों, यात्रा वृत्तांतों, विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों एवं कविताओं के माध्यम से प्रशंसनीय और उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया है जिससे उनके लेखन कौशल की सार्थक अभिव्यक्ति हो पायी है।

पत्रिका में एक ओर जहाँ विचारों की सहज और सुन्दर अभिव्यक्तियों से युक्त रचनाएँ हैं तो वहीं दूसरी ओर महाभारत की शिक्षाएं, आधुनिकता के दौर में परिवार के महत्व का सजीव चित्रण है। त्रिपुरा की विविध संस्कृतियों के साथ-साथ पर्यावरण को संरक्षित करता शाकाहार और वहीं धार्मिक आस्था को दर्शाती विश्व की प्राचीनतम नगरी-वाराणसी एवं बिहार की छठ

पूजा, भारतीय पौराणिक साहित्य में पक्षियों का उल्लेख, कोलकाता के लजीज व्यंजनों को दर्शाता कोलकाता का स्ट्रीट फूड, तथा राजस्थान के प्रसिद्ध पुष्कर मेले का सजीव चित्रण है।

संपादक मण्डल और संरक्षक मण्डल दोनों ही कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि वे भविष्य में पत्रिका हेतु अधिकाधिक मौलिक रचनाएँ अनवरत रूप से प्रदान करते रहें और आशा करते हैं कि आगामी 'नागकेसर' पत्रिका के अंकों में विभिन्न नये-नये रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रासंगिक बनाने हेतु अपनी भूमिका का निर्वहन कर राजभाषा के विकास में अप्रतिम सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	अंकुर कुमार पांडे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	1-2
2.	अगरतला और पास के दर्शनीय स्थलों की यात्रा : एक यादगार क्रिसमस	अजय कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	यात्रा वृत्तान्त	3-7
3.	कोविड – 19 की दस्तक	अजित दास, डी.ई.ओ, ग्रेड-बी	लेख	8-11
4.	त्रिपुरा और औद्योगिकीकरण	अजित देबनाथ, लेखापरीक्षक	लेख	12-15
5.	जर्मनी भ्रमण का अनुभव	अनिदिता धर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	यात्रा वृत्तांत	16-18
6.	महाभारत की शिक्षायें	अनिल कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	19-23
7.	पर्यावरण को संरक्षित करता शाकाहार	अमित गौरव, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	24-27
8.	त्रिपुरा की संस्कृति : विविधता और समृद्धि का संगम	अशितीमा मल्लिक, लेखापरीक्षक	लेख	28-31
9.	हिल स्टेशन	आशीष कुमार गुप्ता, एमटीएस	लेख	32-36
10.	कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व	आशीष वर्मा, लेखाकार	लेख	37-39

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
11.	कामचोरी: आदत या मजबूरी	उज्ज्वल कांत, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	40-45
12.	भारतीय लोकाचार	कुलदीप, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	46-49
13.	धनी व्यापारी	कृष्ण कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	50-55
14.	ज़िंदगी के उतार चढ़ाव	गौतम कुमार, लेखाकार	लेख	56-59
15.	कार्य-जीवन संतुलन कार्य और व्यक्तिगत जीवन के प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ	चन्द्रिमा बिश्वास, लिपिक	लेख	60-64
16.	बच्चों के जीवन में परिवार का महत्व	नरेन्द्र कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	65-67
17.	प्राचीन भारतीय साहित्य में पक्षियों का उल्लेख और उनका महत्व	पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	68-73
18.	पुष्कर मेला	प्रधान चौधरी, एम. टी. एस.	लेख	74-76
19.	भारत की कला एवं संस्कृति	बिपाशा सरकार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	77-80
20.	मेरी अविस्मरणीय यात्रा	राकेश चन्द्र श्रीवास्तव, सहायक लेखा अधिकारी	यात्रा वृत्तान्त	81-84
21.	ऑनलाइन शिक्षा पद्धति	राजीव कुमार- I, लेखाकार	लेख	85-88
22.	मेरा मित्र: लियो	राहुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	संस्मरण	89-91
23.	मेघालय यात्रा का अनुभव	रोहित कुमार, लिपिक	यात्रा वृत्तांत	92-94

क्र. सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
24.	मनरेगा के ऑडिट के दौरान कुछ अविस्मरणीय यादें	रोहित कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	95-100
25.	एकाकीपन	विप्रतीप दास, लेखापरीक्षक	कविता	101
26.	भारत की प्राचीनतम जीवित नगरी- वाराणसी	विशाल सिंह, लेखापरीक्षक	लेख	102-105
27.	मुर्शिदाबाद भ्रमण : एक सुखद स्मृति	शुभजित चौधुरी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	यात्रा वृत्तान्त	106-110
28.	छठ पूजा में बिहार यात्रा	शुभम कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	111-115
29.	सामाजिक न्याय के पुरोधा : जननायक कर्पूरी ठाकुर	संजीत कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	116-119
30.	कोलकाता के स्ट्रीट फूड्स	सुदीप कुमार घोष, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	120-125
31.	जयपुर – गुलाबी नगरी	सुनिल बगड़िया, लिपिक	लेख	126-130
32.	मेरा शहर: मोतिहारी	सूरज किशोर, सहायक लेखा अधिकारी	लेख	131-135
33.	भारतीय समाज आधुनिक या उपनिवेशित	सौरभ राज, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	136-139
34.	कल्कि अवतार	स्वाती कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक	लेख	140-143
35.	भगवान पर भरोसा रखो	हिमांशु खोखर, डीईओ, ग्रेड-बी	कहानी	144-146
36.	राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान			147-152

अस्वीकरण : 'नागकेसर' पत्रिका की रचना राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से की गयी है। इसमें निहित लेखों, कविताओं इत्यादि में अभिव्यक्त विचार, सुझाव मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय अथवा संपादक मण्डल इनसे सहमत हो।



संपादन सहयोग

श्री अजित दास, डीईओ (ग्रेड बी), कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला

श्री हिमांशु खोखर, डीईओ (ग्रेड बी), कार्यालय महालेखाकार
(लेखा व हक.), त्रिपुरा, अगरतला



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

अंकुर कुमार पांडेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

AI एक ऐसी तकनीक है, जिसके माध्यम से कंप्यूटर मशीनें इंसानों की तरह कार्य कर सकती हैं, जैसे सोचना, सीखना, समझना, समस्या हल करना और निर्णय लेना। यह तकनीक आज हमारे रोजमर्रा के जीवन में गहराई से समाहित हो रही है, और इसके प्रभाव हर क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

AI की मदद से कई कार्य स्वचालित हो सकते हैं, जिससे समय की बचत होती है। उदाहरण के लिए, कार निर्माता कंपनियां रोबोट्स का उपयोग करती हैं।

AI सिस्टम इंसानों की तुलना में अधिक तेज़ और सटीक तरीके से काम कर सकते हैं, जिससे गलतियों की संभावना कम हो जाती है। AI बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से और सटीकता से विश्लेषित कर सकता है, जिससे यह विभिन्न क्षेत्रों में मदद करता है, जैसे कि वित्तीय क्षेत्र में निवेश के निर्णय लेने में।

AI का उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में भी बढ़ रहा है, जैसे कि रोगों का निदान, उपचार की योजनाएं बनाना, और चिकित्सा उपकरणों की सहायता से इलाज को सरल बनाना। AI का इस्तेमाल सेल्फ-ड्राइविंग कारों में भी किया जाता है, जो बिना मानव चालक के खुद रास्ता पहचान लेती हैं।

AI का उपयोग रोगों का पता लगाने, उपचार की योजनाएं बनाने और दवाइयों को सही तरीके से निर्धारित करने में किया जा रहा है। ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स जैसे अमेज़न और फ्लिपकार्ट AI का उपयोग

ग्राहकों को उनके पसंदीदा उत्पादों की सिफारिश करने के लिए करती हैं।

AI का उपयोग शिक्षा में छात्रों की प्रगति को ट्रैक करने और व्यक्तिगत रूप से पढ़ाई कराने में भी किया जा रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदे के साथ-साथ कई खतरे और चुनौतियाँ भी हैं।

रोज़गार पर असर : AI के बढ़ते उपयोग के कारण कुछ नौकरियों का स्वचालन हो सकता है।

सुरक्षा और गोपनीयता : AI द्वारा इकट्ठा किए गए डेटा का दुरुपयोग हो सकता है। यदि डेटा की सुरक्षा सही तरीके से नहीं की गई, तो यह व्यक्तिगत जानकारी के उल्लंघन का कारण बन सकता है।

मानव निर्णयों पर निर्भरता : यदि हम AI पर अधिक निर्भर हो गए, तो हमारी सोच और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

नैतिक समस्याएं : AI द्वारा लिए गए निर्णय हमेशा मानवीय भावनाओं और नैतिकता के अनुरूप नहीं होते। उदाहरण के लिए, यदि AI को किसी को नुकसान पहुँचाने का निर्णय लेने के लिए कहा जाए, तो यह नैतिक रूप से गलत हो सकता है।

निष्कर्ष : कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक नई और दिलचस्प तकनीक है, जो हमारे जीवन को बदलने की क्षमता रखती है। इसके लाभों के साथ-साथ कुछ चुनौतियाँ और जोखिम भी हैं, जिन्हें समझकर और सही तरीके से उपयोग करके हम इसका अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। AI का भविष्य बहुत उज्ज्वल है, और इसके विकास से नई संभावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो मानवता के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं।



अगरतला और पास के दर्शनीय स्थलों की यात्रा : एक यादगार क्रिसमस

अजय कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

त्रिपुरा का मौसम दिसंबर के महीने में ठंडा और सुखद होता है। सुबह और शाम की ठंडक यात्रियों को खास अनुभव देती है। यह मौसम यात्रा के लिए बिल्कुल अनुकूल है, और क्रिसमस की उमंग इसे और भी खास बना देती है।

क्रिसमस का दिन हमेशा से ही खुशियों और उत्साह से भरा होता है। इस बार हमने इसे और खास बनाने का निर्णय लिया। मैं और मेरे ऑफिस के 6 साथियों ने अगरतला से त्रिपुरा के प्रसिद्ध माताबाड़ी मंदिर, नीरमहल और सिपाहीजला चिड़ियाघर की यात्रा की योजना बनाई। यह यात्रा न केवल धार्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कराने वाली थी, बल्कि दोस्ती और आपसी मेलजोल को भी मजबूती देने वाली साबित हुई। सुबह 7 बजे हमने अपनी यात्रा शुरू की, और यह सफर रोमांच और आनंद से भरपूर था।

माताबाड़ी मंदिर की ओर: हमारा पहला पड़ाव माताबाड़ी मंदिर था, जो माँ त्रिपुरासुंदरी को समर्पित है और त्रिपुरा के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। जैसे ही हम मंदिर परिसर में पहुँचे, वहाँ के पवित्र वातावरण और शांति ने हमारे मन को मोह लिया। मंदिर का प्राचीन स्थापत्य और उसकी कलात्मकता अपने आप में अद्वितीय थी। सफेद और लाल रंग के पत्थरों से बना यह मंदिर न केवल आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक है, बल्कि त्रिपुरा की सांस्कृतिक धरोहर का एक शानदार उदाहरण भी है।

मंदिर में प्रवेश करते ही हमने माँ त्रिपुरासुंदरी की पूजा-अर्चना की। माँ की मूर्ति बेहद आकर्षक और दिव्य आभा से युक्त थी। हमने दीप जलाए,

फूल चढ़ाए और अपने परिवार व मित्रों की सुख-शांति के लिए प्रार्थना की। मंदिर के पुजारी ने हमें इस स्थान के इतिहास और महत्व के बारे में बताया। यह जानकर हमें गर्व हुआ कि यह मंदिर भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक है। पूजा-अर्चना के बाद हमने कुछ समय ध्यान और साधना में बिताया, जो हमारी आत्मा को शांति और ऊर्जा प्रदान कर रहा था।

मंदिर परिसर में घूमते हुए हमने वहाँ के प्रसिद्ध पेड़े (प्रसाद) का आनंद लिया। यह पेड़ा अपनी मिठास और अनोखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। त्रिपुरा राज्य के इस पेड़े को जी आई टैग भी दिया गया है। इसे खाते ही हमारे चेहरे पर मुस्कान आ गई। पेड़े के साथ हमने वहाँ के स्थानीय दुकानों से कुछ धार्मिक वस्तु और स्मृति चिन्ह भी खरीदे।

मंदिर परिसर में ही एक तालाब है, जो इस स्थान का एक और मुख्य आकर्षण है। इस तालाब में तैरते हुए कछुए विशेष रूप से ध्यान आकर्षित कर रहे थे। यह तालाब श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखता है। यहाँ कछुओं को धार्मिक मान्यता प्राप्त है, और इनकी पूजा की जाती है। हमने तालाब के किनारे कुछ समय बिताया, जहाँ मछलियों की हलचल और पानी में झिलमिलाती धूप का दृश्य अद्भुत था। तालाब का शांत वातावरण और कछुओं को देखना हमें प्रकृति के करीब होने का एहसास करा रहा था।

तालाब के पास हमने फोटोग्राफी भी की। मंदिर की हरियाली, तालाब का नीला पानी और उसमें तैरते कछुए तस्वीरों में जीवंत लग रहे थे। यह समय हमारे लिए किसी अमूल्य खजाने से कम नहीं था। हमने महसूस किया कि यह स्थान न केवल आध्यात्मिकता का प्रतीक है, बल्कि प्रकृति और मानवता के बीच का गहरा संबंध भी दर्शाता है।

माताबाड़ी मंदिर से निकलने के बाद, हमने वहाँ शुद्ध शाकाहारी भोजन का आनंद लिया। भोजन में परोसी गई सामग्री बेहद ताजी और स्वादिष्ट थी। इसका स्वाद आज भी हमारी यादों में ताजा है। भोजन करने

के बाद हमने थोड़ा आराम किया और चिड़ियाघर की यात्रा के लिए अपनी ऊर्जा तरो ताजा की।

नीरमहल की यात्रा: माताबाड़ी के दर्शन और वहाँ के स्वादिष्ट भोजन खाने के बाद हमारा अगला पड़ाव नीरमहल था। त्रिपुरा राज्य के इतिहास में नीरमहल का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। यह त्रिपुरा साम्राज्य का राजमहल हुआ करता था, जिसे 1930 ईस्वी में महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य के द्वारा बनवाया गया था। यह महल मुगल कला से प्रेरित है जिसे उजले संगमरमर से बनवाया गया है। नीरमहल भारत का जल में स्थित सबसे बड़ा महल है। यह रुद्रसागर झील के बीचों बीच स्थित है। रुद्रसागर झील त्रिपुरा राज्य का एकमात्र रामसर स्थल है। झील के किनारे से महल तक पहुँचने के लिए हमने नाव की यात्रा की। महल पहुँचने के बाद इसका गौरव देख के आभास हुआ कि भारत राज्य कितना विविधता पूर्ण है। वहाँ पर हाल ही में त्रिपुरा प्रोमो फीस्ट का भी आयोजन हुआ था। महल के अंदर गाइड द्वारा हमें कई जानकारीयाँ दी गईं। नीरमहल से वापस नाव से लौटने के बाद हमने पास में ही एक छोटी सी दुकान पर चाय पी और वापस लौटने के लिए गाड़ी में सवार हो गए।

सिपाहीजला चिड़ियाघर की सैर: नीरमहल से लौटने के बाद, करीब 12 बजे हम सिपाहीजला चिड़ियाघर पहुँचे। यह चिड़ियाघर अपनी जैव विविधता और हरियाली के लिए जाना जाता है। जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, हमने महसूस किया कि यहाँ प्रकृति अपने पूरे वैभव के साथ मौजूद है। चिड़ियाघर का हर कोना हरियाली से भरपूर था, और पक्षियों की चहचहाहट ने हमें एक अलग ही माहौल का अनुभव कराया।

चिड़ियाघर में हमने कई प्रमुख जानवरों और पक्षियों को देखा। सबसे पहले हमारी नजर चश्मे वाले बंदर पर पड़ी। यह बंदर अपनी अनोखी गतिविधियों और चपलता के कारण काफी रोचक लगा। इसके बाद हमने

शेर को देखा, जो अपने बाड़े में शान से आराम फरमा रहा था। उसकी दहाड़ ने वहाँ मौजूद हर किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

चिड़ियाघर में हिरणों का एक समूह भी था, जो अपनी कोमलता और सुंदरता से हमें मोहित कर रहा था। वहाँ विभिन्न प्रकार के पक्षी भी देखे गए, जिनमें मोर, और रंग-बिरंगे तोते शामिल थे। पक्षियों की आवाजें और उनकी हरकतें हमारे लिए काफी मनोरंजक रहीं।

इसके अलावा, हमने बिल्लियों को देखा, जो अपने बाड़े में खेल रही थीं। साँपों का एक विशेष क्षेत्र भी था, जहाँ विभिन्न प्रकार के साँप, जैसे अजगर और कोबरा रखे गए थे। मगरमच्छ भी चिड़ियाघर का मुख्य आकर्षण थे। उन्हें तालाब में स्थिर और शांत बैठे देखना एक रोमांचक अनुभव था।

चिड़ियाघर की साफ-सफाई और वहाँ का प्राकृतिक माहौल हमें बहुत प्रभावित कर रहा था। हमने हर जगह को ध्यान से देखा और बच्चों की तरह हर जानवर और पक्षी में उत्सुकता दिखाई। यह अनुभव न केवल मनोरंजक था, बल्कि हमारे लिए शैक्षिक भी था। चिड़ियाघर में बिताया गया समय हमें प्रकृति और जानवरों के महत्व का एहसास करा रहा था।

वापस लौटने के क्रम में हमने रास्ते में मौजूद चाय बागानों का रुख किया। त्रिपुरा राज्य अपने चाय उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, और यहाँ के चाय बागान इस समृद्धि के प्रतीक हैं। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, शाम का समय था और बागान का दृश्य अद्भुत लग रहा था। हरे-भरे पौधों की कतारें, ठंडी हवा, और सूर्यास्त की हल्की किरणें इस जगह को स्वर्ग जैसा बना रही थीं।

क्रिसमस की शाम : अस्तबल ग्राउंड की डीजे नाइट: शाम को हमने अगरतला शहर के दिल के रूप में जाना जाने वाला स्वामी विवेकानंद मैदान (अस्तबल ग्राउंड) में आयोजित डीजे नाइट में शामिल होने का फैसला किया। हमने इस कार्यक्रम के पास एक दिन पहले ही ले लिए थे।

जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, क्रिसमस के जश्न का माहौल अपने चरम पर था। पूरे ग्राउंड को रंग-बिरंगी लाइट्स और सजावट से सजाया गया था। कार्यक्रम शाम 7 बजे शुरू हुआ और रात 11 बजे तक चला। इसमें कई प्रसिद्ध संगीतकार, गायक, और डीजे ने अपने हुनर का प्रदर्शन किया। उनकी म्यूजिक की धुनों पर हमने दिल खोलकर डांस किया और आनंद लिया। वहाँ का माहौल इतना जोशीला था कि समय का पता ही नहीं चला। इस दौरान हमने कुछ स्नेक्स और गर्म चाय का भी आनंद लिया, जो ठंडे मौसम में हमारे लिए किसी वरदान से कम नहीं था। यह क्रिसमस हमारी उम्मीदों से कहीं अधिक खास और यादगार साबित हुआ। माताबाड़ी मंदिर की आध्यात्मिकता, नीरमहल की ऐतिहासिक यात्रा, सिपाहीजला चिड़ियाघर का रोमांच, और अस्तबल ग्राउंड की डीजे नाइट का जोश – इन सबने मिलकर हमें एक ऐसा अनुभव दिया जिसे हम ताउम्र याद रखेंगे।

इस यात्रा ने हमें न केवल मनोरंजन दिया, बल्कि जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को समझने का मौका भी दिया। अगरतला और उसके आस-पास के इन स्थलों की यात्रा हर किसी के लिए एक बेहतरीन अनुभव हो सकती है।



लेखापरीक्षा सप्ताह के दौरान बनायी गई रंगोली

कोविड-19 की दस्तक

अजित दास
डी.ई.ओ, ग्रेड-बी

हमें पुरानी किताबों या लेखों के माध्यम से पता चला कि कुछ महामारियाँ भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान सन 1896 में ही दस्तक दे चुकी थीं। लेकिन उस समय हम लोग नोवेल कोरोना वायरस से पूरी तरह अनजान थे। चीन में कोविड 19 महामारी का पहला मामला दिसंबर 2019 में आया था। 27 जनवरी 2020 को केरल के त्रिशूर में भारत में कदम रखा। जनवरी 2020 में, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने पुष्टि की कि नोवेल कोरोना वायरस की उत्पत्ति चीन के वुहान शहर से हुई थी। नोवेल कोरोना वायरस का पहला लक्षण साँस लेने में परेशानी थी जिसके कारण भारत और दुनिया भर में बहुत से लोगों की मौत हो गई।

कोविड-19 को रोकने के लिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में और भारत में भी लॉकडाउन लगा दिया गया। हालाँकि लॉकडाउन शब्द 2020 में अस्तित्व में आया, लेकिन इसका प्रभावी प्रयोग 19वीं सदी के अंत से होता आ रहा है। उस समय अंग्रेजों द्वारा भारत में हैजा और प्लेग की रोकथाम के लिए इस प्रकार के प्रयास किए जाते थे। 19वीं और 20वीं सदी में भारत में हैजा और प्लेग ने कई बार हमला किया। उस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था।

सितंबर 1896 में मुंबई में प्लेग फैल गया। अनुमान है कि एक सप्ताह में लगभग 2000 लोगों की मृत्यु हो गई। ब्रिटिश सरकार ने तब महामारी रोग अधिनियम बनाया था। बताया जाता है कि ब्रिटिश जर्नल के मुताबिक, इस महामारी से बचने का एकमात्र तरीका भीड़ से बचना है, संक्रमण को रोकने के लिए देश की सभी परिवहन प्रणालियाँ बंद कर दी गयीं थीं।

वस्तुतः लॉकडाउन शब्द की उत्पत्ति वहीं से हुई है। उसी पुराने रास्ते पर चलकर भारत और दुनिया में कोरोना वायरस पर काबू पाने की योजना बनायी गयी थी।

इस कोरोना महामारी ने देश में बहुत से लोगों की जान ले ली। भारत के विभिन्न राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अलर्ट पर थे। भारत सरकार की पहल के तहत विदेश में पढ़ रहे छात्रों की घर वापसी की व्यवस्था की गई थी।

इसके बाद भारत सरकार द्वारा 22 मार्च 2020 को जनता कर्फ्यू की घोषणा की गई। समय सीमा 14 घंटे थी। सभी भारतीयों से अनुरोध किया गया कि वे इस कर्फ्यू का पालन करें। इसके बाद देश के सभी राज्यों और जिलों में एहतियात बरतने का आदेश दिया गया।

फिर 24 मार्च 2020 को लॉक डाउन की घोषणा कर दी गई। भारत के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों में 21 दिनों का लॉकडाउन लगाया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश था और महामारी से निपटने के फैसले के लिए इसकी सराहना की गई।

क्योंकि देश में संक्रमण की दर तेजी से बढ़ रही थी। देश के 75 जिलों में पहले कोविड संक्रमण वायरस के प्रसार को कम करने के लिए देश के सभी प्रमुख शहरों में लॉकडाउन की समय सीमा बढ़ा दी गई। अप्रैल 2020 के मध्य से कोरोना से निपटने के लिए जिलों में संक्रमण के स्तर को देखते हुए विभिन्न राज्यों और जिलों को जोन में बाँटा गया।

कोरोना संक्रमण के मरीजों को सबसे पहले क्वारेण्टाइन किया जाता था। सारी व्यवस्था सरकार की ओर से की जाती थी। चूँकि सरकार के पास कोविड-19 महामारी के बारे में कोई पूर्वकल्पना नहीं थी, इसलिए सम्पूर्ण भारत में भारी दहशत का माहौल पैदा हो गया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, संक्रमण का प्रभाव बढ़ता गया। उसके बाद सभी लोगों के सार्वजनिक और दैनिक जीवन की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ने लगी। मानव का जीवित रहना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा था। दिहाड़ी मजदूरों के पास न काम था और न ही खाने को पर्याप्त भोजन। परिवहन के अभाव में बहुत से मजदूर पैदल ही घर लौट रहे थे। वे सारे कष्टदायक एवं दुर्दशापूर्ण दिन आँखों में तैरने लगते हैं।

लॉकडाउन के कारण देश में सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठान और शैक्षणिक संस्थान बंद कर दिए गए थे। इसके अलावा, विदेशी वीज़ा, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय हवाई सेवाएँ और घरेलू वाहन, संक्षेप में परिवहन एवं आवागमन की सभी सुविधायें बंद कर दी गयीं थीं।

कोरोना वायरस के कारण देश की सभी छोटी-बड़ी कंपनियाँ, छोटे उद्योग और फैक्ट्रियाँ बंद हो गयीं थीं। एक तरफ कोविड महामारी है, दूसरी तरफ शिथिलता है। बहुत से लोग आजीविका के अभाव में मर रहे थे। प्रवासी मजदूरों की दुर्दशा देखकर हृदय द्रवित हो उठता था।

दूसरे राज्य से अपने राज्य या जिले में लौटने का कोई साधन नहीं था। लॉकडाउन के कारण सारा संचार बंद था। परिवहन के अभाव में देश के एक छोर से दूसरे छोर तक मजदूर विवश होकर अपने घर के लिए पैदल ही जाने लगे थे।

ऐसा अनुमान है कि कोविड-19 के कारण भारत में हुई कुल मौतों में से 80 प्रतिशत लोग 65 वर्ष से अधिक आयु के थे। आमतौर पर कोविड का पता लगाने का प्राथमिक तरीका सर्दी, खाँसी, फिर स्वेब टेस्ट और अंत में आरटीपीसीआर टेस्ट है।

कोरोना से बचाव के लिए सबसे पहले सैनिटाइजर का इस्तेमाल शुरू हुआ। फिर धीरे-धीरे फेसमास्क, फेसशील्ड और पीपीई किट का इस्तेमाल किया जाने लगा। फिर खुद को सुरक्षित रखने के लिए तरह-तरह के उपाय अपनाए जाने लगे।

नोवल कोरोना वायरस ने हमारे कई करीबी लोगों को हमसे छीन लिया क्योंकि सरकार के पास कोई वैकल्पिक दवा या वैक्सीन नहीं थी।

फिर भारत सरकार और आईसीएमआर की पहल के तहत नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी, पुणे के नेतृत्व में इस नोवल कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए बनाई जाने वाली वैक्सीन का परीक्षण पूरे भारत में 15 से अधिक लैब में किया गया और लगभग 10 महीने के बाद ये वैक्सीनें बाजार में आ गईं। ऑक्सफोर्ड, एस्ट्राजेनेका वैक्सीन (सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया) जिसे कोविशील्ड के रूप में विपणन किया जाता है, कोवैक्सीन भारत बायोटेक द्वारा और स्पुतनिक वी डॉ रेड्डी लैब द्वारा बनाई गई थी।

वैक्सीन बाजार में आने के बाद लोगों की चिंता थोड़ी कम हुई और धीरे-धीरे आम जनता को टीके की डोज दी जाने लगी। फरवरी 2021 से लोगों का दैनिक जीवन सामान्य होना शुरू होने लगा।

अब भारत में एक नया वायरस आ गया है जिसका नाम है ह्यूमन मेटा न्यूमो वायरस (एचएमपीवी) इसलिए हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए और सभी को सतर्क रहने की सलाह देनी चाहिए।



- ♦ प्रसिद्ध डिक्शनरी ऑक्सफोर्ड में करीब 800 हिन्दी शब्द शामिल किए गए हैं।
- ♦ बात करें पहली हिन्दी फिल्म की, तो हिन्दी भाषा में बनने वाली पहली फिल्म का नाम राजा हरिश्चंद्र था।
- ♦ साल 2009 में गूगल ने अपने सर्च इंजन में हिन्दी भाषा शुरू की थी।

त्रिपुरा और औद्योगिकीकरण

अजित देबनाथ

लेखापरीक्षक

त्रिपुरा में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई प्रमुख पहलें की हैं। राज्य की आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का आयोजन किया गया है। इन पहलों का उद्देश्य औद्योगिक क्षेत्र को सशक्त बनाना, रोजगार सृजन करना और राज्य के संसाधनों का सही उपयोग करना है। कुछ प्रमुख सरकारी पहलें निम्नलिखित हैं :

नॉर्थ-ईस्ट इंवेस्टमेंट पॉलिसी (NEIP) 2007 : यह नीति विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों के लिए बनाई गई थी, जिसमें त्रिपुरा भी शामिल है। इसका उद्देश्य राज्य में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना, निवेश आकर्षित करना और उद्योगों के विकास के लिए उपयुक्त माहौल बनाना था। इसमें कर में छूट, सब्सिडी, और अन्य प्रोत्साहन देने के उपाय किए गए हैं।

वाणिज्यिक और औद्योगिक पार्क का निर्माण : राज्य सरकार ने औद्योगिक पार्क और व्यापारिक केंद्रों का निर्माण किया है। ये पार्क विभिन्न प्रकार के उद्योगों के लिए सुविधाएं प्रदान करते हैं, जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र उद्योग, और हैंडीक्राफ्ट। इससे स्थानीय उद्यमियों को मदद मिल रही है और बाहरी निवेशकों को आकर्षित किया जा रहा है।

माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) को प्रोत्साहन : त्रिपुरा सरकार ने MSME क्षेत्र के लिए विशेष पहल की है। इसके तहत छोटे और मंझले उद्योगों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और विपणन की सुविधा दी जाती है। यह योजना खासतौर पर युवाओं और महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने में सहायक है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास : राज्य में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए आधारभूत संरचना का विकास भी किया जा रहा है। सड़कें, रेल मार्ग,

और हवाई अड्डों का विकास किया गया है ताकि उद्योगों को आपूर्ति श्रृंखला में सुगमता हो। इसके अलावा, उन्नत जल आपूर्ति, बिजली आपूर्ति और संचार सेवाओं को भी मजबूत किया जा रहा है।

कृषि आधारित उद्योगों का विकास : त्रिपुरा में कृषि के क्षेत्र में बड़े अवसर हैं। राज्य सरकार कृषि उत्पादों से संबंधित उद्योगों जैसे कि फूड प्रोसेसिंग, ताड़ के तेल, हल्दी, मसाले आदि के लिए भी प्रोत्साहन दे रही है। इन उद्योगों के लिए विशेष योजनाएं बनाई गई हैं, ताकि राज्य में औद्योगिकीकरण को एक नई दिशा मिल सके।

स्किल डेवलपमेंट और प्रशिक्षण कार्यक्रम : सरकार ने युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों की शुरुआत की है, ताकि वे औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकें। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण और शिक्षा दी जाती है, जिससे उद्योगों को कुशल श्रमिक मिलते हैं।

स्टेट-लेवल इन्वेस्टमेंट प्रमोशन : राज्य सरकार ने त्रिपुरा को निवेशकों के लिए आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। निवेशकों को उद्योग स्थापित करने में मदद करने के लिए भूमि, कर में छूट, और अन्य सुविधाएं दी जाती हैं। इन पहलों से त्रिपुरा में औद्योगिकीकरण को गति मिलने की उम्मीद है, जिससे राज्य के आर्थिक विकास में भी वृद्धि होगी।

त्रिपुरा में औद्योगिक समृद्धि : त्रिपुरा, भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण राज्य है। यह राज्य प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है और यहाँ औद्योगिक विकास की काफी संभावनाएं हैं। पिछले कुछ वर्षों में त्रिपुरा में औद्योगिकीकरण की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। राज्य सरकार ने विभिन्न उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों की हैं।

प्रमुख उद्योग

हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग : त्रिपुरा में कुटीर उद्योग, विशेष रूप से बुनाई और हाथ से बने उत्पादों का बड़ा बाजार है। ये उद्योग राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में योगदान देते हैं।

चाय उद्योग : त्रिपुरा में चाय उत्पादन का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की चाय भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रमुख रूप से निर्यात होती है।

ऊर्जा उद्योग : त्रिपुरा में प्राकृतिक गैस के भंडार हैं और यहाँ गैस आधारित पावर प्लांट स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा, जलविद्युत परियोजनाएँ भी राज्य की ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ा रही हैं।

कृषि उद्योग : त्रिपुरा में कृषि के क्षेत्र में भी औद्योगिक विकास देखा जा सकता है। कृषि उत्पादों जैसे कि मिर्च, अनानास (राजकीय फल), और रबर का व्यापार बढ़ा है, और इसके लिए प्रसंस्करण उद्योग भी विकसित हो रहे हैं।

त्रिपुरा में औद्योगिक विकास की संभावनाएँ : त्रिपुरा में औद्योगिक विकास की कई संभावनाएँ हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:

संसाधन समृद्धि : त्रिपुरा में प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि गैस, रबर, और जड़ी-बूटियाँ प्रचुर मात्रा में हैं, जो औद्योगिक विकास के लिए सहायक हो सकते हैं।

पर्यटन उद्योग : त्रिपुरा में प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहरों की प्रचुरता है। पर्यटन उद्योग के विकास से होटल, परिवहन, और अन्य संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिल सकता है।

भविष्य में कृषि आधारित उद्योग : राज्य की कृषि पर आधारित उत्पादों के प्रसंस्करण से खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, पैकेजिंग और निर्यात बढ़ सकते हैं।

संवृद्धि की आवश्यकता : राज्य में युवा और शिक्षित जनसंख्या का बड़ा हिस्सा है, जिससे कौशल आधारित उद्योगों के लिए कार्यबल उपलब्ध है। इसके अलावा, बेहतर अवसंरचना और परिवहन के माध्यम से व्यापारिक नेटवर्क को और बढ़ाया जा सकता है।

त्रिपुरा में औद्योगिक समृद्धि की चुनौतियाँ : हालांकि त्रिपुरा में औद्योगिक समृद्धि की कई संभावनाएँ हैं, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी हैं जिनका समाधान करना आवश्यक है:

संसाधनों की कमी : बावजूद इसके कि राज्य में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं, इन संसाधनों की उचित खपत और प्रबंधन की दिशा में पर्याप्त निवेश की कमी है।

परिवहन और अवसंरचना की समस्या : त्रिपुरा का भौगोलिक क्षेत्र सीमित है और यहाँ का परिवहन नेटवर्क अन्य राज्यों के मुकाबले कम विकसित है, जिससे वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होती है।

संगठित क्षेत्र का अभाव : राज्य में संगठित उद्योगों की कमी है, जिसके कारण बड़े पैमाने पर रोजगार और आर्थिक समृद्धि का विकास नहीं हो पा रहा है।

सीमावर्ती विवाद और असुरक्षा : त्रिपुरा का क्षेत्र कई बार सीमावर्ती विवादों और राजनीतिक अस्थिरता का सामना करता है, जो निवेशकों को आकर्षित करने में रुकावट डालता है।

प्राकृतिक आपदायें : त्रिपुरा में बाढ़ और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएँ भी औद्योगिक विकास को प्रभावित कर सकती हैं।

निष्कर्ष : त्रिपुरा में औद्योगिक समृद्धि की अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन इसके लिए एक मजबूत और स्थिर नीति की आवश्यकता है, जो संसाधनों के समुचित उपयोग, बेहतर अवसंरचना, और रोजगार सृजन पर केंद्रित हो। राज्य सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।



जर्मनी भ्रमण का अनुभव

अनिदिता धर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मेरी बेटी के जर्मनी में पढ़ने के लिए जाते समय से ही मेरी भी जर्मनी घूमने जाने की एक चाहत बन गई थी। जून, 2024 को मेरी यह इच्छा भी पूरी हो गयी। कलकत्ता से वीज़ा मिलते ही तुरंत पैकिंग शुरू हो गई। मेरी बेटी ने पहले ही सामान की एक लंबी लिस्ट भेजी थी। वह सब चीजें और मेरी जरूरत के सामान को समेटकर दिल्ली हवाई अड्डे से 26 जून को फ्रैन्कफर्ट (Frankfurt) के लिए हवाई जहाज से यात्रा प्रारम्भ हुई। हवाई यात्रा का 10 घंटे का अनुभव भी बहुत ही सुखद था। सीट के सामने लगे हुए स्क्रीन पर उड़ान भरने का मार्ग, जैसे हवाई जहाज, किस प्रदेश के ऊपर से गुजर रहा है, साफ-साफ दिखाई दे रहा था। इसके साथ ही ढेर सारी फ़िल्में, संगीत और कई मनोरंजन के साधनों का भी प्रबंध था। साथ ही जलपान के लिए भी बहुत सारे विकल्प थे। हवाई यात्रा के 10 घंटे कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

जैसे ही मैंने फ्रैन्कफर्ट की जमीन पर पैर रखा, मन में एक अजीब तरह की खुशी का अनुभव होने लगा। कस्टम क्लियरेंस बहुत ही सहज रूप से हो गया। सहज इसलिए कह रही हूँ क्योंकि आने से पहले कई परेशानियों के बारे में सुन चुकी थी। एअरपोर्ट से निकलते ही मेरी बेटी ने मुझे देखा और दौड़कर मुझसे लिपट गयी। थोड़ी देर बाद मैं उसके साथ ट्रेन में बैठकर उसके शहर के लिए रवाना हुई, जहाँ पर वह रहती थी। ट्रेन का सफर भी बहुत लाजवाब रहा। जर्मनी की सुंदरता के बारे में बहुत सुन चुकी थी, अब ट्रेन से उस देश का नज़ारा देखा। वास्तविक रूप में वह उससे कई गुना ज्यादा सुंदर था। दो घंटे ट्रेन का सफर देखते ही देखते गुज़र गया। इतनी साफ हवा, प्रकृति की अपूर्व सुंदरता को देखकर सफर की थकान मिनटों में दूर हो गई। ट्रेन से उतरते ही लगा कि मानो हमने अभी-अभी सफर

तय किया है। मुझे पूरे सफर के दौरान कहीं पर भी गंदगी दिखाई नहीं पड़ी। प्रदूषण कम होने के कारण नीला आसमान एकदम साफ दिखाई दे रहा था और भी कई खूबियाँ मुझे बहुत ही अच्छी लगीं, जैसे कि वहाँ बुजुर्ग लोग बहुत ही सेहतमंद हैं। इसका कारण है वहाँ के लोगों की उच्च जीवनशैली। जर्मनी में वृद्ध लोगों के लिए कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जैसे कि सस्ते आवास, सार्वजनिक परिवहन में छूट, उम्र बढ़ने पर बीमा की राशि कम होना, आदि। यहाँ तक कि बस के ड्राइवर भी वृद्ध लोगों के चढ़ने में आसानी के लिए बस के पायदान को जमीन तक नीचे कर देते हैं। परिवारों में भी बुजुर्गों को आदर व स्नेह दिया जाता है और घर के महत्वपूर्ण निर्णयों में भी उनका अनुभव और ज्ञान बहुमूल्य माना जाता है। हर कोई उनका सम्मान करता है और उनकी सहायता के लिए तत्पर रहता है।

जर्मनी में ज्यादातर लोग साइकिल, ई-साइकिल एवं ई-कार का उपयोग करते हैं। धुआँ छोड़ने वाली एक भी गाड़ी नजर नहीं आई। सड़क पार करने का तरीका भी अनोखा है। हर क्रॉसिंग के पोल पर एक बटन लगा है, जिस पर हाथ रखने के बाद ट्रैफिक लाइट हरी हो जाती है, और आप आसानी से सड़क पार कर सकते हैं।

जर्मनी में हर कोई अपने-अपने तरीके से अपने शरीर का ध्यान रखता है। शारीरिक गतिविधियों में साइकिल चलाना, दौड़ना, जिम जाना, सभी शामिल हैं। मैंने रात 11:00 बजे भी बहुत से लोगों को जॉगिंग करते हुए देखा। एक दिन मुझे एक गाँव में भी जाने का मौका मिला। वहाँ जाकर पता चला कि जर्मनी में बहुत समृद्ध और धनी लोग गाँव में ही रहते हैं और अपनी खेती, बगीचे और अस्तबल, आदि के साथ प्रकृति के बीच शांति से जीवन बिताते हैं।

यहाँ के लोग पर्यावरण को बहुत ही ज्यादा महत्व देते हैं और इसके संरक्षण के लिए भी सदा जागरूक रहते हैं। बिना पेड़ों को नष्ट किए रास्ते बनाए जाते हैं। सोसाइटी के बगल में भी घना जंगल बनाया जाता है, जिसके

बीच से पैदल चलने का रास्ता होता है। इसी दौरान दो जंगलों में टहलने का अनुभव भी मुझे हुआ।

जर्मनी में लोग कार्य एवं जीवन के बीच संतुलन बनाए रखते हैं। और कार्य के समय के बाद का समय परिवार व दोस्तों के साथ बिताते हैं। छुट्टियों में सब के साथ बाहर भी घूमने चले जाते हैं। मैंने एक चीज़ का अनुभव किया कि जर्मनी के लोग आमतौर पर सीधे और स्पष्ट होते हैं। वह अपनी भावनाओं को बिना किसी हिचकिचाहट के व्यक्त करते हैं, वहाँ कोई भी ऊँची आवाज में बात नहीं करता है। इसलिए, बड़ा शहर होने के बावजूद वह शांत ही लगता है।

हैनोवर (Hanover) का रॉयल पैलेस और उद्यान हमारे मन में मानो छा सा गया। कोलोन (Cologne) शहर का विशिष्ट गिरजा घर – कैथेड्रल (Cathedral) – हमें बड़ा ही मनमोहक लगा। गौसलार (Goslar) शहर का मध्ययुगीन काल का चर्च और पैलेस, हैम्बर्ग (Hamburg) का राष्ट्रीय उद्यान, एल्टोना (Altona) का फिश मार्केट, गॉटिंगन (Göttingen) का वनस्पति उद्यान, ये सभी चित्रपट बनकर हमेशा मेरे मन में सजे रहेंगे।



- ♦ विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है।
- ♦ बिहार पहला राज्य था जिसने उर्दू के स्थान पर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया।
- ♦ “हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की गरिमा और गौरव का प्रतीक है, इसका सम्मान करें।”
- ♦ “हिंदी के माध्यम से हम अपने विचारों को और अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर सकते हैं।”

महाभारत की शिक्षायें

अनिल कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

महाभारत हमारे देश का एक ऐसा कालजयी पुराण है जिसको पढ़ने के पश्चात हमें अनेक जीवनोपयोगी शिक्षाएं मिलती हैं, जिनका यदि हम अपने जीवन में पालन करें तो हम बेहतर जीवन जी सकते हैं।

मित्र और शत्रु की पहचान करना सीखें : कई बार मित्र के भेष में शत्रु हमारे जीवन में आ जाते हैं और हम से हमारे राज़ लेते रहते हैं और ऐन वक्त पर विश्वासघात कर जाते हैं। महाभारत में ऐसे कई मित्र थे जिन्होंने अपनी ही सेना के साथ विश्वासघात किया। शल्य और युयुत्सु इसके उदाहरण हैं। कई मित्र ऐसे भी होते हैं जो दोनों तरफ होते हैं जैसे कौरवों की ओर से लड़ रहे भीष्म, द्रोण और विदुर अंत तक युद्ध में पांडवों का ही साथ देते रहे।

अधूरा ज्ञान हमेशा घातक होता है : कहा जाता है कि अधूरा ज्ञान हमेशा खतरनाक होता है। अभिमन्यु बहुत ही वीर और बहादुर योद्धा था, लेकिन उसकी मृत्यु अधूरे ज्ञान के कारण हुई। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में घुसने की कला तो सीखी थी और उसे चक्रव्यूह में घुसकर लड़ना तो आता था, लेकिन चक्रव्यूह तोड़कर बाहर निकलना नहीं आता था, जिसके कारण वह मारा गया। अधूरा ज्ञान मुसीबत के समय काम नहीं आता, इसलिए व्यक्ति को किसी एक विषय में दक्षता हासिल कर लेनी चाहिए।

वाणी शस्त्र से ज्यादा घातक होती है : कहते हैं मनुष्य की वाणी शस्त्र से भी अधिक घातक होती है। यदि द्रौपदी अपनी वाणी पर संयम रख लेती तो महाभारत का युद्ध नहीं होता। द्रौपदी यदि दुर्योधन को “अंधे का पुत्र अंधा” नहीं कहती तो युद्ध नहीं होता। इसी प्रकार शिशुपाल और शकुनि ने भी हमेशा चुभने वाली बातें ही कहीं जिससे अंत में उनका बुरा हश्र हुआ।

इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी वाणी पर संयम रखना चाहिए और सोच समझकर ही बोलना चाहिए।

जीवन में हमेशा योजनाएं बनानी चाहिए : मनुष्य को जीवन में सफल होने के लिए हमेशा योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना चाहिए। महाभारत में यदि भगवान श्रीकृष्ण के पास पांडवों के बचाने की योजना न होती तो पांडवों का युद्ध जीतना असंभव था वहीं कौरवों के पास कोई योजना नहीं थी जिसके कारण उनको हार का सामना करना पड़ा। जीवन के किसी भी क्षेत्र में बेहतर रणनीति आपके जीवन को सफल बना सकती है और यदि जीवन में कोई योजना नहीं है तो भविष्य में सफल होने की कोई गारंटी नहीं है।

हमेशा अच्छी संगति में रहें : मनुष्य को हमेशा अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए, कहा जाता है “जैसी संगत वैसी रंगत वैसा ही जीवन” आप कितने भी अच्छे हैं लेकिन यदि आपकी संगति बुरी है तो आप बर्बाद हो जाएंगे और इसके विपरीत यदि आप कितने भी बुरे हैं और आपकी संगति अच्छे लोगों से है और आप उनकी सुनते भी हैं तो निश्चित रूप से खुशहाल हो जाएंगे। कौरवों के साथ शकुनी जैसे लोग थे और पांडवों के साथ श्री कृष्ण जैसे मित्र और अंत में पांडवों की ही जीत हुई क्योंकि पांडवों ने श्रीकृष्ण की बात सुनी और मानी।

जुए सट्टे से दूर रहें : जुए-सट्टे मनुष्य का जीवन अंधकारमय बना देती है। शकुनि ने पांडवों को फंसाने के लिए क्रीड़ा (जुए) का आयोजन किया था, जिसके चलते पांडवों ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था। यहाँ तक कि अपनी पत्नी द्रौपदी को भी। फिर पांडवों का क्या हश्र हुआ वह सभी जानते हैं।

लड़ाई से डरने वाले मिट जाते हैं : जीवन में कुछ मोर्चों पर व्यक्ति को लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए जो व्यक्ति लड़ना नहीं जानता, युद्ध उसी पर थोपा जाएगा और उसको सबसे पहले मारा जाएगा।

महाभारत में श्री कृष्ण ने पांडवों को यह बात अच्छी तरह से सिखाई थी। पांडव अपने बंधुओं से लड़ना नहीं चाहते थे, लेकिन श्री कृष्ण ने समझाया कि जब किसी मसले का हल शांतिपूर्ण तरीके से नहीं होता तो फिर युद्ध ही एकमात्र विकल्प ही रह जाता है और कायर लोग युद्ध से पीछे हटते हैं।

शिक्षा का सदुपयोग जरूरी है : महाभारत में महान योद्धा कर्ण था, जिसको समाज ने तिरस्कृत किया था जो समाज को बहुत कुछ दे सकता था, लेकिन समाज ने उसको तिरस्कृत किया जिससे उसके अंदर समाज को मिटाने की भावना घर कर गई। कर्ण के लिए शिक्षा का उद्देश्य समाज की सेवा करना नहीं बल्कि वह अपनी सामर्थ्य को आधार बनाकर समाज से अपने अपमान का बदला लेना चाहता था। कर्ण यदि यह बात समझ जाता कि समाज व्यक्तियों का एक समूह है जिसे लोगों ने बनाया है तो संभवतः वह समाज को बदलने का प्रयास करता।

सदा सत्य के साथ रहो : कौरवों की सेना पांडवों की सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली थी। एक से एक योद्धा और ज्ञानीजन कौरवों का साथ दे रहे थे, पांडवों की सेना में ऐसे वीर योद्धा नहीं थे। विजय उसकी नहीं होती जहाँ ज्यादा लोग धनवान या बड़े पदाधिकारी हों, विजय हमेशा सत्य की होती है।

खुद को बदलना सीखो : महाभारत में जिस तरह कर्ण के जीवन में उतार चढ़ाव आए उससे यही सीख मिलती है कि इस क्रूर दुनिया में अपना अस्तित्व बनाए रखना कितना मुश्किल होता है, इसलिए समय के अनुसार बदलना जरूरी होता है। हमेशा दानी, उदार और दयालु होने से काम नहीं चलता। कर्ण ने खुद को बदलकर अपने जीवन में लक्ष्य तो हासिल कर लिया, लेकिन फिर भी महान न बन सका क्योंकि उन्होंने अपनी शिक्षा का उपयोग समाज से बदला लेने की भावना से किया। बदले की भावना से किया गया कोई कार्य समाज का हित नहीं कर सकता।

शिक्षा और योग्यता के लिए जुनूनी बनो : व्यक्ति के जीवन में उसके द्वारा हासिल शिक्षा और उसकी कार्य योग्यता ही काम आती है। दोनों के प्रति एकलव्य जैसा जुनून होना चाहिए जिसने गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति को गुरु मानकर अभ्यास किया और एक महान धनुर्धर बन गया। उसको गुरु शिक्षा जैसी बाधा भी नहीं रोक सकी। अहंकार और घमंड पतन का कारण होते हैं।

धनी, ज्ञानी, शक्तिशाली पांडवों ने वनवास भोगा और अति सुंदर पत्नी भी उनके साथ भटकती रही। जिस अम्बा का जीवन भीष्म के कारण बर्बाद हुआ था उसने भी शिखंडी के रूप में जन्म लेकर भीष्म से बदला लिया। समय के खेल निराले हैं। घमंड को पतन का कारण बनने में देर नहीं लगती है।

न्याय की रक्षा बहुत आवश्यक है : समाज में न्याय की रक्षा बहुत आवश्यक है, जिन्होंने अपने लिए न्याय माँगा ईश्वर ने उन्हें न्याय दिया। माँगोगे नहीं तो मिलेगा भी नहीं यह प्रकृति का नियम है। गुरु द्रोणाचार्य ने कर्ण व एकलव्य के साथ अन्याय किया था लेकिन आज दुनिया एकलव्य और कर्ण को ही धनुर्धर मानती है अर्जुन को नहीं, क्योंकि इन दोनों ने हमेशा न्याय की माँग की। लेकिन कुछ सत्य यह भी है कि न्याय सिर्फ शक्तिशाली लोगों के साथ ही है।

गोपनीयता और संयम जरूरी है : जीवन हो या युद्ध सभी जगह गोपनीयता का महत्त्व है। यदि आप भावना में बहकर किसी को अपने जीवन का राज़ बताते हैं तो आप कमजोर माने जाएंगे। महाभारत में कई उदाहरण हैं जिन्होंने अपने राज सबके समक्ष खोल दिए, जिसके चलते उनको मुँह की खानी पड़ी। दुर्योधन, भीष्म, बर्बरीक ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी कमजोरी और शक्ति का राज़ खोल दिया था।

राजा या योद्धा को परिणाम की चिंता नहीं करना चाहिए : जो योद्धा या राजा युद्ध के परिणामों की चिंता करता है वह अपने जीवन और राज्य को खतरे में डाल देता है। परिणाम की चिंता करने वाला कभी भी

साहसपूर्वक न तो निर्णय ले पाता है और न ही युद्ध कर पाता है। एक बार निर्णय लेने के बाद फिर बदलने का अर्थ यह है कि आपने सोचकर निर्णय नहीं लिया या आप में निर्णय लेने की क्षमता नहीं है।

अच्छे मित्रों की कद्र करना : मनुष्य को अच्छे मित्र की सदैव कद्र करनी चाहिए। पांडवों के पास भगवान श्री कृष्ण थे तो कौरवों के पास महान योद्धा कर्ण था। इन दोनों ने ही अपने-अपने पक्षों को बिना शर्त समर्थन व पूरा साथ दिया। पांडवों ने श्री कृष्ण की हर बात को माना और उस पर अमल किया। लेकिन दुर्योधन ने सिर्फ कर्ण को एक योद्धा की तरह ही समझ कर पांडवों की सेना के खिलाफ़ इस्तेमाल किया। अगर दुर्योधन कर्ण की बात मानकर कर्ण को घटोत्कच को मारने के लिए दबाव नहीं डालता तो इन्द्र के द्वारा दिए गए अमोघ शस्त्र से अर्जुन मारा जाता।

भावनाओं में बहना उचित नहीं : महाभारत में धृतराष्ट्र अपने पुत्रों को लेकर जरूरत से अधिक भावुक और आश्वस्त थे। इसी कारण उनका एक भी पुत्र वश में नहीं रहा। महाभारत में कुछ ऐसे पात्र मिलते हैं जो अपने पुत्र मोह में आकर सही गलत का फर्क भूल गए थे, धृतराष्ट्र ने भी ऐसा ही कुछ किया। जरूरत से ज्यादा भावुकता इंसान को कमजोर बना देती है।

मात्रा से अधिक गुणवत्ता जरूरी है : जब अर्जुन तथा दुर्योधन श्री कृष्ण से युद्ध के लिए सहायता माँगने गए तो श्री कृष्ण ने एक तरफ अपनी नारायणी सेना देने तथा एक तरफ स्वयं एक सारथी के रूप में रहने के लिए कहा वह भी इस शर्त पर कि युद्धभूमि में स्वयं शस्त्र नहीं उठाएंगे। दुर्योधन ने श्री कृष्ण की विशाल नारायणी सेना का ही चुनाव किया क्योंकि दुर्योधन ने गुणवत्ता से अधिक मात्रा पर अधिक भरोसा किया जबकि अर्जुन को श्रीकृष्ण की गुणवत्ता पर पूर्ण विश्वास था और उन्होंने श्री कृष्ण की गुणवत्ता का ही चुनाव किया।



पर्यावरण को संरक्षित करता शाकाहार

अमित गौरव
सहायक लेखा अधिकारी

मांसाहार भारत ही नहीं, बल्कि विश्व की एक बड़ी जनसंख्या के आहार का अंग है। हमारी भारतीय संस्कृति में जहाँ हिंसा, क्रूरता एवं अमानवीयता से जुड़े इसके पहलुओं को देखते हुए इसे घृणित ही नहीं, बल्कि इसे त्याज्य माना गया है, वहीं मांसप्रेमी लोगों द्वारा इसके पक्ष में पौष्टिकता, ऊर्जात्मकता एवं सांस्कृतिक विरासत के रूप में तमाम दलीलें दी जाती रही हैं। विज्ञान प्रारंभिक दौर में इसके पक्ष में बहुत सारे तर्क देता रहा, परंतु समय के साथ इसके स्वर भी बदलने लगे हैं और अब विज्ञान भी शाकाहार को अपनाने की बात करने लगा है। अब विशेषकर मनुष्यों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से मांसाहार के चलन को रोकने व शाकाहार को अपनाने की बात की जा रही है।

शोध के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की दृष्टि से शाकाहार बेहतर विकल्प है। शाकाहार, मनुष्यों को होने वाली नई-नई बीमारियों से दूर रखता है। वहीं मांसाहार नई-नई बीमारियों को दावत देता है। एक शाकाहारी व्यक्ति को अपना जीवन यापन करने के लिए जहाँ एक एकड़ से भी कम भूमि की आवश्यकता होती है वहीं एक मांसाहारी के लिए लगभग डेढ़ एकड़ से अधिक भूमि की आवश्यकता होती है।

विकसित देशों में मांस उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर पर्यावरण का अतिक्रमण हुआ है। मात्र अमेरिका में 1 किलो गेहूँ उत्पादन के लिए 50 गैलन जल की आवश्यकता होती है; जबकि इतने ही मांस के लिए 1,000 गैलन पानी की खपत होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जितना हम शाकाहार को अपनाएँगे उतना ही हमारे पर्यावरण पर कम दबाव पड़ेगा और

वह मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपलब्ध होगा। एक रिसर्च के अनुसार, यदि अमेरिका के केवल 10 प्रतिशत व्यक्ति भी मांसाहार बंद कर दें, तो पूरे विश्व की भोजन की आवश्यकता पूरी हो सकती है।

विश्व में एक एकड़ कृषि भूमि में लगभग 8,000 किलो मटर, 24,000 किलो गाजर और 32,000 किलो टमाटर उत्पन्न किए जा सकते हैं, वहीं उतनी ही भूमि में मात्र 200 किलो मांस तैयार होता है। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि आधुनिक पशुपालन तकनीक में जानवरों और पक्षियों को सीधे अनाज, तिलहन, सोयाबीन एवं अन्य वस्तुएं ठूस-ठूसकर खिलायी जाती हैं, जिससे कि वे जल्द-से-जल्द अधिक से अधिक मांसल बन सकें। इसके अलावा उन्हें तरह तरह के कैमिकल युक्त दवाएं भी दी जाती हैं, जिससे जानवरों और पक्षियों में अनेक बीमारियां फैल गयी हैं। और उन जानवरों और पक्षियों का आहार करने से मनुष्यों में भी नई-नई बीमारियां फैल रही हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आधुनिक औद्योगिक पशुपालन से भोजन तैयार करने में कई गुना अधिक भूमि एवं प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग होता है, जिनका उपयोग कर कितने ही शाकाहारी लोगों का पोषण हो सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार, मांस की खपत में मात्र 10 प्रतिशत कटौती प्रतिदिन भुखमरी से मरने वाले 18,000 बच्चों एवं 6,000 वयस्कों का जीवन बचा सकती है। एक किलो मांस तैयार करने में 7 किलो अन्न या सोयाबीन की खपत होती है। अन्न को मांस में बदलने की प्रक्रिया में 90 प्रतिशत प्रोटीन, 99 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट तथा 100 प्रतिशत रेशा नष्ट हो जाता है। 1 किलो आलू उत्पन्न करने में जहाँ मात्र 5 से 10 लीटर पानी की खपत होती है, वहीं इतने मांस को तैयार करने में 200-300 लीटर पानी की खपत होती है। वैसे इस बात पर हमें ध्यान देना होगा कि हमारी पृथ्वी पर वैसे ही शुद्ध जल की कमी है, तो उस परिस्थिति में मांस पैदावार के लिए इतना जल व्यर्थ करना कहां तक सही है।

मांस के उत्पादन में और पशुओं के पालन, चरागाहों के निर्माण के लिए जिस तरह से वनों को नष्ट किया जा रहा है, उससे पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। प्रकृति से अनावश्यक छेड़छाड़ के परिणाम मौसम परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग के रूप में उभर कर आ रहे हैं। हमारी ओजोन परत को भी इससे काफी नुकसान हो रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सन् 2019 की क्लाइमेट चेंज रिपोर्ट के अनुसार, मौसम परिवर्तन से निपटने के लिए वनस्पति आधारित आहार को प्रोत्साहन देना होगा व मांसाहारी आहार को कम करना होगा।

हम यह नहीं कहते कि लोग क्या खाएँ या क्या न खाएँ, लेकिन मौसम एवं मानवीय स्वास्थ्य दोनों दृष्टि से यह उचित होगा यदि लोग मांसाहार को कम कर शाकाहार की ओर अपने कदम बढ़ाएं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जंगलों को बचाने की जरूरत है, जो हवा से कार्बन को सोखते हैं। जानवरों के चारे के लिए जंगलों की सफाई को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। रिपोर्ट के अनुसार, अमेजन के जंगलों का निर्बाध रूप में किया गया सफाया इसके बड़े हिस्से को रेगिस्तान में बदल सकता है।

सन् 2018 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन 37 बिलियन टन के रिकॉर्ड को पार कर गया है, जिसे तीव्रता से नीचे लाने की आवश्यकता है, जिससे कि वैश्विक तापमान को 1.5 डिग्री तक कम किया जा सके। इसके लिए तात्कालिक एवं कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है। रिपोर्ट के अनुसार, आहार की शैली को बदलने मात्र से सन् 2050 तक लाखों वर्ग कि.मी. भूमि दबाव से मुक्त हो सकती है, जिससे कि वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन रुक सके। सार रूप में, मौसम में अपने अनुकूल परिवर्तन के लिए हमें आहार की शैली को बदलने की दिशा में बड़े कदम उठाने होंगे। वस्तुतः शाकाहार मनुष्य से जुड़ी एक अत्यंत स्वाभाविक जीवनशैली है, आदिकाल से ही मनुष्य यहाँ कंद, मूल, फल, फूल, पत्ते व पौधों को खा कर अपना जीवन यापन करता रहा है।

इसके अतिरिक्त, शाकाहार एक ऐसी जीवन-शैली है जो सीधे सह-अस्तित्व, अहिंसा, करुणा एवं मानवता जैसे जीवन-मूल्यों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति सदा से शाकाहार की ओर प्रेरित करती आई है। प्रकृति की गोद में, इसको संरक्षित करते हुए, इसकी अनूठी जीवन-शैली को अपनाते हुए शाकाहार हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से आधुनिक शोध ने भी इसे श्रेष्ठ विकल्प माना है। हम जितनी जल्द इन निष्कर्षों को समझ सकें व धारण कर सकें, हमारे लिए वह उतना ही उचित होगा।



ऑडिट दिवस के दौरान 'हेरिटेज पार्क' में लिया गया समूह चित्र

त्रिपुरा की संस्कृति: विविधता और समृद्धि का संगम

अश्विनीमा मल्लिक
लेखापरीक्षक

त्रिपुरा, भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक छोटा राज्य है, जिसे उसकी विविधता और समृद्ध संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक स्थलों, और विभिन्न जातीय समूहों के समागम के लिए प्रसिद्ध है। त्रिपुरा की संस्कृति में आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों समुदायों का योगदान है, जो इसे एक अनोखी सांस्कृतिक पहचान प्रदान करता है। त्रिपुरा की भौगोलिक स्थिति इसे एक विशेष सांस्कृतिक स्थान प्रदान करती है। इसकी पहाड़ियाँ, जंगल और नदियाँ न केवल इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाती हैं, बल्कि यहाँ की संस्कृति को भी प्रभावित करती हैं। राज्य की भौगोलिक स्थिति ने यहाँ के निवासियों की जीवन-शैली, परंपराएँ और मान्यताओं को आकार दिया है। ऐतिहासिक दृष्टि से, त्रिपुरा की संस्कृति का विकास विभिन्न राजवंशों और विदेशी आक्रमणों के प्रभाव से हुआ है। यह राज्य माणिक्य वंश के राजाओं के शासन में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास का गवाह रहा है।

त्रिपुरा की जनसंख्या में विभिन्न जातीय समूह शामिल हैं जिनमें मुख्यतः त्रिपुरी, रियांग, मोरंग, और निचरी जैसी जातियां शामिल हैं। प्रत्येक जातीय समूह की अपनी विशेष परंपराएँ और सांस्कृतिक पहचान है। इस विविधता का प्रभाव राज्य के त्योहारों, रीति-रिवाजों और कला पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। त्रिपुरा की प्रमुख भाषा बांग्ला है, जबकि त्रिपुरी भाषा भी महत्वपूर्ण है। यहाँ के साहित्य में स्थानीय लोक-कथाएँ, गीत और नृत्य शामिल हैं। त्रिपुरा के लोग अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित

करने के लिए अपने गीतों और कहानियों का उपयोग करते हैं। यहाँ के साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों को व्यापकता से उठाया गया है।

त्रिपुरा में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं, जो यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करते हैं। कुछ प्रमुख त्योहार इस प्रकार हैं:

गरिया पूजा : गरिया पूजा त्रिपुरा में मनाई जाती है क्योंकि भगवान गरिया को मवेशियों, शांति, संतान और धन प्रदान करने वाला माना जाता है।

दुर्गा पूजा : दुर्गा पूजा त्रिपुरा में एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दौरान देवी दुर्गा की मूर्तियों की स्थापना की जाती है, और पूजा-अर्चना के बाद भव्य विसर्जन किया जाता है। यह त्योहार विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों, संगीत, नृत्य और सामूहिक भोज के लिए जाना जाता है।

केर पूजा : केर पूजा सामान्यतः अगस्त में आयोजित की जाती है और इसका लाभ लोगों और राज्य को होता है। यह उत्सव खारची पूजा के दो सप्ताह बाद मनाया जाता है, जिसमें वास्तु देवता के रक्षक केर का सम्मान किया जाता है। इसमें अर्पण, बलिदान और एक निर्धारित सीमा शामिल होती है, जो लोगों को आपदाओं से सुरक्षित रखती है और उन्हें बाहरी आक्रमण से बचाती है।

त्रिपुरा की कला और शिल्प अत्यंत समृद्ध हैं। यहाँ की हस्तशिल्प वस्त्रों, बांस के उत्पादों और मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है। स्थानीय कलाकार अपनी कला के माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखते हैं। त्रिपुरी बुनाई, जो बांस के काम और काष्ठ शिल्प के लिए जानी जाती है, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। त्रिपुरा की संस्कृति में कारीगरी और शिल्प का भी गहरा महत्व है। यहाँ के कारीगर बुनाई, लकड़ी की

नक्काशी, और मिट्टी के बर्तनों में विशेष कुशलता रखते हैं। यह कला न केवल राज्य की पहचान को बनाए रखती है, बल्कि आर्थिक विकास में भी योगदान करती है। त्रिपुरा की संस्कृति में नृत्य और संगीत का विशेष स्थान है। संगीत में भी विविधता है, जिसमें लोक गीत और आदिवासी संगीत शामिल हैं। त्रिपुरा का लोक संगीत और नृत्य इसकी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा है। यहाँ के पारंपरिक नृत्य, जैसे “गरिया” और “होजागिरी,” आमतौर पर त्योहारों और सामाजिक समारोहों के दौरान प्रस्तुत किए जाते हैं। ये गीत न केवल मनोरंजन के लिए होते हैं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर करते हैं।

गरिया नृत्य : त्रिपुरी लोग झूम या स्थानांतरित कृषि का अभ्यास करते हैं, और गरिया पूजा त्योहार उनके बुआई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। “गरिया” को “गरिया नृत्य” के माध्यम से मनाया जाता है, जो प्रार्थनाओं और पूजा के साथ होता है ताकि अच्छी फसल की कामना की जा सके। यह त्योहार अप्रैल में मनाया जाता है। गोरीया या गरिया नृत्य फसलों की बुआई के समय आयोजित किया जाता है, और इसमें त्रिपुरी समुदाय के अलावा अन्य जातीय समूहों के लोग भी शामिल होते हैं।

होजागिरी : होजागिरी त्रिपुरी रिआंग जनजाति का एक लोक नृत्य है, इस जातीय समूह का सही नाम ब्रू है। इसे 4 से 6 महिलाओं और युवा लड़कियों की टीम द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जो मिट्टी के घड़े पर संतुलन बनाते हुए गाती हैं और सिर पर बोतल और हाथ में मिट्टी का दीपक जैसे विभिन्न सामानों का प्रबंध करती हैं।

त्रिपुरा की खाद्य संस्कृति में विविधता है, जो स्थानीय उपलब्धता और जातीय प्रभावों से प्रभावित है। चावल यहाँ का प्रमुख आहार है, जबकि मछली और मांस भी आमतौर पर खाए जाते हैं। अदरक, लहसुन, और हरी मिर्च जैसे मसालों का उपयोग यहाँ के भोजन में भरपूर होता है। त्रिपुरा में

शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। यहाँ कई विश्वविद्यालय और कॉलेज हैं, जो छात्रों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करते हैं। शिक्षा के माध्यम से त्रिपुरा की युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और विकसित करने में सक्षम हो रही है। त्रिपुरा में पारिवारिक संरचना में मुख्य रूप से संयुक्त परिवारों की परंपरा है। परिवार में बुजुर्गों का आदर किया जाता है और निर्णय लेने में उनका योगदान महत्वपूर्ण होता है। यहाँ के लोग आपसी सहयोग और सामूहिकता को बहुत महत्व देते हैं।

त्रिपुरा की संस्कृति, इसके विविध रंगों और गहराई के साथ, भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की परंपराएँ, त्योहार, कला, और जीवन-शैली इसे एक अनोखा स्थान प्रदान करते हैं। विभिन्न जातीय समूहों के बीच का समागम त्रिपुरा को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाता है। भविष्य में, यह आवश्यक है कि हम इस सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और संजोएँ ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका अनुभव कर सकें।



लेखापरीक्षा दिवस के आयोजन पर एकत्रित कार्मिक

हिल स्टेशन

आशीष कुमार गुप्ता

एम.टी.एस.

भारत विभिन्न ऋतुओं का एक देश है। गर्मी के दिनों में दक्षिणी और मध्य भारत बहुत ही गर्म हो जाता है और यहाँ गर्मियों का मौसम एक लम्बी अवधि तक बना रहता है। ऐसे में इस मौसम और गर्मी से राहत पाने के लिए हम गर्मियों के दिनों में विभिन्न हिल स्टेशनों/पर्वतीय स्थलों पर जाने का मन बनाते हैं। इस तरह के स्थल पर जाना हमारे लिए रोमांच, आनंददायी, गर्मियों से राहत और प्रकृति से निकटता को दर्शाता है।

हिल स्टेशन किसे कहते हैं : हिल स्टेशन मनमोहक पहाड़ियों के एक झुण्ड को कहते हैं। यहाँ पहाड़ों की खूबसूरती के अलावा प्राकृतिक सुंदरता भी होती है। एक ऐसा दृश्य जो आखों को चकाचौंध के साथ मन को ठंडक और शांति प्रदान करता है। ऐसी जगह की जलवायु में मन के साथ-साथ शरीर को ठंडक पहुँचाने वाला वातावरण होता है। ऊँचाइयों पर होने के कारण ऐसे स्थान हमेशा ठंडे होते हैं, इसलिए गर्मियों के दिनों में ऐसे स्थलों पर बहुत सुकून मिलता है। हिल स्टेशनों की ऊँचाई भारत में लगभग 1000 मीटर से लेकर 2500 मीटर तक होती है। ऐसे स्थान लोगों के लिए बहुत मनमोहक और रोचक होते हैं, क्योंकि ऐसे स्थानों में प्राकृतिक सुंदरता निहित या शामिल होती है। भारत में ऐसे कई हिल स्टेशन हैं जहाँ गर्मियों के दिनों में लोग गर्मी से छुटकारा पाने के लिए और प्राकृतिक सुंदरता को देखने के लिए जाना पसंद करते हैं।

हिल स्टेशन पर जाने का मेरा अनुभव: यात्रा की शुरुआत : जिस दिन से मैंने मसूरी जाने के बारे में सुना था उस दिन से मैं काफी

रोमांचित था। मैंने अपने सामान की पैकिंग पहले से ही कर ली थी। सभी अपनी यात्रा को यादगार बनाना चाहते थे इसलिए पहुँचने में थोड़ी देर ही सही, हमने अपना टिकट ट्रेन से करवाया। अंततः यात्रा का दिन आ गया और मैं अपने परिवार के साथ स्टेशन पहुँच गया। पटना से अपनी ट्रेन पकड़ने के बाद हम लगभग 24 घंटे बाद अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच गए। हमने पहले से ही वहाँ होटल बुक कर रखा था इसलिए स्टेशन पर हमें होटल की गाड़ी लेने आई। सभी ट्रेन के सफर से थक चुके थे, इसलिए होटल पहुँचने के बाद सभी ने पहले थोड़ा आराम करने का फैसला किया, और बाद में एक-एक कर हर जगह घूमने का मन बनाया।

घूमने के लिए खूबसूरत जगह : मैदानी इलाकों की अपेक्षा मसूरी में मौसम बहुत ही अलग सुहाना था। यहाँ की वादियों में एक नमी थी जो हमारे दिल और मन को बहुत ही सुखद एहसास दे रही थी। हमने मसूरी घूमने के लिए होटल में पहले ही जगहों की सूची बना ली थी। हमारी कैब के ड्राइवर ने भी कुछ जगहों पर घूमने का अपना सुझाव दिया, क्योंकि वह वहीं का निवासी था और उसे सभी जगहों के बारे में अच्छे से पता था।

सबसे पहले हमने “सर जॉर्ज एवरेस्ट ” जगह पर जाने का फैसला किया। यह जगह हमारे होटल से थोड़ी दूर थी पर रास्ते में हरियाली और मौसम का आनंद लेते हुए मन प्रसन्न हो गया, और हम सब वहाँ पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हमने सर जार्ज का घर देखा, यह स्थान हिमालय और दून की पहाड़ियों में स्थित था। यहाँ से हमें पहाड़ियों का एक अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। हम सभी ने यहाँ की पहाड़ियों और अपनी कुछ फोटो भी खिचवाई जो हमारे लिए सबसे यादगार लम्हों में से एक है।

इसके बाद हमने मसूरी के सबसे ऊँचे स्थान “लाल टिब्बा” का दौरा किया। यहाँ से हम दूरबीन के सहारे केदारनाथ और वहाँ की अन्य

पहाड़ियों को देखने का सुखद अनुभव प्राप्त किया। "कैमल रोड" प्रकृति द्वारा बनाई गई एक सुंदर आकृति है। यह बिल्कुल ऊँट की कूबड़ की तरह दिखता है और इस पर काफी आसानी से चला जा सकता था। हमने यहाँ कुछ समय बिताया और कुछ तस्वीरें भी लीं। हमने नाग देवता के मंदिर के दर्शन किये जो भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर है। केम्पटो फाल एक ऐसी मनोरम जगह है जहाँ पहाड़ी से गिरते झरनों का एक सुन्दर और मनोरम दृश्य देखने को मिला। यह देखना सबसे सुखद एहसास था।

ऐसे मोहक और मन को लुभाने वाले नज़ारे को देखकर मेरा मन वहीं का हो गया। मेरी इच्छा वहाँ से लौटने की बिल्कुल भी नहीं थी पर सभी ने कहा हमें और भी जगहों पर जाना है। फिर वहाँ से हम मसूरी की खूबसूरत झील को देखने के लिए आ गए, झील भी काफी मनोरम थी। साफ पानी और एक तरफ पहाड़ी के बीच हरियाली और दूसरी तरफ ठहरने के लिए कुछ होटल इत्यादि ने मेरे मन को मोह लिया। मैंने झील में नाव की सवारी की और वहाँ से सुन्दर घाटियों का नज़ारा लिया। ये सब मुझे सपने सा लग रहा था। अंत में हम "धनीतटी" घूमने गए और हमने वहाँ से बर्फ से ढकी पहाड़ियों का नजारा देखा और कुछ तस्वीरें भी लीं, इसके बाद हम लोग अपने होटल के लिए रवाना हो गए और रास्ते में प्रकृति के नजारे का आनंद लिया।

यात्रा का अंत : हम सबने अपने होटल पहुँचकर रात्रि का एक शानदार भोजन किया और सभी अपने-अपने कमरे में चले गए। मैं मसूरी की खूबसूरत वादियों की याद करते हुए होटल की बालकनी में टहल रहा था और वहाँ से होटल के आस-पास के रात्रि नज़ारे का आनंद ले रहा था। मसूरी की सुन्दर वादियों में एक सप्ताह कैसे बीत गया मुझे पता भी नहीं चला। ये हमारे सफर का आखिरी दिन था, पर अभी भी मेरा मन वहाँ से

जाने को तैयार नहीं था। खैर अगले दिन सुबह की हमारी टिकट थी तो मैं भी जा कर सो गया और मसूरी की हसीन वादियों के सपनों के साथ कब नींद आ गई मुझे पता भी नहीं चला।

हिल स्टेशन हमें प्रकृति से निकटता प्रदान करती है। हिल स्टेशन प्रकृति की सुन्दर वादियों से घिरा होता है। यह एक ऐसा स्थान है जो प्रकृति के बहुत ही करीब माना जाता है। यहाँ से प्रकृति की सुन्दर वादियों को देखा और एहसास किया जा सकता है। ये प्रकृति के इतने करीब होते हैं कि यहाँ की वादियों में शहरों जैसा कोलाहल और प्रदूषण नहीं होता। यहाँ केवल चारों तरफ शांति और वायु का प्रदूषण भी बहुत कम होता है, जो हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक है।

मैंने मसूरी के ऐसे ही एक हिल स्टेशन को देखा जो देहरादून से लगभग 25 किमी दूर है। यहीं पहाड़ी पर फैली चारों तरफ हरियाली, एक सुखद मौसम, शांत वातावरण, गगनचुम्बी ऊँचे-ऊँचे पेड़, बहुत कम ऊँचाई पर बादल इत्यादि थे। मसूरी के बाजारों में शॉपिंग मॉल रेस्टोरेंट इत्यादि सब मौजूद थे। दूर बर्फ से ढके पर्वत, पहाड़ी से गिरते झरने और उँची- उँची पर्वतों की चोटियां हमें एक सुखद अनुभव दे रहीं थीं और हमें प्रकृति के काफी नजदीक ले जा रहीं थीं।

मैं उस सुन्दर जगह से इतना प्रभावित हुआ जैसे सारी मसूरी मेरे साथ है और मैं बस वहीं का होकर रह गया। वहाँ का मौसम इतना मनोरम था कि मैंने तस्वीरें लेते समय यह महसूस किया कि किस जगह की तस्वीर लूँ और किस जगह की छोड़ दूँ। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं प्रकृति की इस सुंदरता को अपने अंदर बसा लूँ और यहाँ का होकर रह जाऊँ। पहाड़ी पर फैली हरियाली और उनसे गिरते पानी के झरने मुझे बहुत ही अच्छे लगे। ये सारी चीजें मुझे प्रकृति के इतने करीब ले गईं जैसे मानो मैं स्वर्ग में हूँ। किसी

ने क्या खूब कहा है कि धरती पर कहीं जन्नत है तो ऐसी ही हसीन वादियों में है। यहाँ की वादियों को देखकर मुझे यह कथन सत्य लगा।

अतः मैं इन सब चीजों को देखकर कह सकता हूँ कि हिल स्टेशन एक ऐसा स्थान है जो हमें प्रकृति के नजदीक होने का एहसास कराता है।



लेखापरीक्षा दिवस के आयोजन पर कर्मिकों द्वारा पदयात्रा

कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व

आशीष वर्मा
लेखाकार

आजकल के तेज़ी से बदलते हुए जीवन में, कार्यालय में काम करने वाले लोगों पर बहुत अधिक दबाव होता है। इस दबाव के कारण, लोगों के मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक सोच पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए, कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य के संतुलन को बनाए रखना बहुत जरूरी है।

सकारात्मक सोच हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम सकारात्मक सोचते हैं, तो हमारे मन में आशा और उत्साह की भावना पैदा होती है। इससे हमारे काम में भी सुधार होता है और हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। जब हमारा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है, तो हम अपने कार्यक्षेत्र में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। लेकिन जब हमारा मानसिक स्वास्थ्य खराब होता है, तो हमारे काम में भी गिरावट आती है। हमारा मानसिक स्वास्थ्य हमारे नित्य के कार्यों में प्रतिबिंबित होता है। सफलता और असफलता का संबंध भी कहीं न कहीं मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा होता है।

कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव:

1. अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाएं।

2. अपने तनाव को कम करने के लिए कुछ समय निकालें।
3. अपने शौक और रुचियों को पूरा करने के लिए समय निकालें।
4. अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें और आवश्यकता पड़ने पर मदद लें।

कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हमें अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव करने होंगे। हमें अपने काम के समय को व्यवस्थित करना होगा, ताकि हम अपने काम को पूरा कर सकें और अपने तनाव को कम कर सकें। हमें अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाने होंगे, ताकि हम उनकी मदद ले सकें और उन्हें हमारी मदद मिल सके। कार्यालय में अच्छे और बुरे वक्त के साथी होते हैं सहकर्मी। अतः हमारा आपसी संबंध ही अच्छे और बुरे वक्त के साथी की परख कराता है।

इसके अलावा, हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। हमें अपने तनाव को कम करने के लिए कुछ समय निकालना होगा और अपने शौक और रुचियों को पूरा करने के लिए भी समय निकालना होगा। हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए उन अभ्यासों को अपनाना होगा जिससे हमें खुशी और संतुष्टि मिले और आवश्यकता पड़ने पर मदद भी लेनी होगी। कई लोग संकोच के कारण मदद मांगने के लिए हाथ नहीं बढ़ा पाते। उन्हें इस झिझक को छोड़ आगे बढ़ना होगा।

कार्यालय में सकारात्मक सोच और मानसिक स्वास्थ्य का महत्व बहुत अधिक है। हमें अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए और अपने तनाव को कम करने के लिए कुछ समय निकालना चाहिए। अगर कोई कुछ कहे तो सुनने वाला भी होना चाहिए। अपने चारों ओर

चौकन्ना रहना चाहिए। हमेशा अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। हमें अपने शौक और रुचियों को पूरा करने के लिए समय निकालना चाहिए और अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। मन खुश और शांत रहेगा तो काम में सुधार होगा और हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान नागकेसर पत्रिका के
तृतीय अंक का विमोचन

कामचोरी : आदत या मजबूरी

उज्ज्वल कांत

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कामचोरी एक ऐसी प्रवृत्ति है जो समाज में आमतौर पर नकारात्मक रूप में देखी जाती है। यह शब्द अपने आप में न केवल आलस्य और उदासीनता को प्रकट करता है, बल्कि किसी व्यक्ति के उसकी जिम्मेदारियों से भागने और कार्यों को टालने की प्रवृत्ति का भी प्रतीक है। लेकिन क्या वास्तव में हर बार कामचोरी केवल एक आदत ही होती है, या इसके पीछे किसी तरह की मजबूरी भी छिपी हो सकती है? यह सवाल हमें गहराई से सोचने पर मजबूर करता है कि कामचोरी के कारण आखिरकार होते क्या हैं, इसके परिणाम आखिरकार कहाँ तक जा सकते हैं और इसे कम करने के क्या क्या उपाय हो सकते हैं। इस लेख में हम कामचोरी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे और साथ ही साथ यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि यह आदत है या मजबूरी।

कामचोरी की परिभाषा और उसके प्रकार : कामचोरी का सामान्य अर्थ है किसी कार्य को जानबूझकर न करना या उसे टालते रहना। यह कई प्रकार की हो सकती है:

व्यक्तिगत कामचोरी : ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने निजी कार्यों को करने में भी आलस्य दिखाता है। जब उसे कोई काम करना नहीं आता या वो किसी काम को करने में सक्षम नहीं हो पाता तो वह व्यक्ति अपने व्यक्तिगत मानसिकता में फंसकर उस कार्य को करने में अन्य लोगों की मदद लेने के बजाए उसे टालने का काम करता रहता है।

पेशेवर कामचोरी : नौकरी या व्यवसाय से जुड़ी जिम्मेदारियों से बचने की प्रवृत्ति ही पेशेवर कामचोरी कहलाती है। वह व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के समक्ष खुद को अपने कार्यों में उस हद तक व्यस्त प्रकट करता है कि अन्य व्यक्ति को उस से उस के कार्यों को लेकर वार्तालाप का मौका ही न मिले।

सामाजिक कामचोरी : सामाजिक उत्तरदायित्वों को अनदेखा करना ही सामाजिक कामचोरी कहलाती है। व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों को समझना ही नहीं चाहता और अपने उत्तरदायित्वों को हमेशा ही अनदेखा करता है और परिणाम स्वरूप कार्य के महत्व एवं नज़ाकत को नहीं समझ पाता और कार्य को ऐसे ही टालता रहता है।

कामचोरी: एक आदत : कामचोरी को अक्सर एक आदत के रूप में भी देखा जाता है। यह आदत बचपन से लेकर बड़े होने तक विकसित हो सकती है। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं:

आलस्य : कुछ लोग स्वभाव से आलसी होते हैं और कठिन कार्यों से बचने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोग हमेशा ही अपना काम दूसरों पर डाल कर उस कार्य के होने का सारा श्रेय लेने की फिराक में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों को सीखने में कम रुचि होती है और परिश्रम करने में आलस्य होने के कारण इनका ध्यान बस उपलब्धि का श्रेय लेने में लगा रहता है और ये किसी भी गलती को स्वीकार करने में भी संकोच दिखाते हैं।

सही मार्गदर्शन का अभाव/प्रेरणा की कमी : जब किसी कार्य में रुचि का अभाव होता है, या उसके साथ के कार्यान्वित लोग जब उसे सही मार्गदर्शन नहीं दे पाते हैं तो व्यक्ति उस कार्य को करने से बचने लगता है।

ऐसे लोगों में प्रेरणा की कमी भी सही मार्गदर्शन के अभाव के कारण ही उत्पन्न होती है।

नकारात्मक वातावरण : यदि व्यक्ति का वातावरण प्रेरणादायक न हो, तो वह कामचोरी की ओर झुक सकता है। ऐसे वातावरण के कारण न लोगों को एक अच्छा मार्गदर्शन मिल पाता है ना ही आने वाली पीढ़ी के लिए कोई अच्छा मार्गदर्शक बन पाता है। ऐसा नकारात्मक वातावरण पूरे समाज के ही आगे बढ़ने में एक बहुत बड़े अवरोध की भूमिका निभाने लगता है। ऐसे वातावरण में कामचोरी का एक आदत स्वरूप बनना स्वाभाविक हो जाता है।

असफलता का डर : कई बार असफल होने के डर से लोग कार्य को टालने लगते हैं। जब किसी व्यक्ति पर उसके व्यावसायिक कौशल में कमी का कारण कार्य का अत्यधिक बोझ आ जाता है या जब उस व्यक्ति को किसी कार्य को लेकर असफलता का भय सताने लगता है और वो अपनी लज्जा के कारण अपने से कनिष्ठ पद पर बैठे लोगों से मदद लेने में संकोच करता है तो उस कार्य को करने में निश्चय ही कामचोरी दिखाने लगता है।

कामचोरी: मजबूरी के रूप में : हर बार कामचोरी को आदत कहना सही नहीं है। कई बार यह व्यक्ति की मजबूरी भी हो सकती है। आइए कुछ संभावित मजबूरियों पर विचार करें:

शारीरिक थकान : अत्यधिक काम का बोझ व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से थका सकता है, जिसके कारण वह कामचोरी करने लगता है। कई बार जब किसी व्यक्ति को अन्य के मुकाबले काफी ज्यादा कार्य मिलने लगते हैं तो उसे काम को करने में संकोच दिखाना स्वाभाविक हो जाता है।

मानसिक तनाव : पारिवारिक, आर्थिक या सामाजिक समस्याएं भी व्यक्ति को काम करने में असमर्थ बना सकती हैं। इसीलिए ऐसे समय में मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं में सामंजस्य बनाकर चलना बहुत जरूरी हो जाता है।

अपर्याप्त संसाधन : कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक साधनों का अभाव भी व्यक्ति को व्यावसायिक दृष्टिकोण से निष्क्रिय बना सकता है। कई बार व्यक्ति को उसके अधिकार से ज्यादा जिम्मेदारी का बोझ भी कार्य को करने के प्रति रुचि को खत्म कर देता है और वह उन जिम्मेदारियों से उत्पन्न परिणाम के भय के कारण कार्य को करने में संकोच दिखाने लगता है।

स्वास्थ्य समस्याएं : शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं भी कामचोरी का कारण बन सकती हैं। स्वस्थ न होने पर भी जब व्यक्ति को कार्य स्थल पर कोई रियायत नहीं मिलती है तो अत्यधिक काम का होना भी व्यक्ति में कामचोरी की भावना को उत्पन्न कर देता है।

कामचोरी के दुष्प्रभाव : चाहे यह आदत हो या मजबूरी, कामचोरी के दुष्प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर ही पड़ते हैं।

व्यक्तिगत नुकसान : कामचोरी के कारण व्यक्ति का आत्मविश्वास कम हो सकता है और उसका भविष्य अंधकारमय हो सकता है। एक कार्य स्थल में सभी लोगों का व्यक्तिगत विकास ही उस स्थल के विकास का मार्ग स्थापित करता है। अतः इस व्यक्तिगत नुकसान के कारण पूरे कार्य स्थल का भी विकास प्रभावित होता है।

पेशे में हानि : कार्यस्थल पर कामचोरी का परिणाम नौकरी छूटने या करियर में ठहराव के रूप में सामने आ सकता है। व्यक्ति में व्यावसायिक

रूप में ठहराव आ जाता है और उसके कौशल का विकास भी रुक जाता है।

सामाजिक प्रभाव : जब लोग अपने सामाजिक दायित्वों को नहीं निभाते, तो समाज में अव्यवस्था फैलती है। समाज में नेतृत्व की कमी भी आती है और समाज का कल्याण भी नहीं हो पाता है।

देश की प्रगति में बाधा : कामचोर व्यक्ति देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में बाधा डालते हैं। उच्च पद पर किसी कामचोर व्यक्ति की नियुक्ति समाज और देश की प्रगति में और भी बाधा डाल सकती है।

कामचोरी से कैसे बचें? कामचोरी चाहे आदत हो या मजबूरी, इसे सुधारने के उपाय संभव हैं।

आत्मनिरीक्षण करें : अपनी कमजोरियों और मजबूरियों को पहचानें। अपनी कमियों को पहचान कर ही उसे दूर किया जा सकता है और खुद को बेहतर बनाया जा सकता है।

लक्ष्य निर्धारित करें : अपने जीवन में छोटे और बड़े लक्ष्य बनाएं और उन्हें उनकी प्राथमिकता के आधार पर ही पूरा करने की योजना बनानी चाहिए।

समय प्रबंधन : समय का सही उपयोग करना सीखना चाहिए और किसी भी कार्य को टालने की बजाय उसे निर्धारित समय में पूरा करने की योजना बनानी चाहिए।

प्रेरणा प्राप्त करें : खुद को प्रेरित करने के लिए सकारात्मक लोगों और विचारों के संपर्क में रहें। कुछ नया सीखने में कभी भी संकोच नहीं

करना चाहिए और अपनी गलती को स्वीकार करने में संकोच भी नहीं करना चाहिए।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें : शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें। मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं में सामंजस्य बनाकर चलना भी बेहद जरूरी है।

सहायता माँगें : यदि कामचोरी मजबूरी बन गई है, तो अपने दोस्तों, परिवार या किसी विशेषज्ञ की मदद लें। अपनी गलती को स्वीकार करने में और कुछ नया सीखने में संकोच भी नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष : कामचोरी एक ऐसी स्थिति है जो व्यक्ति की आदत और मजबूरी दोनों हो सकती है। इसे केवल नकारात्मक दृष्टिकोण से देखना उचित नहीं है। हमें इसे समझने और सुधारने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। एक संगठित, अनुशासित और प्रेरित जीवन जीकर हम कामचोरी से बच सकते हैं और अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।



भारतीय लोकाचार

कुलदीप

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लोकाचार 'शास्त्र' संस्कृति से निकला है यह पाप, पुण्य, स्वर्ग-नरक, सत्य, अहिंसा, भक्ति, स्वागत, प्रणाम, दया, बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति प्रेम आदि आचरण या सुसंस्कृत व्यवहार की संस्कृति निर्धारित करता है। लोकाचार एक अनुशासन है जो व्यक्ति की नैतिकता या समाज के नैतिक मानक की जांच करता है। नैतिकता का अर्थ है कि अपने व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के संदर्भ में अपेक्षित मानक इसमें ईमानदारी, जिम्मेदारी आदि शामिल है।

नैतिकता मानकों का वह समूह है जो मानवीय तर्क और अनुभव से तैयार किया गया है जिसके द्वारा मानवीय कार्यों को अंततः सही या गलत, अच्छा या बुरा के रूप में निर्धारित किया जाता है। नैतिकता लोकाचार से ली गई है। भारतीय लोकाचार भारतीय संस्कृति से प्राप्त मूल्य और नैतिकता का समूह है जैसा कि रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों और भागवत गीता और वेदों जैसी पवित्र पुस्तकों में दर्शाया गया है।

“भारतीय लोकाचार” एक व्यक्तिपरक प्रबंधन प्रणाली की मांग करता है जो निम्नलिखित समझ की ओर ले जाता है।

प्रबंधन दृष्टिकोण : मूल्य-उन्मुख समग्र प्रबंधन में दृढ़ विश्वास रखने वाला शीर्ष प्रबंधन। सभी हितधारकों – कर्मचारियों, ग्राहकों, शेयरधारकों और नागरिकों की सेवा और संतुष्टि के माध्यम से लाभ अर्जित किया जाता है सामाजिक जिम्मेदारी की पूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।

संगठन का मानवीकरण : मानवीय संगठनों के तीन पहलुओं को देखना, यानी पारस्परिक संबंध, मानव-मशीन समीकरण जहाँ मनुष्य चिंता

का विषय है और इस व्यक्ति के मानसिक और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से आंतरिक प्रबंधन।

आंतरिक प्रबंधन : आत्म प्रबंधन या चेतना का प्रबंधन- जब आत्मा मनुष्य के अन्य चार सदस्यों अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि और हृदय का प्रबंधन करती है। आत्म प्रबंधन का उद्देश्य पहले खुद को जानना है और प्रबंधित करना और फिर दूसरों का प्रबंध करना है।

आत्म निरीक्षण : दर्पण और असंगति के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए आत्म अध्ययन, आत्म-विश्लेषण और आत्म-अवलोकन पर लगना अपने स्वयं के विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं और जुनून का आत्म-परीक्षण करना और अहंकार को कम करने और उसे वश में करने की इच्छा।

मस्तिष्क को शांत करना : तर्कसंगत और स्थायी निर्णयों के लिए, एक शांत मन की आवश्यकता होती है एक पूर्ण मौन (शांति का आनंद लेने वाला शांत मन) आवश्यक है। मस्तिष्क को शांत करना या ध्यान पूर्ण मौन उन समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान खोजने का सबसे विश्वसनीय तरीका है जो तर्क और बुद्धि से निपटाने में कठिन लगता है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति आंतरिक मन की उच्च चेतना जिसको 'चेतना' कहा जाता है, के संपर्क में आ सकता है।

पीछे हटना (थोड़ी देर के लिए) : कभी भी कोई निर्णय न ले, कभी भी एक शब्द न बोलें, बिना पीछे हटे कभी भी खुद को कार्रवाई में न डालें, किसी भी स्थिति में कुछ समय के लिए पीछे हटना व्यक्ति को उस स्थिति को नियंत्रित करने और उसमें महारत हासिल करने में सक्षम बनाता है।

स्व-गतिशील ध्यान : एक गतिशील ध्यान निम्न चेतना को उच्च चेतना में बदलने का ध्यान है और इसलिए इसे परिवर्तनकारी ध्यान कहा जाता है। ध्यान के माध्यम से एक शांत मन में व्यक्ति चेतना के उच्चतम स्तर तक पहुँचता है जो कई समस्याओं से निपटने के लिए अंतर्ज्ञान के रूप

में मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसे प्रबंधन के लिए चेतना दृष्टिकोण कहा जाता है।

अंतर्ज्ञान की भूमिका : अंतर्ज्ञान बिना किसी तर्क या अनुमान के प्रत्यक्ष ज्ञान या निश्चितता तक पहुँचने का कार्य है। यह आंतरिक मन की तत्काल अनुभूति है और जब पूरी तरह से विकसित हो जाती है, तो यह त्वरित और सही निर्णय लेने के लिए कुशल और प्रभावी होती है। अंतर्ज्ञान व्यक्ति को जीवन के उतार-चढ़ाव वाले वातावरण और तेजी से होने वाले परिवर्तनों का आत्मविश्वास के साथ सामना करने में सक्षम बनाता है।

हमारे प्राचीन शास्त्रों द्वारा बताए गए कुछ बुनियादी विचार आधुनिक जगत में लागू होते हैं।

‘परस्पर देवो भव’ दूसरे व्यक्ति को दिव्य प्राणी माने। हम सभी में एक ही चेतना है हालांकि हमारे आवरण और कंटेनर अलग-अलग है। भौतिकवादी मानसिकता वाले लोगों के लिए भारतीय लोकाचार के दृष्टिकोण को आत्मसात करना कठिन हो सकता है, जहाँ अंतिम परिणाम ही एकमात्र चिंता का विषय है, जिसे उस परिणाम तक पहुंचाने के लिए चुनी गई प्रक्रियाओं और रास्तों के बजाय किसी भी तरह से प्राप्त किया जाना है। भारतीय लोकाचार किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों को प्रोत्साहन देता है, न कि लक्ष्य को। यदि प्रक्रियाओं और साधनों को प्रभावित और परिष्कृत किया जाए, तो अंतिम परिणाम में भी उत्कृष्टता ही प्रकट होगी।

भारतीय दर्शन सभी विविधताओं के बीच एकता की प्रशंसा करता है सहिष्णुता में विश्वास करता है, स्वतंत्रता की खोज करता है, स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था धर्म मानव में पहले से ही मौजूद दिव्यता की अभिव्यक्ति है। वेदांत हमें अपने जीवन को सामान्यता से उत्कृष्ट की और परिवर्तित करना सिखाते हैं। यदि हम परम आत्मा की महिमा को समझ लें

और हर जगह आशापूर्ण और आनंदमय चेतना की स्थिति महसूस करें, तो हम सभी अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे भीतर रहने वाली सर्वोच्च आत्मा तब सभी बुराइयों को नष्ट कर देगी और सभी शुद्ध चीजों को मुक्त कर देगी। और हमारी धरती पर समृद्धि की सहस्राब्दी लाने के लिए फिर से निर्माण होगा। तब हम बेहतर प्रदर्शन करने वाले होंगे क्योंकि हमने प्रबंधन की कला सीख ली है।

“जहाँ हृदय में धार्मिकता है, वहाँ चरित्र में सुंदरता है।”

“जब चरित्र में सुंदरता होती है, तब घर में सामंजस्य होता है।”

“जब घर में सामंजस्य होता है, तो राष्ट्र में व्यवस्था होती है।”

“जब राष्ट्र में व्यवस्था होती है तब विश्व में शांति होती है।”

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।

भारतीय संस्कृति का मूल उद्देश्य मानव के आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक वातावरण का निर्माण करना है।



- ◆ “हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमें अपने बच्चों को इसके महत्व के बारे में शिक्षा देनी चाहिए।”
- ◆ हिंदी भाषा ही सही अर्थों में हमारे संस्कारों की पहचान है, इससे ही हमारा बढ़ता सम्मान है।
- ◆ अपनी मातृभाषा को सम्मान देना ही उन्नति का प्रतीक है, जो ऐसा नहीं करते उन्हें सुखभरी सफलता नहीं मिलती।
- ◆ जो मानव अपनी भाषा का आदर करता है, वही व्यक्ति इस समाज में यश का अधिकारी होता है।

धनी व्यापारी

कृष्ण कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

एक छोटे से गाँव में एक युवा बेरोजगार रहता था जिसका नाम रजत था। वह सुशिक्षित व्यक्ति था किंतु कोई रोजगार न होने की वजह से उसने एक फेरी वाले के रूप में कार्य करना शुरू किया। कुछ समय के बाद वह शौकिया तौर पर शराब पीने लगा, लेकिन धीरे-धीरे उसकी आदत इतनी बिगड़ गई थी कि अब वह सुबह का कुल्ला शराब से ही करता था। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उसके पास के गाँव में बसंत के ऋतु में मेले का आयोजन था। प्रातः काल से ही गाँव के सभी लोग हर्षोल्लास से ओत-प्रोत थे। छोटे छोटे बच्चों की खुशी तो देखते ही बनती थी। सभी बच्चे अपने माता-पिता से मेला जाने का आग्रह कर रहे थे। रजत ने भी अपनी पत्नी और नवजात बच्ची एंजेल के साथ मेला जाने की योजना बनाई। धीरे-धीरे गाँव से युवक, युवतियाँ और बच्चे मेले की ओर प्रस्थान करने लगे। जब रंग-बिरंगे वस्त्रों को धारण किए हुए लोगों का दल रास्ते में पीले फूलों वाली सरसों के लहराते खेतों से होकर गुजरा तो इस प्राकृतिक सुंदरता के सजीव चित्रण को देखकर मन आंतरिक खुशी से उद्वेलित हो रहा था। छोटे-छोटे बच्चे अपने माता-पिता के बीच में छोटे-छोटे कदमों से फुदकते हुए चलते जा रहे थे। किंतु किसी को यह नहीं पता था कि मेले को जाने वाला हर्षोल्लास से भरा यह मार्ग एंजेल और उसकी माँ को एक दुर्लभ जीवन की ओर लिए जा रहा था।

भीड़ से खचाखच भरे हुए मेले में रजत ने एक अलग ही करतब दिखा दिया। उसने शराब के नशे की वजह से अपना मानसिक नियंत्रण खो दिया था। इसी के चलते रजत ने अपनी पुत्री और अपनी पत्नी सावित्री को

मेले में एक सर्कस वाले के हाथ मात्र ₹5000 में बेच दिया। उस सर्कस वाले का नाम दयाराम था।

अगले दिन होश में आने पर रजत को अपने किए पर पछतावा होता है। वह अपना सिर पटक-पटक कर रोता और चिल्लाता है। किंतु अब दयाराम उसकी पत्नी और पुत्री को लेकर जा चुका था। यहाँ से रजत अपने शेष जीवन में शराब न पीने की प्रतिज्ञा करता है।

इस घटना को हुए 15 वर्ष हो चुके थे। रजत अब दूसरे शहर में रहने लगा और वहाँ वह एक सफल और धनी व्यापारी हो गया। वह अब अपने आत्म-नियंत्रण और संयम के लिए जाना जाता था। शर्म की वजह से उसने कभी किसी को अपनी पत्नी और पुत्री के साथ हुई घटना के बारे में नहीं बताया था। लोग यह समझते थे कि वह एक विधुर है।

एक बार रजत अवकाश के दौरान अपनी पहाड़ी यात्रा के लिए जा रहा था तब एक छोटी सी सड़क दुर्घटना में उसे हल्की सी चोट लग जाती है। वहाँ रजत की मुलाकात काव्या से होती है जो एक युवती है और वह रजत को चिकित्सा सुविधा प्रदान करती है। वह उस युवती के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है और जब तक पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ नहीं हो जाता तब तक वहीं रुकता है। रजत काव्या को अपनी पत्नी के साथ हुई घटना के बारे में यथार्थ नहीं बताता है बल्कि उस घटना के स्थान पर वह बताता है कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई थी और शायद अब वह मर गई है। यद्यपि काव्या को उसकी इस बात पर विश्वास नहीं होता है फिर भी वह इस बात को अस्वीकार नहीं कर पाती है क्योंकि वह उसके विनम्रता पूर्ण व्यवहार व सौम्य स्वभाव से बहुत प्रभावित थी। कुछ दिनों के बाद रजत काव्या के गृह-नगर से अपने नगर वापस आ जाता है। लेकिन अब वे अच्छे दोस्त बन चुके हैं।

काव्या के मन में रजत के साथ औपचारिक रूप से विवाह करने का विचार आता है। किंतु वह इस दुविधा में है कि यदि वह किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करती है जिसकी पत्नी अभी भी जीवित हो सकती है तो समाज में उसकी प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचेगी। लेकिन उससे पहले ही रजत काव्या को संदेश के माध्यम से विवाह हेतु प्रस्ताव भेजता है।

इसी दौरान सावित्री अपनी बेटी एंजेल के साथ खोजबीन करते हुए अप्रत्याशित रूप से रजत के घर पहुँच जाती है और रजत को बताती है कि जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा था वह ट्रेन यात्रा के दौरान उससे बिछड़ गया है। परिणामस्वरूप सावित्री को स्वयं और अपनी पुत्री एंजेल के भरण-पोषण हेतु रजत की तलाश करने के लिए बाध्य होना पड़ा। एंजेल रजत के साथ अपने वास्तविक संबंध को नहीं जानती है।

सावित्री इस बात पर जोर देती है कि दयाराम के साथ उसका विवाह वैध है क्योंकि वह गायब हुआ है इसलिए उसके जीवित होने की संभावना है। किंतु रजत के साथ अपने वैवाहिक जीवन की वैधता पर सवाल उठाती है। समय और परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए तथा अपनी बेटी के भविष्य को सुरक्षित करने एवं सही दिशा प्रदान करने हेतु वे सार्वजनिक रूप से एक साथ रहने के लिए सहमत हो जाते हैं।

इसी बीच शहर में रेयांश नाम का एक युवक आता है जो शहर में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंच पर अभिनय करके अपनी कलाकारी का प्रदर्शन करता था और उसकी आय का स्रोत भी यही था। धीरे-धीरे वह रजत का एक अच्छा दोस्त बन जाता है और उसके व्यापार में भी सहयोग करने लगता है। रजत सावित्री को काव्या के बारे में कुछ नहीं बताता है तथा वह काव्या को संदेश भेजकर सूचित करता है कि उसकी सगाई रद्द हो गई है।

रेयांश शहर में बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति बन जाता है और उसके प्रशंसकों की संख्या में बहुत वृद्धि हो जाती है। इसी कारण रजत उसके प्रति बहुत ईर्ष्यालु हो जाता है। रजत की ऐसी मनोदशा हो जाने के कारण रेयांश से उसकी तर्कहीन बहस होती रहती है जिसके परिणामस्वरूप रजत ने वित्त संबंधी कई विवेकहीन फैसले लिए और उसको आर्थिक क्षति झेलनी पड़ी।

रेयांश और रजत की पुत्री एंजेल की मुलाकात होती है। सावित्री की लंबी बीमारी की वजह से मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु के बाद रजत को उसके द्वारा लिखा एक लेख हाथ लग जाता है जिससे यह रहस्योद्घाटन होता है कि रजत एंजेल का वास्तविक पिता नहीं है। उसकी नवजात पुत्री की उसी समय मृत्यु हो गई थी जब वह दयाराम के साथ थी। यह लड़की उसकी दूसरी पुत्री है जिसका वास्तविक पिता दयाराम था। इस लड़की का नाम भी एंजेल ही रखा था। इस रहस्य का अनावरण होते ही रजत अब एंजेल के प्रति निर्दयी हो जाता है। लेकिन एंजेल को वह कभी नहीं बताता है कि वह उसका वास्तविक पिता नहीं है।

इसी बीच काव्या कहीं अवैध रूप से धन प्राप्त करती है और रजत के शहर में एक घर खरीद लेती है। वह रजत के साथ अपने वैवाहिक रिश्ते को स्थापित करना चाहती है। लेकिन रजत इस बात से सहमत नहीं होता है क्योंकि उसका मानना है कि पहली पत्नी की मृत्यु के तुरंत बाद दूसरा विवाह करना सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतिकूल होगा। काव्या को किसी तरह उसकी पत्नी द्वारा लिखा हुआ लेख प्राप्त हो जाता है जिसमें एंजेल के पिता का रहस्य छिपा होता है। रजत चाहता है कि यह रहस्य रहस्य ही रहे इसलिए वह काव्या से अनुरोध करता है कि वह उसके बारे में किसी को ना बताए।

काव्या उसकी इस बात से सहमत हो जाती है लेकिन इस शर्त पर कि वह उससे मुलाकात जारी रखेगा। इसी दौरान रेयांश काव्या से मिलता

है और वे दोनों संयुक्त रूप से व्यवसाय शुरू करते हैं। धीरे-धीरे वे दोनों शहर के प्रतिष्ठित व्यापारी बन जाते हैं। वह इस बात से अनभिज्ञ है कि काव्या इस शहर में रजत से मुलाकात करने के लिए आयी है। कुछ समय गुजर जाने के बाद काव्या रेयांश के साथ औपचारिक रूप से विवाह कर लेती है। अब वह रजत के साथ विवाह करने का विचार त्याग देती है क्योंकि उसे पता लग जाता है कि रजत ने अपनी पहली पत्नी को बेंच दिया था। इस रहस्य के उजागर होते ही रजत के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचती है। धीरे-धीरे यह बात शहर में फैल जाती है। अब रजत स्वयं को बिल्कुल अकेला, शर्मिदा एवं असहाय महसूस करता है। परिणामस्वरूप रजत का मानसिक तनाव बढ़ जाता है और मानसिक असंतुलन की वजह से वह अपनी संपत्ति को बेचना शुरू कर देता है। वह फिर से शराब पीने लगता है और शहर में शर्मनाक दृश्य पैदा करता है।

इन्हीं घटनाओं के बीच काव्या की तबियत अचानक बिगड़ जाती है और हृदयाघात के कारण उसकी आकस्मिक मृत्यु हो जाती है। काव्या की मृत्यु के बाद अब रेयांश बिल्कुल अकेला हो गया था। उन दोनों ने मिलकर शहर में एक प्रतिष्ठित व्यवसाय स्थापित किया था किंतु वह व्यवसाय अब उसे अकेले संभालना पड़ रहा था। उधर एंजेल भी अपने पिता के गैर-जिम्मेदाराना पूर्ण व्यवहार को देखकर परेशान थी क्योंकि रजत अब अपने व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जीवन दोनों को महत्व नहीं दे रहा था। अतएव, इस प्रकार की विषम परिस्थितियों को देखकर लगा कि अब व्यवसाय का उत्तरदायित्व उसे संभालना पड़ेगा तो वह रेयांश से औपचारिक मुलाकात करती है और व्यवसाय के बारे में चर्चा करती है क्योंकि उसे व्यवसाय व बाजार के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। निर्णय यह होता है कि अब दोनों संयुक्त रूप से व्यवसाय करेंगे। वे दोनों संयुक्त रूप से व्यवसाय की शुरूआत करते हैं। कुछ समय तक संयुक्त रूप से व्यवसाय चलाने के बाद अब उन दोनों ने व्यवसायिक जीवन के साथ-साथ एक-दूसरे के व्यक्तिगत

जीवन को भी समझ लिया था। अतः वे दोनों स्वेच्छा से विवाह कर लेते हैं।

अंततः स्वयं पर शर्मिदा होकर रजत उस शहर को छोड़ देता है।
रजत अपनी पुत्री के विवाह में उपस्थित नहीं हो पाता है और कुछ महीनों बाद वह मृत पाया जाता है।



गणतन्त्र दिवस समारोह पर सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों
द्वारा ध्वजारोहण

ज़िंदगी के उतार चढ़ाव

गौतम कुमार
लेखाकार

मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत सारी कहानियाँ फिल्मों में देखीं और किताबों में पढ़ी भी हैं, पर ये एक ऐसी कहानी है जिसको मैंने देखा है, महसूस किया है और ये काल्पनिक नहीं बल्कि हकीकत है। मैंने अपने और लोगों के बीच बहुत से उतार चढ़ाव भी देखे हैं पर किसी की ज़िंदगी में इतने उतार चढ़ाव हो सकते हैं, यह मैंने पहली बार देखा। परंतु, इसके साथ-साथ कुछ हास्यापद घटनाएं भी हुई थीं। ये कहानी है मेरे बचपन के प्रिय मित्र की, जिसका बचपन का नाम "छोटा बम" था, जोकि मेरे द्वारा रखा गया था।

इनका परिवार एक सामूहिक, सुखी-संपन्न परिवार था, जिसमें शामिल थे- माता-पिता, दो भाई, एक बहन, दादा-दादी और दो चाचा। इनके दादा जी का बहुत बड़ा अनाज का व्यापार था जिसे इनके पिताजी और एक चाचा साथ मिलकर रहे थे और एक चाचा सामान्य वितरक थे और बहुत सारी जमीन तथा इन की माँ का एक बहुत बड़ा सिलाई सेंटर था। सब कुछ सही चल रहा था फिर दोनों चाचा की शादी हो गयी और ये परिवार कुछ दिनों बाद ही सामूहिक नहीं रह गया बल्कि सारा परिवार ताश के पत्तों की तरह बिखर गया। शादी के कुछ दिनों बाद ही आपस में झगड़ा होना शुरू हो गया। ये सब उनके दादा-दादी से देखा नहीं गया, कारण पूछे जाने पर उन्होंने अलग होने का प्रस्ताव रखा और फिर सारे व्यापार और खेत जायदाद और घर का बँटवारा हो गया। ये सब होने के बाद उनके पिता जी बिल्कुल टूट से गए। व्यापार घाटे में चला गया और फिर बुरे दिन शुरू हो गए। यहाँ तक कि कुछ दिनों तक वे इस दुख से उबर ही नहीं पा रहे थे।

जिसके साथ बचपन से लेकर जवानी तक एक साथ बिताया वो भाई आज भाई नहीं रहा, संपत्ति के कारण सभी अलग हो गए।

फिर इन सब दुखों को भुलाकर ये परिवार आगे बढ़ा। अब धीरे-धीरे इनका व्यापार आगे बढ़ा और समस्याएं सामान्य हुईं। हमारे दोस्त और उनके भाई और बहन की पढ़ाई जारी थी पर मेरे दोस्त का पढ़ाई से ज्यादा क्रिकेट खेलने में रुचि थी। परंतु यह उनके पिताजी को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। फिर भी, हम दोनों दोस्त घर से चोरी-छिपे निकल जाते थे और बहुत दूर-दूर तक चले जाते थे। चाहे बहुत ज्यादा ठंड हो या फिर बहुत तेज़ चिलचिलाती धूप हो, कोई परवाह नहीं, बस खेलना है तो खेलना है। घर वापस आने से पहले पिताजी का डर सामने रहता था। उसके पिताजी डंडा लेकर एक दो किलोमीटर तक दौड़ा देते थे, बाद में बहुत पिटाई भी होती थी। घर पर मेरे पिताजी पिटाई तो नहीं करते थे, परंतु उनकी डाँट पिटाई से दस गुना अधिक शक्तिशाली थी। बिना पिटे हुए ही आँसुओं का सैलाब सा आ जाता था। पर मेरी दादी बहुत प्यारी थी। वो उल्टा मेरे पिता जी को ही सुना देती थी और फिर मुझे बहुत सारा लाड़-प्यार करतीं। पिताजी से डाँट और मार का प्रभाव सिर्फ कुछ समय तक ही होता था।

अगले दिन फिर वही चोरी से क्रिकेट के मैदान में वापसी। एक दिन की बात है क्रिकेट के मैदान में दो सांड आया करते थे। वो वहाँ मैदान में घूमते हुए घास चरते और फिर वापस चले जाते। फिर किसी ने हमें बताया कि ये बहुत सीधे हैं, परंतु किसी को लाल कपड़े में देखकर उसे बहुत भगाते हैं। इन बातों से मेरा दोस्त बहुत अनजान था। यह बताने के बाद भी वह अगले दिन लाल रंग की कमीज़ पहनकर मैदान में चला गया। कुछ देर बाद सांड देवता का प्रवेश हुआ। उसका कोई भी प्रभाव उस पर नहीं दिख रहा था। फिर मेरा दोस्त, छोटा बम उनके आगे घास देने चला गया। फिर क्या, लाल रंग देखते ही सांड देवता ने उसे दौड़ा-दौड़ाकर उसकी हालत पतली

कर दी और उसे एक मक्के के खेत में छुपना पड़ा। उसके बाद, उसने कभी भी लाल रंग की कमीज़ पहनना तो दूर, देखना भी पसंद नहीं किया।

कुछ साल बीतने के बाद मेरे दोस्त के पिताजी ने उनके बड़े भाई को नाना जी के यहाँ पढ़ाई के लिए भेज दिया और मेरे दोस्त की पढ़ाई अभी भी गाँव में ही हो रही थी। सब कुछ ठीक ही चल रहा था कि अचानक उनके पिताजी एक सड़क दुर्घटना में घायल हो गए और डॉक्टर के प्रयास से उनकी जान बच गई। परंतु इसका सीधा असर उनके व्यापार पर पड़ा और फिर हालात बहुत बुरे हो गए, क्योंकि अब उनके दादाजी बहुत बूढ़े हो गए थे और व्यापार चलाने में सक्षम नहीं थे।

किसी तरह हालात सामान्य हुये ही थे कि उनके बड़े भाई, जो ननिहाल में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी कर रहे थे, एक दिन साँप के काटने की वजह से उनका देहांत हो गया। अब पूरे परिवार के ऊपर जैसे दुखों का पहाड़ सा आ गिरा हो। इस दुख से अभी उबरे हुए एक साल भी नहीं हुआ था कि पहले दादा जी और कुछ महीनों के बाद दादी जी का देहांत हो गया। अब परिस्थितियाँ और ज्यादा नाजुक हो गई थीं। अब घर में बस एक भाई, बड़ी बहन और माता-पिता थे। पिताजी को बेटी की शादी की चिंता भी सताए जा रही थी। कुछ महीने बाद, किसी तरह उन्होंने अपनी बेटी का विवाह सम्पन्न किया और बेटे को अपनी बहन के यहाँ भेज दिया ताकि वह पढ़ाई भी कर पाए और साथ ही तकनीकी कौशल में भी ज्ञान अर्जित कर पाए।

सब कुछ लगभग ठीक ही हो चुका था। माताजी और पिताजी का व्यवसाय फिर से चलना शुरू हो गया था। ये सब देख लोगों का भी दिल जलना शुरू हो गया, क्योंकि हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ दुखी रहने पर लोग खुश होते हैं और दूसरों का मान-सम्मान उनसे देखा नहीं जाता। इस परिवार को शायद फिर से किसी की नज़र लग गई और मेरे दोस्त की माँ किसी बड़े रोग का शिकार हो गई। अब घर के तीन सदस्यों में से तीनों

अस्पताल में थे। माँ का इलाज शुरू हुआ पर जो भी व्यवसाय था सब खत्म हो चुका था और बची हुई पूंजी अस्पताल के खर्चों, दवा के बिलों में खत्म हो रही थी।

अस्पताल से लौटने के लगभग दो महीने बाद, माँ ठीक तो हो गईं परंतु उनकी हालत बहुत ही बिगड़ चुकी थी। मेरा दोस्त किसी तरह से अपनी पढ़ाई में लगा हुआ था। वह कभी किसी परिवार के यहाँ रहकर, निजी स्कूल में पढ़ाकर तो कभी निजी कार्यालयों में काम करके अपनी ज़िंदगी में हुए उथल-पुथल को सामान्य करने में लगा हुआ था।

बहुत कड़ी मेहनत के बाद उसे रेलवे में सरकारी नौकरी मिली और साथ ही अब उसके पिता का भी व्यवसाय सही से चलना शुरू हो गया।

करीब पाँच-छः साल नौकरी करने के बाद, मेरा दोस्त नौकरी छोड़कर अपने पिता के व्यवसाय में ही आ गया। अब दोनों ने मिलकर व्यवसाय को बढ़ाने के लिए बहुत मेहनत की और तब जाकर उनके परिवार में खुशियों का दौर आना शुरू हो गया। धीरे-धीरे वे आगे बढ़ते रहे और आगे ही बढ़ते गए, और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, तदोपरान्त, उसने एक सुंदर सा घर बनाकर शादी की तथा उनके दो छोटे-छोटे बच्चे हुए और अब पूरा परिवार एक सुखमय जीवन व्यतीत करने लगा।

यही देखकर शायद कहा जाता है कि दुखों की इतनी क्षमता नहीं होती कि हम केवल दुखों से ही प्रभावित होकर अपना जीवन व्यतीत करते रहें, जैसा कि हमारे छोटे बम ने दुखों को ही दुःखी करते हुए यह प्रमाणित कर दिया।



कार्य-जीवन संतुलन (balance): कार्य और व्यक्तिगत जीवन के प्रबंधन (Management) के लिए रणनीतियाँ (Strategies)

चन्द्रिमा बिस्वास,
लिपिक

समकालीन दुनिया में, एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखना कई व्यक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गया है। प्रौद्योगिकी के उदय और काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच की सीमाओं के धुंधला होने के साथ, कई व्यक्ति अपनी पेशेवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के बीच संतुलन हासिल करने के लिए संघर्ष करते हैं। पेशेवर प्रतिबद्धताओं (professional commitments) और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों की मांग अक्सर संघर्ष करती है, विश्राम और आत्म-देखभाल के लिए बहुत कम जगह छोड़ती है। फिर भी, इन डोमेन के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन प्राप्त करना जीवन में समग्र कल्याण, उत्पादकता और संतुष्टि के लिए महत्वपूर्ण है। यह निबंध कार्य-जीवन संतुलन की अवधारणा, इसके महत्व, कार्य और व्यक्तिगत जीवन दोनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए व्यावहारिक रणनीतियों की पड़ताल करता है।

कार्य-जीवन संतुलन को समझना : कार्य-जीवन संतुलन पेशेवर कर्तव्यों और व्यक्तिगत जीवन की गतिविधियों के बीच संतुलन को संदर्भित करता है। इसमें एक डोमेन को दूसरों को अभिभूत करने की अनुमति दिए बिना काम, परिवार, दोस्तों, शौक और आत्म-देखभाल के लिए पर्याप्त समय और ऊर्जा आबंटित करना शामिल है। एक संतुलित जीवन का मतलब समय का समान विभाजन नहीं है, बल्कि एक गतिशील संतुलन है जो किसी की प्राथमिकताओं और मूल्यों के साथ संरेखित होता है। जब

काम और व्यक्तिगत जीवन संतुलन से बाहर हो जाते हैं, तो व्यक्तियों को तनाव, चिंता और बर्नआउट का अनुभव हो सकता है। इससे उत्पादकता में कमी, नौकरी से संतुष्टि कम हो सकती है और परिवार और दोस्तों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकते हैं। दूसरी ओर, काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन प्राप्त करने से नौकरी से संतुष्टि बढ़ सकती है, रिश्तों में सुधार हो सकता है और समग्र स्वास्थ्य और कल्याण बेहतर हो सकता है। कार्य-जीवन संतुलन की अवधारणा पिछले कुछ वर्षों में काफी विकसित हुई है। परंपरागत रूप से, इसे कार्यालय के घंटों और व्यक्तिगत समय के बीच एक निश्चित विभाजन के रूप में माना जाता था। हालांकि, दूरस्थ कार्य, डिजिटल कनेक्टिविटी और वैश्वीकृत कार्य वातावरण के उदय के साथ, काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच की सीमाएं धुंधली हो गई हैं। यह विकास संतुलन बनाए रखने के लिए जानबूझकर प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

कार्य-जीवन संतुलन का महत्व : कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करना कई कारणों से आवश्यक है जैसे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, बेहतर उत्पादकता, बेहतर रिश्ते, व्यक्तिगत विकास, संगठनात्मक लाभ आदि। लंबे समय से अधिक काम और व्यक्तिगत जीवन की उपेक्षा से तनाव, चिंता और जलन हो सकती है। दूसरी ओर, संतुलन बनाए रखने से मानसिक लचीलापन और शारीरिक स्वास्थ्य बढ़ सकता है। इस विश्वास के विपरीत कि लंबे समय तक काम करने से बेहतर परिणाम मिलते हैं, अध्ययनों से पता चलता है कि अच्छी तरह से आराम करने वाले और संतुलित व्यक्ति अधिक केंद्रित और उत्पादक होते हैं। परिवार और दोस्तों के साथ बिताया गया समय रिश्तों को मजबूत करता है, भावनात्मक समर्थन को बढ़ावा देता है और समग्र खुशी को बढ़ाता है। शौक में शामिल होना, नए कौशल सीखना, या बस आराम करना व्यक्तिगत विकास और पूर्ति में योगदान देता है। कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देने वाली कंपनियां

अक्सर उच्च कर्मचारी संतुष्टि, कम टर्नओवर दर और अधिक सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति का अनुभव करती हैं।

काम और व्यक्तिगत जीवन के प्रबंधन के लिए रणनीतियां :

काम और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करने के लिए सक्रिय योजना, प्राथमिकता और परिवर्तन करने की इच्छा की आवश्यकता होती है। कार्यों को प्राथमिकता देने के लिए टू-डू सूचियों या प्रोजेक्ट प्रबंधन ऐप्स जैसे उपकरणों का उपयोग करें। उच्च प्रभाव वाली गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करें और कम महत्वपूर्ण गतिविधियों को सौंपें या स्थगित करें। आइजनहावर मैट्रिक्स, जो तात्कालिकता और महत्व के आधार पर कार्यों को वर्गीकृत करता है, एक सहायक ढाँचा हो सकता है। काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच सीमाएं स्थापित करना महत्वपूर्ण है। अपने काम के घंटे परिभाषित करें और जितना हो सके उनसे चिपके रहें। इन घंटों के बाहर ई-मेल की जाँच करने या कार्यालय के कॉल लेने से बचें, खासकर परिवार या अवकाश के समय के दौरान। प्रौद्योगिकी वरदान और अभिशाप दोनों हो सकती है। कार्यों को सुव्यवस्थित करने के लिए उत्पादकता टूल और ऐप्स का उपयोग करें, लेकिन व्यक्तिगत समय के दौरान अधिक काम करने या विचलित होने से बचने के लिए स्क्रीन समय पर सीमा भी निर्धारित करें। जबकि संरचना महत्वपूर्ण है, लचीलापन भी फायदेमंद हो सकता है। आवश्यक प्रतिबद्धताओं से समझौता किए बिना अप्रत्याशित व्यक्तिगत या व्यावसायिक माँगों को समायोजित करने के लिए अपने शेड्यूल को समायोजित करें। नियोक्ताओं, सहकर्मियों और परिवार के सदस्यों के साथ खुला संचार आवश्यक है। अपनी सीमाओं पर चर्चा करें और जरूरत पड़ने पर समर्थन माँगें। उदाहरण के लिए, लचीली कार्य व्यवस्था पर बातचीत करें या घर पर जिम्मेदारियों को साझा करें। संतुलन बनाए रखने के लिए स्व-देखभाल गैर-परक्राम्य है। नियमित व्यायाम में व्यस्त रहें, स्वस्थ आहार खाएं, पर्याप्त नींद लें और माइंडफुलनेस या विश्राम तकनीकों का अभ्यास

करें। ये गतिविधियाँ आपकी ऊर्जा की भरपाई करती हैं और तनाव को संभालने की आपकी क्षमता में सुधार करती हैं। अतिरिक्त जिम्मेदारियों या प्रतिबद्धताओं को ना कहना जो आपकी प्राथमिकताओं के साथ संरेखित नहीं हैं, महत्वपूर्ण है। विनम्रता से गिरावट आपको इस बात पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकती है कि वास्तव में क्या मायने रखता है। काम के घंटों और समय-समय पर छुट्टियों के दौरान बार-बार ब्रेक लेने से बर्नआउट को रोका जा सकता है और आपके दिमाग और शरीर को फिर से जीवंत किया जा सकता है। यहाँ तक कि छोटे ब्रेक, जैसे टहलना या गहरी सांस लेने के कुछ मिनट, एक महत्वपूर्ण अंतर ला सकते हैं। यदि आपको संतुलन हासिल करना चुनौतीपूर्ण लगता है, तो कोच, संरक्षक या परामर्शदाता से मदद लेने पर विचार करें। पेशेवर मार्गदर्शक आपकी स्थिति के अनुरूप मूल्यवान अंतर्दृष्टि और रणनीतियाँ प्रदान कर सकता है।

चुनौतियाँ (Challenges) और उन्हें कैसे दूर किया जाए : सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करना विभिन्न कारकों के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जैसे: समय प्रबंधन कौशल में सुधार करके और जहाँ संभव हो वहाँ कार्यों को सौंपकर इसे संपादित करें, अपने लिए यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करें और उनके बारे में दूसरों से स्पष्ट रूप से संवाद करें।

समाप्ति (Conclusion) : अंत में, शारीरिक और मानसिक कल्याण बनाए रखने, रिश्तों में सुधार और नौकरी से संतुष्टि बढ़ाने के लिए काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन प्राप्त करना आवश्यक है। स्पष्ट सीमाएं निर्धारित करके, आत्म-देखभाल को प्राथमिकता देकर, प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से उपयोग करके, नियोक्ताओं और सहकर्मियों के साथ संवाद करके, व्यक्तिगत मूल्यों और लक्ष्यों को प्राथमिकता देकर और जरूरत पड़ने पर समर्थन मांगकर, व्यक्ति अपने काम और व्यक्तिगत

जीवन के बीच बेहतर संतुलन प्राप्त कर सकते हैं। नियोक्ता लचीले शेड्यूलिंग (Flexible Schedule) विकल्पों की पेशकश करके, कर्मचारी कल्याण के लिए संसाधन प्रदान करके और कर्मचारियों को जरूरत पड़ने पर समय निकालने के लिए प्रोत्साहित करके कार्य-जीवन संतुलन का समर्थन करने में भी भूमिका निभा सकते हैं। एक साथ काम करके, व्यक्ति और नियोक्ता (employers) एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ कार्य वातावरण बना सकते हैं।



आई. ए. & ए. डी. इंटरजोनल कैरम प्रतियोगिता के शुभारम्भ कार्यक्रम के दौरान स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा “होजागिरी” नृत्य की प्रस्तुति

बच्चों के जीवन में परिवार का महत्व

नरेन्द्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज के दौर में बच्चों का जीवन पहले की तुलना में पूरी तरह बदल चुका है। उनके दिन स्कूल के होमवर्क और मोबाइल फोन के साथ बीतते हैं। जहाँ पहले बच्चे अपने दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-बहनों के साथ सलाह और बातें करने में समय बिताते थे वहीं आज ऐसा करना दुर्लभ हो गया है। बदलती जीवन-शैली ने बच्चों और उनके पारिवारिक रिश्तों के बीच एक दूरी बना दी है।

मैं यह लेख इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मेरा बचपन संयुक्त परिवार में बीता है। इस माहौल ने मुझे रिश्तों की अहमियत समझने का मौका दिया है। लेकिन जब मैं आज के परिवारों को देखता हूँ जो अब छोटे-छोटे हिस्सों में बंट चुके हैं और जिनमें आपसी जुड़ाव की कमी है, तो मुझे यह महसूस होता है कि इस विषय पर बात करना जरूरी है।

पारिवारिक रिश्ते हर इंसान के जीवन का आधार होते हैं। ये हमें प्यार, सहयोग और सम्मान का महत्व सिखाते हैं। बच्चों के लिए परिवार ऐसा मंच होता है जहाँ वे स्नेह व सुरक्षा महसूस करते हैं। दादा-दादी के अनुभवों और परम्पराओं से भरी कहानियाँ माता-पिता का अनुशासन, देखभाल, और भाई-बहनों के साथ बिताया गया समय बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए मैंने यह महसूस किया है कि हर रिश्ता कितना खास होता है। दादा-दादी का प्यार और मार्गदर्शन हमें हमारे मूल्यों से जोड़ता है। जबकि चाचा-चाची व भाई-बहनों के साथ बिताया गया समय हमारे जीवन को खुशियों से भर देता है।

आज के समय में यह देखा जा रहा है कि परिवार छोटे होते जा रहे हैं। अधिकतर परिवारों में केवल माता-पिता और बच्चे रहते हैं। दादा-दादी या अन्य रिश्तेदारों से मिलने का मौका बहुत कम मिलता है। इस बदलाव का असर बच्चों पर साफ देखा जा सकता है। बच्चे अब परिवार के महत्व को समझ नहीं पाते हैं और रिश्तों को निभाने की जिम्मेदारी उनको बोझ लगने लगती है।

तकनीक ने भी बच्चों के जीवन को काफी हद तक बदल दिया है। वे मोबाइल, टीवी और वीडियो गेम में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनको घर के बड़ों से बात करने या उनके साथ समय बिताने का मौका ही नहीं मिलता। त्योहार और खास मौके जो पूरे परिवार के साथ मनाये जाते थे, अब महज औपचारिकता बनकर रह गए हैं। यह बदलाव सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए चिंता का विषय है। बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि परिवार ही उनकी असली ताकत है। परिवार के साथ समय बिताने से वे भावनात्मक रूप से मजबूत होते हैं और जीवन में सही-गलत का फर्क समझ पाते हैं। जब बच्चे परिवार के साथ जुड़े रहते हैं तो वे सम्मान, सहयोग और रिश्तों को निभाने की कला सीखते हैं।

संयुक्त परिवारों का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि बच्चे जिम्मेदारी और साझेदारी का महत्व समझते हैं। वे अपने से बड़ों का सम्मान करना और छोटे भाई-बहनों से प्यार करना सीखते हैं। ऐसे माहौल में बच्चे सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचते बल्कि दूसरों की भावनाओं का भी ख्याल रखते हैं। यही कारण है कि संयुक्त परिवार में पले-बढ़े बच्चे अक्सर ज्यादा संतुलित होते हैं। आज के समय में पारिवारिक रिश्तों को मजबूत बनाए रखना एक चुनौती जरूर है, लेकिन असम्भव नहीं है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के साथ समय बिताएं उन्हें रिश्तेदारों से मिलने का मौका दें, और परिवार की परंपराओं और पारिवारिक मूल्यों से जोड़ें।

बच्चों को यह एहसास कराना होगा कि परिवार केवल एक साथ रहने का नाम नहीं है, बल्कि यह प्यार, समर्थन और समझ का एक खूबसूरत रिश्ता है।

आने वाली पीढ़ी को रिश्तों का महत्व समझाना बहुत जरूरी है। अगर हम बच्चों को बचपन से ही परिवार की अहमियत सिखाएंगे, तो वे बड़े होकर बेहतर इंसान बनेंगे। परिवार का जुड़ाव केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि समाज को मजबूत बनाने के लिए भी जरूरी है। रिश्तों की गहराई को समझकर और उन्हें सहेजकर ही हम एक खुशहाल और सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।



इंटर ज़ोनल कैरम प्रतियोगिता 2024-25 में प्रतिभाग
करते हुये कर्मचारी गण

प्राचीन भारतीय साहित्य में पक्षियों का उल्लेख और उनका महत्व

पार्थसारथी चक्रवर्ती,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय पौराणिक साहित्य में पक्षियों का उल्लेख और उनका महत्व अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। पक्षी केवल प्रकृति का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे देवताओं के संदेशवाहक, दिव्य शक्ति के प्रतीक और मानव जीवन के गहरे अर्थों के वाहक भी हैं। विभिन्न भारतीय धर्मग्रंथों और नीति साहित्य में पक्षियों का विशेष उल्लेख किया गया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं, जिनमें पक्षियों को विशेष महत्व दिया गया है:

वैष्णव धर्म में पक्षियों का महत्व

वैष्णव धर्म में पक्षी भगवान विष्णु के दूत माने गए हैं। पवित्र ग्रंथ *भगवद्गीता* में पक्षियों का उल्लेख मुख्यतः प्रतीकात्मक रूप से हुआ है, जहाँ उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा और ईश्वर की महिमा की उपमा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं, “पक्षियों में मैं गरुड़ हूँ” (अध्याय 10), जो गरुड़ की शक्ति और समर्पण को दर्शाता है। अध्याय 2 में आत्मा की अमरता को समझाने के लिए पक्षियों के घोंसले छोड़ने की उपमा दी गई है। अध्याय 15 में अश्वत्थ वृक्ष की शाखाओं में पक्षियों के निवास को संसार के कर्मजगत का प्रतीक बताया गया है। ध्यान योग में पक्षियों के समान चंचल मन को स्थिर करने का महत्व समझाया गया है। गीता में पक्षियों की विशेषताएँ, जैसे स्वतंत्रता, नभचारी होना और शुद्धता, आध्यात्मिकता के गहरे पहलुओं को उजागर करती हैं।

हिंदू पुराणों में पक्षी : हिंदू पुराणों में अनेक पक्षियों का उल्लेख हुआ है, जैसे:

गरुड़ : यह भगवान विष्णु का रथचालक पक्षी है, जिसकी विशाल आकृति और शक्ति के कारण इसे अत्यधिक सम्मान दिया गया है। गरुड़ दिव्य शक्ति और साहस का प्रतीक है।

हंस : देवी सरस्वती और ब्रह्मा का वाहन माने जाने वाले हंस ज्ञान और शुद्धता के प्रतीक हैं। उनकी आकाश में उड़ने की क्षमता मुक्ति और आत्मसंयम का प्रतीक है।

उल्लू : यह लक्ष्मी देवी का वाहन है और इसे धन और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

कौआ : कौआ पितरों का संदेशवाहक और देवताओं तक संदेश पहुँचाने का माध्यम है। यह देवी काली और शनिदेव का वाहन भी है।

गिद्ध : गिद्ध का उल्लेख शनिदेव के वाहन के रूप में भी मिलता है।

भारतीय उपन्यास और काव्य में पक्षियों का उपयोग : भारतीय काव्य और उपन्यासों में पक्षियों का व्यापक रूपकात्मक उपयोग हुआ है। जैसे, *रामायण* और *महाभारत* में पक्षियों को विशेष महत्व दिया गया है। *रामायण* में सीता की खोज में हनुमान की आकाशीय यात्रा और जटायु की वीरता के माध्यम से पक्षियों की भूमिका प्रमुख हो जाती है। इसी प्रकार, *महाभारत* में भी अनेक कथाओं में पक्षियों का सहयोग आवश्यक होता है।

पक्षी और आध्यात्मिकता : भारतीय दर्शन में पक्षियों को आध्यात्मिक यात्रा के प्रतीक के रूप में देखा गया है। अनेक आध्यात्मिक ग्रंथों में पक्षियों के माध्यम से आत्मा की मुक्ति या परम सत्य की खोज को प्रतीकात्मक रूप

से प्रस्तुत किया गया है। पक्षी आकाश में उड़ सकते हैं, जैसे आत्मा मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ती है।

पक्षी और रूपक कथाएं : पक्षी भारतीय साहित्य में रूपक कथाओं के माध्यम से मानव चरित्र और मनोविज्ञान का विश्लेषण करते हैं। *पंचतंत्र* और *कृतिवास रामायण* में पक्षियों को चरित्र के विशेष पहलुओं को उजागर करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका में रखा गया है।

नृजातीय और सांस्कृतिक प्रभाव : भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पक्षियों और उनके प्रतीकात्मक महत्व में गहरी आस्था है। विशेष रूप से भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में पक्षियों को आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्य दिए जाते हैं। जैसे- बाज, गिद्ध, कबूतर और उल्लू को मानव जीवन के दैनिक हिस्से के रूप में पूजा और सम्मान दिया जाता है।

पक्षी और काव्य : भारतीय कविताओं में पक्षी विभिन्न प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। विशेष रूप से प्रेम, वियोग, आध्यात्मिकता, स्वतंत्रता और प्रकृति से संबंध स्थापित करने के लिए। *कबीर* और *तुलसीदास* जैसे कवियों ने पक्षियों और उनके जीवन के अनुभवों को गहरे अर्थों में प्रस्तुत किया है।

भारतीय पौराणिक साहित्य में पक्षियों का महत्व केवल एक जीव के रूप में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में अत्यंत गहरा है।

हिंदू धर्मग्रंथों के अतिरिक्त अन्य धर्मों में पक्षियों का उल्लेख : अन्य भारतीय धर्मग्रंथों, जैसे- बौद्ध, जैन और इस्लामिक साहित्य में भी पक्षियों का उल्लेख और उनका प्रतीकात्मक महत्व देखा जाता है।

बौद्ध धर्मग्रंथों में पक्षियों का उल्लेख: बौद्ध धर्म में पक्षियों को आध्यात्मिकता, ज्ञान और मुक्ति के प्रतीक के रूप में देखा गया है। *जातक कथाएँ* और अन्य बौद्ध साहित्य में पक्षियों की कथाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

हंस (राजहंस) : यह बौद्ध धर्म में ज्ञान का प्रतीक है। एक जातक कथा में कहा गया है कि गौतम बुद्ध ने अपने पूर्वजन्म में राजहंस के रूप में जन्म लिया था, जहाँ उन्होंने धैर्य, करुणा और त्याग का प्रसार किया।

गिद्ध (गृध्र) : बौद्ध धर्म में गिद्ध का उल्लेख विशेष रूप से *गृध्रकूट* पर्वत से जुड़ा है, जहाँ बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ दीं। गिद्ध यहाँ शुभ पर्यावरण का प्रतीक है।

मयूर (मोर) : बौद्ध धर्म में मोर सौंदर्य और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है। तिब्बती बौद्ध धर्म में मोर के पंख को शुभ माना जाता है।

जैन धर्मग्रंथों में पक्षियों का उल्लेख : जैन धर्म में अहिंसा और जीवों के प्रति करुणा का विशेष महत्व है। पक्षियों का उल्लेख यहाँ भी गहराई से मिलता है।

पक्षी और अहिंसा : जैन धर्म में पक्षी जीवन की सुंदरता और सभी जीवों के प्रति सम्मान का प्रतीक हैं।

मयूर : जैन धर्म में मोर को सुख और आनंद का प्रतीक माना गया है। यह जीवन के रंगीन पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

नंदीघोष जातक : इस कथा में एक पक्षी (राजहंस) एक हाथी के बच्चे की जान बचाकर त्याग और सेवा का उदाहरण देता है।

इस्लामिक साहित्य में पक्षियों का उल्लेख : इस्लामिक साहित्य में भी पक्षियों का उल्लेख मिलता है। विशेष रूप से सूफी दर्शन और कुरान की शिक्षाओं में पक्षियों का गहरा प्रतीकात्मक उपयोग किया गया है।

हुदहुद (हूपो पक्षी) : कुरान के सूरा नमल में हुदहुद पक्षी का उल्लेख है, जो पैगंबर सुलेमान का संदेशवाहक था। यह ज्ञान और ईमानदारी का प्रतीक है।

सूफी काव्य और रूपक : सूफी कविताओं में पक्षी आत्मा की मुक्ति और ईश्वर की खोज के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होते हैं। फारसी कवि फरीदुद्दीन अत्तार के प्रसिद्ध काव्य *मंतिक-उत-तैर* (The Conference of the Birds) में पक्षियों की सामूहिक यात्रा के माध्यम से ईश्वर की खोज की गहरी आध्यात्मिक शिक्षा दी गई है।

सिख धर्मग्रंथों में पक्षियों का उल्लेख : सिख धर्म में पक्षियों को आध्यात्मिक शक्ति और शिक्षा के प्रतीक के रूप में देखा गया है।

गुरु ग्रंथ साहिब : इसमें पक्षियों की उड़ान के माध्यम से आत्मा की मुक्ति और आध्यात्मिक यात्रा का उल्लेख किया गया है।

अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य में पक्षियों का उल्लेख : भारत के आदिकालीन साहित्य और लोकगाथाओं में पक्षियों का उल्लेख उनकी गहरी प्रतीकात्मकता के साथ मिलता है।

संगम साहित्य (तमिल) : संगम साहित्य में पक्षियों को प्रकृति की सुंदरता और प्रेम के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। इन कविताओं में कोयल, राजहंस और मोर का वर्णन मिलता है।

लोकगाथाएँ और गीत : भारत के विभिन्न क्षेत्रों की लोकगाथाओं और गीतों में भी पक्षियों की उल्लेखनीय भूमिका है। जैसे, बंगाल के पाला *गान* या *भवइया* गीतों में कोयल और शालिक पक्षी प्रेम और वियोग के प्रतीक के रूप में उभरते हैं।

निष्कर्ष : भारतीय विभिन्न धर्मग्रंथों में पक्षियों का उल्लेख केवल प्रकृति की उपमा के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को समझाने के एक माध्यम के रूप में हुआ है। प्रत्येक धर्म में पक्षियों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया है, और उनके माध्यम से मानव जीवन के गहरे पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया है।

हालांकि हम पक्षियों की प्रतिमाएँ तो बनाते हैं और उनकी पूजा भी करते हैं, लेकिन उन्हें बचाने के लिए कोई सामूहिक प्रयास नहीं करते बल्कि, उनके शिकार, निवास स्थानों का विनाश, प्रजनन के लिए अनुकूल पर्यावरण की कमी और भोजन की अनुपलब्धता के माध्यम से उन्हें लगातार नष्ट कर रहे हैं न जाने कितनी प्रजातियाँ हमेशा के लिए विलुप्त हो चुकी हैं और कितनी विलुप्त होने की कगार पर हैं। आइए, आज से ही हम सभी पक्षियों को बचाने का प्रयास करें। अन्यथा, एक दिन ऐसा आएगा जब खाद्य श्रृंखला टूट जाएगी और जैव विविधता नष्ट हो जाएगी। यदि ऐसा हुआ, तो मानवता भी सुरक्षित नहीं रहेगी, और वह दिन दूर नहीं है।



पुष्कर मेला

प्रधान चौधरी

एम.टी.एस.

राजस्थान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक राज्य है जो मुख्यतः अपने विस्तृत रेगिस्तान "थार का रेगिस्तान" के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य अपने विस्तृत क्षेत्रफल व सांस्कृतिक महत्व तथा लोक कलाओं के लिए भी मशहूर है। आज मैं आपको राजस्थान के ही एक विश्व प्रसिद्ध मेले के बारे में बताने जा रहा हूँ, जो राजस्थान की राजधानी जयपुर से करीब 3 घंटे की दूरी पर अजमेर में लगता है। उसको ऊँटों का मेला भी कहा जाता है। यह कार्तिक पूर्णिमा को लगता है। हजारों लोग इस मेले में आते हैं तथा पुष्कर झील से स्नान करके अरावली पर स्थित ब्रह्मा मन्दिर के दर्शन करके धन्य हो जाते हैं।

यह मेला भारत तथा दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। जयपुर से ट्रेन द्वारा पुष्कर जाना अपने आप में अद्वितीय अहसास है जो न केवल यात्रा के रोमांच को बढ़ाता है। साथ ही साथ राजस्थानी संस्कृति से भी आपको रुबरू होने का मौका मिलता है। रास्ते में कहीं-कहीं रेगिस्तानी धौरे भी सूरज की रोशनी में ऐसे प्रतीत होते हैं। मानो कोई सोना हो। दूर तक फैले हुए खेत तथा उनमें वृक्ष, नाना प्रकार के पशु यकायक ही आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

जयपुर से पुष्कर तक की ट्रेन यात्रा न केवल आरामदायक होती है बल्कि आप राजस्थान के लोक-संगीत, जनजीवन और विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों को महसूस कर सकते हैं। पुष्कर मेले का हिन्दुओं में अलग ही महत्व है। माना जाता है कि यहाँ स्थित पुष्कर झील की उत्पत्ति पुष्प और कर के मेल से हुई है, माना जाता है कि ईश्वरीय शक्ति द्वारा एक पुष्प पृथ्वी पर अपने हाथों से गिराया गया।

पुष्कर को तीर्थों का मुख माना जाता है। यहाँ ब्रह्मा जी के मंदिर के अलावा सावित्री, बदरीनारायण, वाराह मंदिर हैं जिनके दर्शन हेतु दूर-दूर से सैलानी आते हैं। पुष्कर मेले में कदम रखते ही मन में एक अजीब हलचल पैदा हो जाती है। वहाँ पर रेगिस्तान में पैर अंदर तक चले जाते हैं। रंग-बिरंगे ढेर, स्टॉल, दुकानें तथा पशुओं से सजा यह सांस्कृतिक उत्सव अव्यवस्थित किंतु बहुत खूबसूरत है। इतने ऊँट राजस्थान का होने के बाबजूद मैंने पहली बार देखे। यहाँ पर कई तरह के पशु जैसे घोड़ा, बकरी, भैंस, गधे इत्यादि भी व्यापार के लिए लाए जाते हैं। बड़े बुर्जुओं के अनुसार पहले शादी-ब्याह भी पुष्करजी के मेले में तय होते थे।

पशुओं के व्यापार के अलावा यहाँ आनंद लेने के और भी साधन मौजूद थे। वहाँ पर ऊँट सवारी का भी अपना अलग ही मजा है। आप रंग-बिरंगे परिधानों से सजे ऊँटों पर रेगिस्तान के खूबसूरत नज़ारे देख सकते हैं। यहाँ पर मंत्रमुग्ध कर देने वाली ऊँट दौड़ का भी आयोजन किया जाता है। वहीं पर हमारी नजर बहुत बड़े झूले पर गई जिससे आप पुष्कर के आस-पास का मनोरम दृश्य देख सकते हैं। वहीं थोड़ी दूर समतल भूमि से हॉट-एयर-बेलून भी उड़ाया जा रहा था जो अनायास ही विदेशी सैलानियों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहा था।

यह मेला मुख्यतः पशु व्यापार के लिए भारत में प्रसिद्ध है। भारत के विभिन्न राज्य के लोग अपनी पसंद का जानवर खरीदने तथा बेचने के लिए यहाँ आये हुए थे। यह प्राचीन परंपरा का हिस्सा है और उनके लिए आजीविका कमाने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। यहाँ रंग-बिरंगी पोशाक पहने हुए महिलायें, बुजुर्ग तथा बच्चे भी आकर्षण का केन्द्र होते हैं। कई अनपढ़ औरतें भी विदेशी सैलानियों के संपर्क में आकर अंग्रेजी बोलना सीख जाती हैं। यहाँ पर सबसे लंबी मूँछ प्रतियोगिता से लेकर मटका दौड़ प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है तथा सबसे सस्ते जानवर से लेकर महंगे जानवर तक आपको मिल जाएंगे।

पुष्कर मेले में आप खुद को खरीददारी करने से नहीं रोक पायेंगे। यहाँ मिलने वाली राजस्थानी पोशाकों हस्तशिल्पी लाख की चूड़ियां, और मन हरने वाले आभूषण आपको अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। यह मेला जादूगरी, संगीतकारी, नर्तकों, एथलीटों, गायक आदि कई कलाकारों का मिलन स्थल है। पुष्कर मेला आपको पुराने युग में वापस ले जाता है और आपको पुराने युग को जीने का सौभाग्य मिलता है। यहाँ शाम को सरोवर के घाट पर महा आरती का आयोजन किया जाता है। स्थानीय प्रशासन इस मेले की व्यवस्था करता है एवं कला संस्कृति तथा पर्यटन विभाग इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। पुष्कर सरोवर शाम की रोशनी में झिलमिलाता रहता है।

घाटों पर रंग-बिरंगी वस्तुओं तथा रोशनी को देखकर एक अलग ही खुशी मिलती है। लोग डेजर्ट बाइक का लुत्फ उठा रहे थे। पुष्कर मेले की भव्यता और सुंदरता बड़ी ही प्यारी होती है। सच में राजस्थान का पुष्कर मेला अब भी भारत की पुरानी संस्कृति और धरोहर को खुद में समेटे हुए है और उसे साथ लेकर चल रहा है। शाम की राजस्थानी खाने की महक चारों तरफ हवा में फैल रही थी। यहाँ का दाल-बाटी चूरमा देश भर में प्रसिद्ध है। हर व्यक्ति को जीवन में एक बार राजस्थान के पुष्कर मेले में भ्रमण करना चाहिए।



- ♦ हिंदी हमारी अपनी भाषा है, इसके साहित्य और ज्ञान को बढ़ावा देने की हमारी अपनी प्राथमिकता होनी चाहिए।
- ♦ आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपनी भाषा को न भूलें, क्योंकि भाषा ही हमारी पहचान होती है।
- ♦ दुनिया में जिस भी देश की भाषा और संस्कृति समृद्ध होती है, वही देश विकास के मार्ग को चुनकर प्रगति करता है।
- ♦ हिंदी भाषा ही हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने का काम करती है, हमें इसका सदा सम्मान करना चाहिए।

भारत की कला एवं संस्कृति

बिपाशा सरकार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत की कला एवं संस्कृति बहुत प्राचीन है। विश्व की कई संस्कृतियां उत्पन्न हुईं और समय के साथ नष्ट भी हो गईं पर भारतीय संस्कृति आज भी विद्यमान है। हर काल में हर क्षेत्र की कला एवं संस्कृति अलग होती है। वर्तमान में भी हम देखते हैं कि हर क्षेत्र की अलग पहचान होती है चाहे वह किसी भी रूप में हो वह बोली भी हो सकती है या वहाँ की कला से मिट्टी की बनी वस्तुएं हों या पत्थर काटकर मूर्ति, चित्रकारी उनके घर की बनावट किसी भी रूप में हो सकती है। वहाँ की पोशाक, गहने हर क्षेत्र का पहनावा अलग होता है। हर 15 किलोमीटर में यह कला एवं संस्कृति देखने को मिलती है। कहा जाता है कि हर क्षेत्र में यह परिवर्तन देखने को मिलता है।

अगर हम कला की बात करें तो कला हमारी कल्पनाओं को दिखाने का एक माध्यम है। कला मानवीय भावनाओं को दिखाने का एक माध्यम है। कला मानवीय भावनाओं को आसानी से दिखाता है वह मूर्ति, चित्रकारी, गाना, नृत्य कई रूपों में हो सकती है। यह इस कला के सहारे अपनी करुणा, खुशी, भय किसी भी भावना को दिखा सकता है। यही कला संस्कृति को आगे ले जाती है। यह एक वाहक के रूप में काम करती है। हम जब किसी खुदाई में कुछ पाते हैं तब उस खुदाई में जो सामान मिलता है उसके शोध से पता चलता है कि सामान किस समय का है। यह सामान किसी भी रूप में हो सकता है, चाहे वह बर्तन, गहने, सिक्के या कोई मूर्ति हो, तब हम जानते हैं कि यह किस काल का है तथा यह देखते हैं यह किस धातु से बना हुआ है इस से हम यह भी जानते हैं उस समय के लोग कौन सी धातु का उपयोग करते थे। जैसे मोहन जोदड़ो की खुदाई से हडप्पा संस्कृति के बारे में पता चलता है। उनके रहन सहन की पूरी जानकारी मिलती है।

तब लोग कैसे रहते थे? उनकी नाली, घर, पानी की व्यवस्था उनकी संस्कृति को दर्शाती हैं। उनकी अजंता एलोरा की गुफाओं की चित्रकारी तत्कालीन समय को उजागर करती हैं। भारत वर्ष में कई गुफाओं, मंदिर, सिक्के, बर्तन, गहने, चित्रकारी उस समय की विशेषता बताते हैं।

कला निरंतरता को बचाये रखती है। जैसे कोई पर्व अगर मना रहे हैं तो प्रतिवर्ष उसी पद्धति से मनाते हैं। ऐसा नहीं कि किसी वर्ष मनाएं और किसी वर्ष नहीं। ऐसा नहीं होता है। ऐसे ही हर एक क्षेत्र की बोली चित्रकारी, पहनावा, खानपान सब उस क्षेत्र की विशेषता होती है। हम भारत की विशेषता को इस तरह से भी समझ सकते हैं। प्राचीनता, निरंतरता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता और प्रतीकात्मकता।

संस्कृति से किसी देश, वर्ग, समुदाय के संस्कारों का बोध होता है। हर काल में इन के कुछ नियम तथा आदर्श होते हैं। पूरा समुदाय उसी के हिसाब से चलता है। उसकी परम्पराएँ, अवधारणाएँ आती हैं। भारत की संस्कृति का विकास भारत की भौगोलीय स्थिति के कारण हुआ है। यह उत्तर में हिमालय एवं तीन तरफ समुद्र से घिरा हुआ है। इसी कारण प्राचीन काल में भारतीयों का विदेशों से संपर्क सीमित रहा। इसलिए यहाँ एक विशिष्ट संस्कृति का विकास हुआ। भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुसार खान-पान, भाषा, रहन-सहन और जीवन पद्धति का विकास हुआ।

भारतीय संस्कृति में दार्शनिक विचारधाराएँ और विदेशी प्रभाव की भी झलक दिखती है। यहाँ सिंधु सभ्यता को भी देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति हजारों सालों के बाद भी अपने पुराने स्वरूप में है। भारत में अनेक विदेशी आक्रमण हुए, चाहे वह पुर्तगाली हो, या मुगल, या अंग्रेज, पर हमारी संस्कृति निरंतर बची हुई है। वर्तमान में हमारे समाज में पश्चिमी सभ्यता की झलक दिख रही है, फिर भी मूल रूप से हम अपनी सभ्यता को बनाए हुए हैं। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म तथा अध्यात्म की प्रधानता रही है। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के हर कर्म को धर्म से जोड़ा गया है। बच्चे के जन्म के कुछ महीनों बाद अन्नप्रासन हो या फिर कोई अन्य संस्कार, हर समाज की अपनी पूजा पद्धति होती है, चाहे वह जन्म के रूप में हो या किसी इंसान की मृत्यु होने पर उनका कर्मकांड हो। यह पुरानी व्यवस्था निरंतर चली आ रही है। भारतीय संस्कृति में अध्यात्म का विशेष महत्त्व होता है। इसमें इंसान को एक नियमावली में जोड़ा जाता है और समाज भी अपनी सुंदर संस्कृति को आगे ले जाता है। इसमें अभी भी हम देख सकते हैं कि ध्यान करना, योग करना, यह सब ऋषि-मुनियों की देन है जो वर्तमान में यह काफी प्रचलित है जो कि योग दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। इसका स्वास्थ्य पर बहुत असर देखने को मिलता है।

भारत में प्राचीन काल से ही चिंतन की स्वतंत्रता थी। इसलिए यहाँ अलग-अलग धर्मों, ग्रंथों संप्रदायों और दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ। जैसे जैन धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म इन धर्मों को भी हम देख सकते हैं। हम अपने इतिहास को जब टटोलते हैं तब कबीर, तुलसी, सूफी जैसे अनेक दार्शनिकों की छवि सामने प्रकट हो जाती है। इन सब की काव्य संरचना को अभी भी बोली जाती हैं। बड़े सम्मान के साथ यह सब काव्य समाज की विविधता को वर्णित करते हैं, जो आज भी पढ़े जाते हैं।

भारत देश की संस्कृति में विदेशी प्रभाव भी देखने को मिलता है। भारत के इतिहास को देखें तो हम देखते हैं कि अनेक विदेशी आक्रमणकारी लूटकर अपने साथ अनेक धन-संपदा को ले गये। इन आक्रमणकारियों के आने से भारत में इसका असर सांस्कृतिक प्रवाह पर भी दिखा। भारत को मुगल तथा अंग्रेज ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया। इसके कारण भारतीय कला, साहित्य, संगीत, भाषा, खान-पान, रहन-सहन आदि पर इसका प्रभाव पड़ा। अभी भी हम मुगल साम्राज्य के समय की बनी हुई इमारत जैसे लाल किला, ताजमहल आदि अनेक इमारतें वैसी ही खड़ी हुई हैं। उस समय

की इमारत में जालीदार नक्काशी हुआ करती थी। उनकी चित्रकारी को देखकर हम कह सकते हैं कि ये मुगल काल की है। संगीत में सूफी की झलक देख सकते हैं।

भारत की संस्कृति ने विदेशियों की संस्कृति को भी अपने में मिला लिया जिससे भारत की संस्कृति और समृद्ध हो गई। अनेक विदेशी भारत में व्यापार करने आते थे। वे अपने साथ अपनी संस्कृति को भी ले आये। उनका पहनावा, खान-पान, रहन-सहन बहुत कुछ भारतीयों ने अपने में समा लिया।

भारत की भौगोलिक संरचना और जलवायु की विविधता के बावजूद अनेकता में एकता है। यहाँ हर क्षेत्र की भाषा, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा अलग हो जाता है। फिर सब विविधता के बावजूद एकता है। यह सबसे बड़ी विशेषता है।



♦ “राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।”

- अवनींद्रकुमार विद्यालंकार।

♦ “हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है।”

- बाबूराम सक्सेना।

♦ “समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।”

- (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।

♦ “हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।”

- शंकरराव कप्पीकेरी।

मेरी अविस्मरणीय यात्रा

राकेश चन्द्र श्रीवास्तव,
सहायक लेखा अधिकारी

जनवरी 2018 में मुझे कोलकाता से जयपुर जाने का सुनहरा अवसर मिला। जयपुर, जिसे 'पिंक सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का जीवंत उदाहरण है। मेरी यात्रा का यह अनुभव न केवल यहाँ के ऐतिहासिक किलों, महलों और वास्तुकला से जुड़ा था, बल्कि मुझे यहाँ के भोजन, संस्कृति, लोगों की मेहमान नवाज़ी और उनकी जीवन-शैली को समझने का भी बेहतरीन मौका मिला। जयपुर ने मुझे अपनी ऐतिहासिक समृद्धि और जीवंत संस्कृति से मंत्रमुग्ध कर दिया और ये यात्रा मेरे जीवन का अविस्मरणीय अनुभव बन गई।

हमारी कोलकाता से जयपुर की हवाई यात्रा शुरू हुई। उड़ान के दौरान आसमान से नीचे राजस्थान की रेगिस्तानी भूमि और वहाँ के रंग बिरंगे दृश्य दिखाई दे रहे थे। जयपुर पहुँचने पर हमें सबसे पहले यहाँ का ठंडा मौसम और सूरज की हल्की किरणों ने बहुत आकर्षित किया। जनवरी का महीना होने के कारण जयपुर का मौसम बेहद सुखद था, न तो अधिक गर्मी थी और न ही बहुत ज्यादा ठंड। जयपुर हवाई अड्डे पर उतरते ही मुझे यहाँ की खूबसूरती का एहसास हुआ।

हमने अपनी यात्रा की शुरुआत "आमेर का किला" से की। यह किला जयपुर से लगभग 11 किलोमीटर दूर स्थित है और जयपुर के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। आमेर किला जो कि भारतीय वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण है शाही महलों और किलों का संगम है। किले के अंदर घुसते ही विशाल दीवारें, आलीशान कमरे और शाही आँगन हमारा स्वागत करते हैं। किले के भीतर हर कोने में एक शाही इतिहास बसा हुआ है। किले

की दीवारों पर आकर्षक चित्रकारी, रंगीन काँच की खिड़कियां और बारीक नक्काशी ने इसे और भी भव्य बना दिया था। यहाँ की सुंदरता को देखते हुए हमें यह समझ में आया कि यह किला एक समय पर राजस्थान के शाही परिवार का घर था। किले के ऊपरी हिस्से से जयपुर शहर का दृश्य बहुत ही सुन्दर था। यहाँ से पूरा शहर दूर-दूर तक फैला हुआ दिखता है।

इसके बाद हम 'नाहरगढ़ किला' गए जोकि जयपुर के अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित है। नाहरगढ़ किला अपनी किलेबंदी और शाही स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से पूरे शहर का दृश्य अलौकिक था और हमने यहाँ कुछ समय रुककर इस दृश्य का आनंद लिया। नाहरगढ़ किले के भीतर एक छोटा सा कैफे भी था, जहाँ हमने चाय पी और शहर के विभिन्न दृश्यों का आनंद लिया। यह किला एक समय पर जयपुर की रक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण और किले की भव्यता बहुत ही आकर्षक थी।

इसके बाद हम 'हवा महल' गए जो कि जयपुर का सबसे प्रसिद्ध और यादगार स्मारक है। हवा महल का निर्माण राजा सवाई प्रतापसिंह ने किया था और इसकी बनावट खासतौर पर महिलाओं के लिए तैयार की गई थी, ताकि वे बिना रुकावट के सड़कों और बाजारों के दृश्यों का अनुभव कर सकें। महल की वास्तुकला अद्वितीय और आकर्षक थी, इसके झरोखों से बाहर का दृश्य अत्यंत सुंदर नज़र आ रहा था और पूरा महल पाँच मंजिलों में बना हुआ था। हवा महल की हल्की रंगीन दीवारों और खूबसूरत जालियों की कारीगरी ने इसे और भी भव्य बना दिया था। यहाँ के ऐतिहासिक वातावरण को निहारते हुये इस स्थल पर पहुँचकर मुझे राजस्थान के शाही ठाठ-बाट का अहसास हुआ।

हमारी अगली यात्रा 'जल महल' की थी, जोकि मुख्य सागर झील के बीच स्थित है। यह महल जल-मग्न सा प्रतीत होता है और इसका दृश्य

शांतिपूर्ण और अद्भुत था। जल महल की सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। जल महल के आसपास के क्षेत्र में हमने बोट राइड का भी आनंद लिया, जो एक अद्भुत अनुभव था। यहाँ का शांत वातावरण और जलमग्न महल हमें एक अलग सी दुनिया में ले गये।

हमारी यात्रा में अगला प्रमुख स्थल था जंतर-मंतर, जो एक खगोल-शास्त्र विषयी 'वेधशाला' — 'observatory' — है। यह जंतर-मंतर एक ऐतिहासिक धरोहर है और भारतीय खगोल-शास्त्र का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करता है। मैंने यहाँ के विशाल यांत्रिक उपकरणों को देखा जो पुराने समय में समय के मापक के तौर पर इस्तेमाल किये जाते थे और खगोलीय गणनाओं के लिए प्रयोग किये जाते थे। जंतर-मंतर में विभिन्न खगोलीय यंत्र, जैसे कि सम्राट यंत्र, 'जिओनोमीटर' और अन्य यांत्रिक उपकरणों को देखना एक अनोखा ही अनुभव था। इस स्थल ने मुझे भारतीय प्राचीन विज्ञान और गणित के बारे में नई जानकारी दी और मुझे भारतीय खगोलशास्त्र के बारे में गहरी जानकारी मिली।

जयपुर में हमारे अनुभव का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा था- राजस्थानी भोजन। राजस्थान का खाना बहुत ही स्वादिष्ट और मसालेदार होता है। यहाँ हमने सबसे पहले दाल-बाटी, चूरमा का स्वाद लिया, जो राजस्थान का प्रमुख व्यंजन है। दाल-बाटी चूरमा का स्वाद बहुत ही लाजवाब था, जिसमें मसालेदार दाल-बाटी, रोटियाँ और मीठा चूरमा शामिल था।

इसके अलावा, गट्टे की सब्जी और राजस्थानी थाली का स्वाद भी बहुत ही शानदार था। राजस्थानी भोजन का हर एक व्यंजन अपने आप में विशेष था और इसका स्वाद पूरी तरह से राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति को दर्शाता है। इसके अलावा, हमने जयपुर के बाज़ारों में गुलाब जामुन, कचौरी और कुल्फी का स्वाद भी लिया जो बहुत ही लजीज था।

जयपुर का माहौल एकदम अलग था। यहाँ की संस्कृति, लोग और उनके परिधान सब कुछ राजस्थानी रंगों में रंगे हुए थे। यहाँ के लोग बहुत ही मेहमान नवाज़ हैं और उनके आतिथ्य का कोई जोड़ नहीं है।

जयपुर की सड़कों पर घूमते हुए हमें वहाँ की संस्कृति और जीवन शैली को समझने का बहुत अच्छा अवसर मिला। बाजारों में राजस्थानी कपड़े, गहनों और हस्तशिल्प की वस्तुओं से सजी हुई दुकानों ने हमारी खरीदारी का शौक और बढ़ा दिया। राजस्थान के पारंपरिक अलंकार, चूड़ियाँ और लकड़ी के बर्तन हम घर लेकर आए, जयपुर की सड़कों पर घूमते हुए मुझे यहाँ के संगीत, नृत्य और लोक कला का अनुभव भी हुआ। शहर के कुछ हिस्सों में लोक नृत्य और संगीत की प्रस्तुति होती रहती है, जोकि राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखती है।

हम कुछ समय के लिए इस कार्यक्रम का हिस्सा बने और इस अनुभव ने मेरी यात्रा को और भी स्मरणीय बना दिया। इस यात्रा ने मुझे राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक महत्त्व को महसूस करने का अवसर दिया।

जयपुर की अद्भुत वास्तुकला, स्वादिष्ट भोजन और रंगीन बाजारों की जो छवि मेरी यादों में बसी है, वह आज भी ताज़गी से भरपूर है। इस यात्रा ने न केवल मेरी संस्कृति की समझ को बढ़ाया, बल्कि मुझे राजस्थानी जीवनशैली और उनके चिरस्मरणीय आतिथ्य को भी महसूस करने का मौका मिला। जयपुर की यह यात्रा मेरे जीवन के अविस्मरणीय अनुभवों में से एक है।



ऑनलाइन शिक्षा पद्धति

राजीव कुमार-।

लेखाकार

कुछ समय पहले मानव की तीन आवश्यकताएं थीं- रोटी, कपड़ा तथा मकान। परंतु वर्तमान समय में शिक्षा भी मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में शामिल हो गयी है। क्योंकि, शिक्षा के बिना मानव भी एक पशु की ही भाँति होता है। एक समाज के विकास के लिए शिक्षा एक अत्यंत आवश्यक पहलू है। एक शिक्षित मानव ही एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है।

जिस प्रकार परिवर्तन संसार का एक शाश्वत नियम है, उसी प्रकार समाज की प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। शिक्षा भी आज अपने परिवर्तन के अध्ययन में लपेटे हुए नए-नए रूप लेती रही है। आज के वर्तमान समय में शिक्षा के नवीन स्वरूप- 'ऑनलाईन शिक्षा' को अपनाया जा रहा है।

शिक्षा के तीन परम्परागत रूप, यथा स्कूल एवं कॉलेज जाकर शिक्षा प्राप्त करना, किसी संस्था से पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना तथा कॉलेज या किसी संस्था जाए बिना निजी रूप से पाठ्यक्रम सम्पन्न करना। इस कड़ी में अब एक और रास्ता खुल गया है, जोकि है ऑनलाइन शिक्षा। यानी इन तीनों पद्धतियों को समाहित करते हुए टेक्नोलॉजी से सुसज्जित शिक्षा। इस शिक्षा से आशय है इंटरनेट के ज़रिए कंप्यूटरी ज्ञान की तमाम चीजों से लैस शिक्षा। विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से मल्टी-मीडिया से समृद्ध पाठों को न केवल पढ़कर, बल्कि दिशापरक ऑनलाइन परामर्श प्राप्त कर, सतत रूप में ज्ञान अर्जित करने में सक्षम होते हैं।

शिक्षा की इस अवधारणा में सोशल मीडिया के दस्तक देने पर शिक्षा की विकास-यात्रा को जहाँ एक ओर अनेक नवीन आयाम व मददगारियाँ

मिली हैं, तो वहीं दूसरी ओर कुछ हानिप्रद पहलू भी उभर कर आए हैं, जिन पर विचार करना सामयिक व अन्य दृष्टिकोण से आवश्यक है।

शिक्षा के इस बदलते स्वरूप के चलते अब कोई भी एकलव्य बन सकता है। शिक्षा की इस वर्चुअल दुनिया में बड़ी आसानी से पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री को प्राप्त किया जा सकता है। हर आयु एवं हर वर्ग के विद्यार्थी को त्वरित प्रतिक्रिया के साथ तत्काल ही परिणाम प्राप्त होता है। इंटरनेट के व्यापक विस्तार के चलते अब शिक्षा में भी मानो सब कुछ तुरंत हो रहा है। इस पद्धति में आज सवाल हैं, सवालों के हल हैं, संवाद है, वाद-विवाद है, सूचना है, ज्ञान-विज्ञान है, सलाह है, खुलापन है और लचीलापन भी है; जो सब अपेक्षित समय तथा अपेक्षित स्थान पर मिलता है।

आज ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में भी यदि लगन के साथ प्रयास किया जाए, तो कोई भी विद्यार्थी किसी भी विषय में महारत हासिल कर सकता है और ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है जिसकी संभावनाओं का कहीं कोई तोड़ नहीं है। आज कई ऐसे उदाहरण हैं, जिसमें इस पद्धति ने अपनी उपयोगिता साबित की है। समयानुरूप, सोशल नेटवर्किंग पोर्टल जैसे कि ऑरकुट, फेसबुक, ट्विटर और यू-ट्यूब, आदि ऐसी अनेक वेबसाइट्स हैं जिनका उपयोग किया जा रहा है। समय के परिवर्तन के साथ शिक्षा प्राप्ति के भी नए-नए प्लेटफॉर्म आते रहेंगे, जो शिक्षा के विकास को सामयिक गति प्रदान करेंगे।

शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन तथा विविध क्षेत्रों की गहरी समझ पैदा करना है तथा उसमें प्रवीणता लाना है। इसमें निस्संदेह रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट्स लाभकारी रहे हैं। क्योंकि इससे ज्ञानार्जन, स्व-संतोष, स्व-विकास, स्व-चेतना एवं आनंद प्राप्ति जैसे सभी लक्ष्यों को पूरा किया जा सकता है। ऑनलाइन शिक्षा की साइट्स अपने पाठकों को अनेक बिंदुओं पर एक-दूसरे से जोड़ने में मदद करती हैं। शिक्षा की इस नई पद्धति ने विद्यार्थियों के लिए उच्चस्तरीय सहभागिता सुनिश्चित की है जो कि

उनके सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक है। इस माध्यम से शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावकों द्वारा अपने-अपने संघ बनाकर समस्याओं एवं उनके निदान पर भी विचार किये जा सकते हैं।

जहाँ ऑनलाइन शिक्षा पद्धति की अनेक उपयोगिताएं हैं तो वहीं दूसरी ओर इससे उत्पन्न खतरों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षा के विषय में भी इसे आँखें बंद करते हुए नहीं अपनाया जा सकता है। ज्ञान व सूचनाओं को तोड़-मरोड़कर पेश करना, असम्पादित अध्ययन सामग्रियों की प्रचुरता का खतरा, अनेक शारीरिक व मानसिक रोगों का खतरा, आदि जैसे अनेक खतरों से हमें सावधान रहना चाहिए। इन साइट्स पर ध्यान भटकाने वाली सामग्रियों की भीड़ है, जिससे विद्यार्थियों पर अवांछित व बुरा प्रभाव पड़ सकता है और वे अपने मूल लक्ष्यों से भटक सकते हैं। इंटरनेट का दीर्घकालीन एवं सतत प्रयोग जहाँ एक ओर तथ्यों की पहचान के संबंध में अन्वेषण करता है तो वहीं दूसरी ओर यह ध्यान केंद्रित करने और सोचने की बौद्धिक क्षमताओं को भी क्षीण कर देता है। हाल के कुछ दिनों में अनेक विद्यार्थियों द्वारा कुछ साइट्स के शर्मसार व आपत्तिजनक प्रयोगों के मामले हम सबके सामने प्रत्यक्ष होते रहते हैं जोकि सामाजिक दृष्टिकोण से एक चिंताजनक विषय है।

यदि हम थोड़ा और आगे बढ़ें और विश्लेषण करें तो नजर आता है कि शिक्षा में ऑनलाइन माध्यम को सम्मिलित करने के प्रश्न पर हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता तथा हितधारियों की मांग के चलते इसके समर्थकों की प्रबलता अधिक है। इसकी उपयोगिता को नकारा भी नहीं जा सकता है। अतः शिक्षा प्राप्ति के एक संसाधन के रूप में इसे इस्तेमाल किया जाए तो अच्छा है। शिक्षा में इसके प्रयोग के हानिप्रद पहलुओं के प्रति न केवल सतत सचेत रहना होगा, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में इसके नए व रचनात्मक पहलुओं को पुरजोर दिशा प्रदान कर अनेकानेक लाभ भी लेने होंगे।

शिक्षा की इस पद्धति के माध्यम से वैश्विक पहुँच, अपेक्षा पर खरा उतरने और कम लागत पर शिक्षा की जो संभावनाएँ निहित हैं, उन्हें यदि शिक्षण और प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जाए तो इसमें बुराई क्या है? वैसे भी देखा जाए तो नेटवर्किंग एक प्रकार से सम्प्रेषण का साधन है, यदि उसका कोई बुरा व विध्वंसात्मक प्रयोग करता है तो इसमें वो साधन दोषी नहीं बल्कि 'प्रयोग कौशल' तथा 'प्रयोगकर्ता' दोषी हैं।

अतएव, ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के प्रयोग-प्रबंधन द्वारा शिक्षा की विकास यात्रा को असीम ऊँचाइयाँ प्रदान की जा सकती हैं। शर्त केवल यह है कि इसे शिक्षा के क्षेत्र में एक चुनौती के समरूप मानकर, उसके हितकारी प्रयोग की असीम संभावनाओं की शोधन प्रक्रिया को जारी रखा जाए।

“ऑनलाइन शिक्षा की यह पद्धति
लायेगा सारे समाज की उन्नति।।”



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में उपस्थित गणमान्य

मेरा मित्र: लियो

राहुल कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

यह बात उस समय की है जब मैं उच्चतर माध्यमिक में अध्ययन करता था। आम दिनों की भांति मैं अपनी दुकान जो एक मनिहारी की दुकान थी वहीं बैठकर दुकानदारी कर रहा था। मेरी दुकान शहर के मध्य कोतवाली थाना के समीप थी। ये मुंगेर के प्रसिद्ध बड़ा किला, जिसे मीरकासिम ने बनवाया था, के ही नजदीक है।

ठंड के दिनों में अनेक विदेशी पर्यटक मुंगेर आते हैं, विशेषकर मुंगेर के 'योगाश्रम' योगपीठ विश्व का पहला योग विश्वविद्यालय है। इसके मठाधीश स्वयं पद्मविभूषण सम्मानित श्री श्री 108 स्वामी निरंजनानंद सरस्वती है। इसी क्रम में फ्रांस का एक युवक लियो हमारे शहर में आता है। वह शाम के समय बाजार में टहल रहा था। तभी वह हमारे जैसे फुटपाथ दुकानदारों की अपने कैमरे से तस्वीरें निकाल रहा था। इसी क्रम में मैंने उससे पूछा कि, "व्हाट आर यू डूइंग?"

तो उसने बोला "नथिंग जस्ट क्लिकिंग द कैंडिड पिक्चर। फिर बातें आगे बढ़ीं और हम दोनों के मध्य बहुत बातें होने लगीं। जैसे उसने मुझसे पूछा कि क्या तुम स्कूल में पढ़ते हो, आदि। तभी मैंने उसे अपने शहर मुंगेर का दर्शन कराने का निमंत्रण दिया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया और अगले दिन सुबह मिलने की बात हुई। अगले दिन सुबह-सुबह हम दोनों मिले और यात्रा के क्रम में अनेक बातें हुईं। मैंने उससे पूछा कि तुम क्या करते हो तो उसने कहा मैं एक विद्यार्थी हूँ और विश्वविद्यालय में पढ़ता हूँ और उसी विश्वविद्यालय की ओर से मैं घूम रहा हूँ। अपनी भारत देश की यात्रा के पश्चात्, वह चीन और जापान की भी यात्रा करने वाला था। तभी मुझे ये जिज्ञासा हुई कि ऐसे विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले व्यक्ति के पिता क्या

करते होंगे और झट से मैंने उसके पिता का व्यापार पूछ लिया। इस प्रश्न के उत्तर ने तो मुझे चकित ही कर दिया। उसने कहा कि मेरे पिताजी पेरिस के समीप एक किसान हैं, जो खेती-बाड़ी करते हैं। फिर मैंने पूछा कि तुम कितने भाई-बहन हो? तो उसने कहा तीन भाई और एक बहन। इतना बड़ा परिवार होकर भी उसके पिता अपने पुत्र को विश्व भ्रमण पर भेज रहे थे। वाह! क्या बात है। इससे पता चलता है कि एक विकसित देश का किसान कितना समृद्ध होता है।

यात्रा आगे बढ़ती गई और हमारी बातें भी आगे बढ़ने लगीं। जैसे-

मैं: तुम लोग योगाश्रम में क्या करते हो।

लियो: वहाँ हम योगाभ्यास करते हैं तथा मंत्रों का उच्चारण करते हैं।

मैं: क्या तुम्हें कोई मंत्र कंठस्थ है?

लियो: हाँ, गायत्री मंत्र याद है, क्या मैं तुम्हें सुनाऊं?

मैं: हाँ बिलकुल।

लियो: (अपने आप हिंदी में आराम-आराम से विदेशी एक्सेंट में बोलते हुए) ओम भूर्भुवः स्वः

फिर उसने महामृत्युंजय मंत्र भी सुनाया था।

इसी क्रम में हमें भूख लगी थी तभी उसने कहा कि चलो, कुछ खरीद कर खाते हैं। उस समय मुंगेर में सिंगापुरी केला काफी बिक्री में था। तो मैंने उससे पूछा कि इसे कैसे खरीदोगे, तभी उसने अंग्रेजी में ही बोला था कि काफी साधारण है। मैं उसे 10 रुपये का नोट दूंगा और वह उसे पर्याप्त मात्रा में केले दे देगा। और ऐसा ही हुआ। उसने कहा कि बाजार करने की शिक्षा उसे योगाश्रम से मिली हुई है।

अब हम दोनों मुंगेर के कुछ दर्शनीय स्थल घूमने निकल चुके थे इसी क्रम में पहला स्थान सीताकुण्ड था। यह रामायण काल से जुड़ा हुआ है

जहाँ माता सीता जी की ऋषि मुद्रल द्वारा अग्निपरीक्षा ली गई थी। यह कुण्ड साल भर केवल माघ मास को छोड़कर सदैव उबलता रहता है। वहीं इससे सटे अन्य कुंड जैसे राम कुण्ड, लक्ष्मण कुण्ड तथा शत्रुघ्न कुण्ड साल भर ठंडे रहते हैं। जो इसे अद्भुत बनाता है। कई वैज्ञानिकों ने इस पर शोध किया फिर भी वे इस पर कुछ खास टिप्पणी नहीं कर पाए। यह स्थान शहर से दूर था। फिर भी लियो हम पर विश्वास करके यह स्थान घूमने चला गया था। शायद उसे मुझ पर विश्वास हो गया था। वहाँ से पूजा पाठ करके हम लोग मछली तालाब, निर्दोष काली मंदिर, पीर पहाड़ तथा अन्य स्थल भी घूमे थे।

फिर मैंने उसे शहर से दूर स्थल घूमने का भी निमंत्रण दिया था जैसे ऋषि कुण्ड जहाँ ठंड में गर्म पानी पहाड़ों से निकलता है यह कुंड इतना बड़ा है कि बिहार का प्रसिद्ध राजगीर के कुंडों से भी इसके सामने छोटा प्रतीत होता है किंतु मुंगेर में अब उसका अगली यात्रा पर जाने का समय हो गया था। उसका जहाज गंगा नदी में बबुआ घाट पर लगा था, वह वहाँ से निकलने वाला था। इसलिए हम लोग ये यात्रा उसके साथ नहीं कर पाए थे। किंतु एक विदेशी मित्र बनकर हम दोनों काफी खुश थे। और मैं उसे छोड़ने भी गया था। इस तरह मेरा मित्र आगे की यात्रा में निकल पड़ा।



- ♦ संस्कृत को छोड़कर आज भी किसी भी भारतीय भाषा का वाङ्मय विस्तार या मौलिकता में हिन्दी के आगे नहीं जाता।”

- डॉ. सम्पूर्णानन्द।

- ♦ हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

- विलियम केरी

मेघालय यात्रा का अनुभव

रोहित कुमार
लिपिक

मेघालय अर्थात् बादलों का घर, भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक राज्य है। अक्सर सुनता था कि मेघालय बहुत ही सुन्दर और ठन्डी जगह है परन्तु कभी वहाँ जाना नहीं हुआ। किन्तु पिछले वर्ष अचानक ही मन हुआ कि मेघालय घूमने जाना है। मैंने अपने मम्मी-पापा से विचार विमर्श किया और वे लोग भी जाने को तैयार हो गए। हमने टिकट काटी और आ गए मेघालय।

मेघालय की राजधानी शिलांग है जो कि असम में स्थित गुवाहाटी से लगभग 100 कि.मी. की दूरी पर है। शिलांग जाने के लिए आपको गुवाहाटी आना पड़ेगा और गुवाहाटी आप रेलमार्ग अथवा हवाई जहाज से पहुँच सकते हैं। गुवाहाटी रेलवे स्टेशन और गुवाहाटी हवाई अड्डे से हम सीधे शिलांग के लिए गाड़ी ले सकते हैं। हम लोगों ने रेल टिकट की थी इसलिए गुवाहाटी रेलवे स्टेशन उतर कर गाड़ी ली और आ गए शिलांग।

शिलांग पहुँच कर हम होटल में रूके जो कि हमने पहले से ही बुक किया हुआ था। हमने थोड़ा आराम किया और फिर शिलांग में स्थित पुलिस बाजार की ओर घूमने चले गए। बाजार बहुत ही आकर्षक है। वहाँ स्थानीय सामान भी उपलब्ध था और वह भी उचित दरों पर। पास में ही “वार्डस लेक” स्थित है जहाँ चैरी ब्लॉसम के पेड़ स्थित है। जब उस पेड़ पर फूल आते हैं तो बहुत ही मनमोहक लगते हैं। और उसी के उपलक्ष्य में मेघालय में चैरी ब्लॉसम उत्सव बहुत ही धूम-धाम से मनाया जाता है। अगर आप इस उत्सव का आनन्द लेना चाहते हैं तो आपको नवम्बर में वहाँ जाना चाहिए। आस-पास की जगह घूमने के बाद हम वापस आ गए और आगे की यात्रा के लिए हमने गाड़ी बुक की जो कि हमें चेरापूँजी ले जाने वाली थी।

अगली सुबह हम चेरापूँजी के लिए निकल गए। रास्ते में सबसे पहले हमने एलीफेंट फॉलस देखा। यहाँ पर झरना तीन चरणों में बँटा है जिसके लिए आपको सीढ़ियों से नीचे जाना पड़ता है जो कि बहुत ही सुन्दर लगता है। उसके बाद रास्ते में हमने दो व्यू पॉइन्ट देखे जहाँ से वादियों का अनोखा नज़ारा दिखाई दे रहा था। आगे वहाँ "काबा फॉल्स" पड़ा जिसे देखने के लिए सीढ़ियों से नीचे जाना पड़ता है। नीचे जाने पर आपको बहुत सुन्दर नज़ारे देखने को मिलेंगे। आगे "गार्डन ऑफ़ केव्स" पड़ता है जहाँ आप एक ही जगह दस अलग-अलग नज़ारों का आनन्द ले सकते हैं जैसे कि छोटी-छोटी गुफाएँ, झरने, बाँस का बना पुल आदि। उसके बाद देखने को मिलेगा इको पार्क जिसमें बच्चों के लिए झूले आदि लगे हैं जिसका बच्चे खूब आनन्द लेते हैं। उसी पार्क से होकर एक पानी की धारा बहती है जो जब नीचे गिरती है तो अलग-अलग धाराओं में बँट जाती है और उसी से बनता है "सेवन सिस्टर्स फॉल्स" जो कि सामने से जाकर देखने में बहुत सुन्दर लगता है। आगे आपको मिलेगी "मावसमाई-गुफा" जो कि 150 मीटर लम्बी है और बहुत ही रोमांचक है। ये सभी पर्यटन स्थल चेरापूँजी में स्थित है जो कि एक ही दिन में देखे जा सकते हैं। हम चेरापूँजी घूमने के बाद वापस शिलांग आ गए और अगले दिन जयन्तिया हिल्स गए।

जयन्तिया हिल्स में "उम्न्गोट नदी" जिसे "डॉकी नदी" भी कहते हैं, बहती है जो कि एशिया की सबसे साफ नदी के नाम से प्रसिद्ध है। यह नदी इतनी साफ है कि ऊपर से देखने पर इसकी सतह और सतह पर पड़े पत्थर साफ दिखाई देते हैं। यहाँ पर पर्यटक नाव में बैठकर इस नज़ारे का लुत्फ उठाते हैं और सैर करते हैं। उसके बाद हम "मौलिन्नॉंग गाँव" गए जो कि एशिया का सबसे साफ गाँव कहा जाता है। इसका श्रेय जाता है वहाँ के लोगों को जो रोज सुबह होते ही सफाई में लग जाते हैं जो कि इसकी विशेषता है। पास ही में पेड़ की जड़ों से बना रूट ब्रिज है जो नदी के दोनों तरफ के वृक्षों की जड़ों को जोड़ने से बना है। यह एक प्राकृतिक पुल है

जो प्रकृति की सुन्दरता को दर्शाता है। इसके बाद हमने दो झरनों और देखे जो हैं “क्रांग सूरी” और “फे फे फॉल्स” । दोनों ही झरनों का हरा और नीला पानी देखने में बड़ा ही सुन्दर लगता है और उसकी शीतलता एक अलग ही अनुभव कराती है।

उसके बाद हम वापस शिलांग आ गए और अगले दिन “लेट्लम कैनयन” देखने गए जो कि शिलांग से 25 कि.मी. दूरी पर है। यहाँ जाने पर बहुत सुन्दर नज़ारा देखने को मिलता है। लौटते समय हमने “शिलांग पीक” भी देखी जहाँ से शिलांग शहर दिखाई पड़ता है। उसके बाद हम लोग वापस आए और अगले दिन सुबह गुवाहाटी के लिए निकल गए और रेलगाड़ी से वापस घर लौट आए परन्तु इस यात्रा के अनुभव ने हमारे दिल पर एक अलग छाप छोड़ी। मैं तो सभी पाठकों से यही अनुरोध करूँगा कि एक बार मेघालय की यात्रा अवश्य करें और मेरा विश्वास है कि आपको एक अद्भुत अनुभव होगा।



ऑडिट सप्ताह एवं ऑडिट दिवस के दौरान प्रतिभागियों के बीच
वितरित किए गए पुरस्कार

मनरेगा के ऑडिट के दौरान कुछ अविस्मरणीय यादें।

रोहित कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) भारत सरकार द्वारा 2005 में ग्रामीण भारत में बेरोज़गारी और गरीबी के खिलाफ एक सशक्त कदम के रूप में लागू किया गया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले गरीबों को रोजगार प्रदान करना और उनके जीवन स्तर में सुधार लाना है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 या मनरेगा, जिसे पहले राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम या नरेगा के नाम से जाना जाता था, एक भारतीय सामाजिक कल्याण उपाय है जिसका उद्देश्य 'काम करने के अधिकार' की गारंटी देना है। इसका उद्देश्य प्रत्येक भारतीय ग्रामीण परिवार के कम से कम एक सदस्य को एक वित्तीय वर्ष में कम से कम 100 दिनों का सुनिश्चित और गारंटीकृत मजदूरी रोजगार प्रदान करके ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सुरक्षा बढ़ाना है, जिनके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक काम करने के लिए स्वेच्छा से काम करते हैं। महिलाओं को मनरेगा के तहत उपलब्ध कराई जाने वाली नौकरियों में से एक तिहाई की गारंटी दी जाती है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि कम से कम 50% हो। मनरेगा का एक अन्य उद्देश्य टिकाऊ संपत्ति (जैसे सड़क, नहर, तालाब और कुएं) बनाना है। आवेदक के निवास के 5 किमी के भीतर रोजगार प्रदान किया जाना है, और कानून के तहत न्यूनतम कानूनी मजदूरी का भुगतान किया जाना है। यदि आवेदन करने के 15 दिनों के भीतर काम उपलब्ध नहीं कराया जाता है, तो आवेदक बेरोज़गारी भत्ते के हकदार हैं।

यानी अगर सरकार रोजगार देने में विफल रहती है तो उसे उन लोगों को कुछ बेरोजगारी भत्ता देना होगा। इस प्रकार, मनरेगा के तहत रोजगार एक कानूनी अधिकार है। आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने और ग्रामीण संपत्ति बनाने के अलावा, नरेगा को बढ़ावा देने के लिए अन्य बातें यह कही गई हैं कि यह पर्यावरण की रक्षा करने, ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने, ग्रामीण-शहरी प्रवास को कम करने और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

यह अधिनियम ग्रामीण लोगों की क्रय शक्ति में सुधार लाने, मुख्य रूप से ग्रामीण भारत में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों को अर्ध या अकुशल कार्य प्रदान करने के उद्देश्य से पेश किया गया था। यह देश में अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम करने का प्रयास करता है।

लेखापरीक्षा की प्रक्रिया : भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक समय-समय पर मनरेगा की समीक्षा करते हैं, जो कि प्रायः 5 साल के अंतराल पर की जाती है। इस समीक्षा को "परफॉर्मेंस ऑडिट" के नाम से जाना जाता है। कार्य निष्पादन ऑडिट (Performance Audit) एक प्रकार का आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन है, जिसका उद्देश्य किसी सरकारी योजना, कार्यक्रम, या परियोजना के उद्देश्य, क्रियान्वयन और परिणामों की प्रभावशीलता, दक्षता और अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन करना होता है।

यह ऑडिट पारंपरिक वित्तीय ऑडिट से अलग होता है, क्योंकि यह केवल वित्तीय लेन-देन की समीक्षा नहीं करता, बल्कि यह भी देखता है कि दिए गए संसाधनों का उपयोग किस हद तक सही तरीके से किया गया और क्या वे इच्छित परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम रहे। परफॉर्मेंस ऑडिट में पूरी योजना का बारीकी से अध्ययन किया जाता है, और उसी की रिपोर्ट बनाई जाती है।

कार्य निष्पादन ऑडिट की प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण चरण होते हैं:

समीक्षा और योजना बनाना : पहले चरण में, ऑडिटर को यह निर्धारित करना होता है कि किस कार्यक्रम या योजना का ऑडिट किया जाएगा। इसके बाद, ऑडिटर योजना और उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए एक कार्य योजना तैयार करते हैं।

जानकारी एकत्र करना : ऑडिट की प्रक्रिया के दौरान, संबंधित दस्तावेजों, रिपोर्टों और कार्यान्वयन के आंकड़ों का अध्ययन किया जाता है। इसमें सभी प्रकार की जानकारी एकत्र की जाती है, जैसे बजट, कार्यक्रम के उद्देश्य, कागज़ी कार्य, रिपोर्ट आदि।

विवेचना और विश्लेषण : एकत्रित जानकारी का विश्लेषण किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार कार्य हो रहा है या नहीं। यह चरण वित्तीय, शारीरिक और मानव संसाधनों के उपयोग की समीक्षा पर केंद्रित होता है।

समीक्षा और निष्कर्ष : अंतिम चरण में ऑडिटर अपनी समीक्षा प्रस्तुत करते हैं, जिसमें यह बताया जाता है कि कार्यक्रम या परियोजना कितनी प्रभावी और कुशल रही। इसके साथ ही, सुधार के लिए सिफारिशें भी दी जाती हैं।

कार्यनिष्पादन ऑडिट सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभावी और कुशल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह न केवल सरकारी धन के उपयोग की पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। हालांकि, इसे प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए विभिन्न चुनौतियाँ हैं, लेकिन इनका समाधान समय रहते किया जा सकता है। कार्य निष्पादन ऑडिट की प्रक्रिया से प्राप्त निष्कर्ष और सुधारात्मक उपाय निश्चित रूप से सरकारी कार्यों में सुधार की दिशा में सहायक होते हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक प्रत्येक राज्य जहाँ मनरेगा का कार्य आरंभ है वहाँ पर सैम्पलिंग विधि से जिला का चयन करती है, इस सैम्पलिंग विधि में आइडिया सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाता है। त्रिपुरा में सैम्पलिंग विधि से दो जिलों का चयन किया गया जहाँ पर परफॉर्मेंस ऑडिट करने का लक्ष्य रखा गया था, जिनका नाम ढलाई एवं सिपाहीजला डिस्ट्रिक्ट था। त्रिपुरा राज्य में ये दो ऐसे जिले थे जहाँ पर केंद्र द्वारा इस योजना में सबसे ज्यादा अनुदान राशि दी गयी थी।

प्रधान महालेखाकार त्रिपुरा, द्वारा इस ऑडिट को दो चरणों में बाँटा गया था। चूंकि एक जिले में कई प्रखण्ड होते हैं इसलिए ऑडिट की गुणवत्ता को अच्छा रखने के लिए आइडिया सॉफ्टवेयर की मदद से इस जिले के अंतर्गत दो प्रखंडों का चयन किया गया। मुझे प्रथम चरण में सिपाहीजला के अंतर्गत नलचर प्रखण्ड में ऑडिट करने का अवसर प्राप्त हुआ। मनरेगा का ऑडिट चार स्तरों पर किया जाता है, पहला राज्य स्तर पर, दूसरा जिला स्तर पर, तीसरा प्रखण्ड स्तर पर, एवं अंतिम ग्राम पंचायत के स्तर पर। ऑडिट की शुरुआत राज्य स्तर पर, सचिव ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ एंटी मीटिंग के तौर पर की जाती है, जिसमें आने वाली ऑडिट के मानदंड और दायरे के ऊपर बातचीत की जाती है।

इसके पश्चात टीम जिला में प्रस्थान करती है। मेरे टीम में चार मेम्बर थे। जिले में जिला पदाधिकारी महोदय के साथ ऑडिट के मानदंड के ऊपर चर्चा की जाती है। प्रत्येक जिला में एक मनरेगा इकाई होती है, जो जिले में मनरेगा के अंतर्गत सभी कार्यों का ब्योरा अपने पास रखती है। यहाँ से हमें मनरेगा से संबंधित कागजात जो ऑडिट के लिए मददगार होते हैं आसानी से प्राप्त हो जाते थे। इसके पश्चात हमारी टीम ने नलचर प्रखण्ड के लिए प्रस्थान किया। यहाँ पर हमने प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के साथ बैठक कर आगामी ऑडिट के प्रारूप के ऊपर चर्चा की। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी की ओर से हमारी टीम को ऑडिट के दौरान पूरा सहयोग

का आश्वासन दिया गया। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा प्रखण्ड स्थित डाकबंगला में हमारे रहने का इंतजाम किया गया। चूंकि एक प्रखण्ड में कई ग्राम पंचायतें आती हैं, इसलिए समय की कमी एवं ऑडिट की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए हमारी टीम ने प्रखण्ड नलचर अंतर्गत चार ग्राम पंचायतों का चयन आइडिया सॉफ्टवेयर की मदद से किया। इन चार ग्राम पंचायत में हमारी टीम को कई कार्य करने थे जैसे कि, मनरेगा से संबंधित कागजातों को देखना, मनरेगा द्वारा किए गए कार्य का अवलोकन करना तथा लाभार्थी सर्वे करना। इसमें से कार्य का अवलोकन एवं लाभार्थी सर्वे का कार्य करने के लिए टीम को सुबह काफी जल्दी निकलना होता था।

ज़्यादातर मनरेगा में काम करने वाले व्यक्ति दिहाड़ी मजदूर होते हैं, जो कि प्रातःकाल ही अपने घर से काम के लिए निकल जाते हैं, ऐसे व्यक्ति से मुलाक़ात करने के लिए हमें सुबह 7 बजे ही अपने डाकबंगला से निकलना होता था। जब आप ऐसे सुदूर ग्राम में जाएंगे जहाँ अभी भी प्रशासन की नजर नहीं पहुँची हो तब आपको लगेगा कि सच में हम दो देशों में रहते हैं : भारत और इंडिया में , अभी भारत में बहुत कुछ होना बाकी है।

दूसरे चरण में हमारी टीम ने बोक्सानगर प्रखण्ड के लिए प्रस्थान किया, यहाँ भी हमने प्रखण्ड विकास पदाधिकारी से मुलाक़ात कर मनरेगा ऑडिट से संबंधित जानकारी एक दूसरे से साझा की। यहाँ भी हमारे रहने का प्रबंध, प्रखण्ड स्थित डाकबंगला में किया गया। जब आप भारत के मानचित्र को देखेंगे तब आपको बोक्सानगर प्रखण्ड काफी अद्वितीय लगेगा।

बोक्सानगर, भारत और बांग्लादेश की सीमा से सटा हुआ एक प्रखण्ड है। जब हमारी टीम मनरेगा सर्वे के दौरान लाभार्थी के घर गई तो मैंने देखा की अंतर्राष्ट्रीय बार्डर केवल 10 मीटर की दूरी पे था। बार्डर के उस पार स्थित घर यहीं से देखे जा सकते थे। लाभार्थी सर्वे के दौरान मेरी मुलाक़ात स्वपन रे से हुई, मैंने देखा कि मनरेगा योजना का इनके खुशहाल

जीवन में काफी योगदान रहा है। मुझे बहुत खुशी हुई कि भारत सरकार की ये योजना लोगों की ज़िंदगी में काफी सार्थक रही है। इतवार की छुट्टी के दिन मैं अपनी टीम के साथ बोक्सानगर प्रखण्ड स्थित प्राचीन अवशेष देखने गया, यहाँ पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा उत्खनन में बुद्ध प्रतिस्थान से संबन्धित एक विशाल ईंट से निर्मित स्तूप, चैत्यगृहा, मठ और एक मंदिर के अवशेषों को उजागर किया है। इसके साथ ही भगवान बुद्ध की तीन कांस्य की मूर्तियाँ, ढली हुई ईंट, लघु मन्त्र स्तूपें, मुहरें, चाँदी के सिक्के आदि भी उजागर हुये हैं। यहाँ का दृश्य बहुत ही अलौकिक था, और अवशेष से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में बुद्ध धर्म के प्रसार में यह एक महत्वपूर्ण स्थल रहा होगा।

ऑडिट की समाप्ति के बाद हमारी टीम ने वापस अगरतला के लिए प्रस्थान किया, वहाँ पहुँच कर हमने मनरेगा के रिपोर्ट के लिए काम करना प्रारम्भ किया। हमने पाया कि मनरेगा गरीबों की आय हस्तांतरित करने का एक प्रभावी साधन है।

मनरेगा भारत में गरीबी उन्मूलन और वित्तीय समावेशन की दिशा में एक अत्यधिक प्रभावी योजना साबित हुई है। यह न केवल रोजगार सृजन करती है, बल्कि लोगों को वित्तीय सेवाओं से जोड़ने का काम भी करती है। हालांकि इसके सामने कुछ चुनौतियाँ हैं, लेकिन यदि इन पर ध्यान दिया जाए और योजना के कार्यान्वयन को और अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाया जाए, तो यह निश्चित रूप से भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मनरेगा का सफल कार्यान्वयन न केवल गरीबों को रोजगार प्रदान करता है, बल्कि इसे सशक्त बनाकर एक समावेशी और समृद्ध भारत की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।



एकाकीपन

विप्रतीप दास

लेखापरीक्षक

दिन के अंत में एकाकीपन होता है साथी मेरा,
शाम के अँधेरे में मिल जाते यादों के ढेर।
उस तीव्र गति से पीछा करने वाली यादों का मानो जैसे,
अँधेरे से है एक अवियोज्य दोस्ती।
शाम होते ही वे यादें जैसे जकड़ लेती हैं,
और हिसाब लेना चाहते हैं घटने वाले हर एक पल का।
अच्छे दिनों में मिल जाते हैं बहुत से आकांक्षी,
लेकिन वे भी रात के अंधकार में सितारों के जैसे हो जाते हैं गायब।
संपर्क सूची में हैं हजारों रिश्तेदार और व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर में,
भी हैं ढेर सारे आभासी मित्र।
फिर भी दिन के अंत में शाम ढलते ही,
एकाकीपन ही होता है एकमात्र साथी मेरा।
आखिरकार मैं भी एक इंसान हूँ,
औरों के जैसे उम्मीद ही है मेरा मुख्य सहारा।
उम्मीद के सहारे मैं कोशिश करता रहता हूँ एवं करता रहूँगा,
उस एकाकीपन के एक साथी की तलाश में।



भारत की प्राचीनतम जीवित नगरी- वाराणसी

विशाल सिंह
लेखापरीक्षक

जहाँ प्रकृति अपने सौंदर्य पर गर्व करती है, जहाँ माँ गंगा मानवता को पवित्रता से पवित्र करती है, जहाँ जीवन मृत्यु के चक्र को विराम प्राप्त होता है, जहाँ रहस्य एवं शांति का अद्भुत आभास होता है, वह देवनगरी कोई और नई विश्व की प्राचीनतम जीवित नगरी, वाराणसी संस्कृति, धर्म एवं कला की प्रतिमूर्ति भारत पृथ्वी पर देवताओं की धरती के रूप में सुशोभित हैं। भारत वह देश है जिसने प्राचीन काल से विश्व पटल पर अपनी गौरवमयी एवं महिमामई उपस्थिति को अंकित किया है।

वाराणसी का इतिहास : वाराणसी का नाम, यहाँ की दो स्थानीय नदियां वरुणा और असि के नाम से मिलकर बना है। कुछ विद्वानों का मानना है कि वाराणसी का इतिहास 4000 से 5000 साल पुराना है। वाराणसी को विश्व भर में अनेक नामों से बुलाया जाता है। बनारस एवं काशी इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं। वाराणसी को प्रायः 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', ज्ञान नगरी आदि विशेषणों से संबोधित किया जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, काशी नगर की स्थापना भगवान शिव ने लगभग 5000 वर्ष पूर्व की थी। जिस कारण ये आज भी एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। इस प्राचीन नगर का कई पवित्र ग्रंथों में उल्लेख आता है, इसमें प्रमुख है स्कन्द पुराण, रामायण, महाभारत एवं प्राचीनतम वेद ऋग्वेद।

हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि अगर इंसान वाराणसी की पवित्र भूमि पर देहावसान प्राप्त करता है तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसलिए जीवन के अंतिम समय में पूरे विश्व से हिंदू धर्म को मानने वाले लोग वाराणसी में समय व्यतीत करना पसंद करते हैं। मृत्यु उपरांत भी यहाँ अंतिम संस्कार करने के लिए परिवार के लोग आते हैं तथा मृत आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो इसके लिए पूजा-पाठ करते हैं। यह एक अद्भुत नगर है, जहाँ जीवन एवं मृत्यु दोनों का उत्सव होता है। यहाँ के लोग खुले दिल से जीते हैं, यहाँ जाने के बाद इंसान जिंदगी के मोह माया से मुक्त हो जाता है।

मंदिरों का शहर : वाराणसी में अनेक प्रसिद्ध मंदिर हैं, जिनमें काशी विश्वनाथ मंदिर, दुर्गा मंदिर, काल भैरव, भारत माता मंदिर विशेष हैं। वाराणसी मंदिरों का शहर है। लगभग हर चौराहे पर एक मंदिर तो मिल ही जाएगा। काशी विश्वनाथ मंदिर जिसे स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है। इसे इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा बनवाया गया था, इस मंदिर की वाराणसी में सर्वोच्च महिमा है, क्योंकि यहाँ विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग स्थापित है। ऐसी मान्यता है कि इस ज्योतिर्लिंग के एक बार दर्शन मात्र से जीवन धन्य हो जाता है। इस मंदिर का विध्वंस मुगल शासक औरंगजेब ने करवाया था और इसके अधिकांश भाग को एक मस्जिद में बदलवा दिया था। संकट मोचन मंदिर श्री राम भक्त हनुमान को समर्पित है तथा स्थानीय लोगों में यह मंदिर बहुत ही प्रसिद्ध है।

वाराणसी के घाट : वाराणसी में 100 से अधिक घाट हैं, अधिकतर घाट स्नान-घाट हैं। जबकि कुछ घाट अन्त्येष्टि-घाट हैं। कई सारे घाट किसी कथा आदि से जुड़े हुए हैं, जैसे मणिकर्णिका घाट, दशाश्वमेध घाट, काशी विश्वनाथ मंदिर के निकट स्थित है और सब से शानदार घाट है। यहाँ प्रतिदिन शाम को गंगा आरती होती है जो कि अलौकिक होती है। आरती देखने के

लिए लोग दूर-दराज क्षेत्रों से आते हैं। भारत के अनेक कोनों से लोग गंगा आरती देखने आते हैं।

मणिकर्णिका घाट : इस घाट से जुड़ी दो कथाएँ हैं। एक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने शिव की तपस्या करते हुए अपने सुदर्शन चक्र से यहाँ एक कुंड खोदा था, उसमें तपस्या के समय आया हुआ उनका श्वेद भर गया। जब भगवान शिव वहाँ प्रसन्न होकर आए तब विष्णु के कान की मणिकर्णिका उस कुंड में गिर गई थी। दूसरी कथा के अनुसार भगवान शिव को अपने भक्तों से छुट्टी ही नहीं मिल पाती थी। देवी पार्वती इससे परेशान हुई और शिवजी को रोके रखने हेतु अपने कान की मणिकर्णिका वहीं छुपा दी और शिवजी से उसे ढूँढने को कहा, शिवजी उसे ढूँढ़ नहीं पाए और आज तक जिसकी भी अन्त्येष्टि उस घाट पर की जाती है वे उससे पूछते हैं कि क्या उसने देखी है? प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार मणिकर्णिका घाट का स्वामी वही चांडाल था, जिसने सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र को खरीदा था। उसने राजा को अपना दास बना कर उस घाट पर अन्त्येष्टि करने आने वाले लोगों से कर वसूलने का काम दे दिया था। इस घाट की विशेषता यह है कि यहाँ लगातार हिंदू अन्त्येष्टि होती रहती हैं व घाट पर चिता की अग्नि लगातार जलती ही रहती है कभी भी बुझती नहीं है।

पर्यटन : हिंदू धर्म को मानने वाले विश्व भर के लोग यहाँ अपने आराध्य की पूजा अर्चना करने आते हैं। बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग सारनाथ में आते हैं जहाँ महात्मा बुद्ध से संबंधित अनेक स्मृतियाँ स्थित हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा पर्यटक वाराणसी में ही आते हैं, जिससे वहाँ के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। पिछले 10 सालों में वाराणसी का नए सिरे से कायाकल्प भी हुआ है। घाटों के सौंदर्यीकरण से लेकर सड़कों का चौड़ीकरण जो कि ज्यादा पर्यटकों की वजह से हमेशा शहर में जाम की स्थिति बनी रहती थी। अभी काफी सुधार हुआ है। शहर में साफ-सफाई से शहर सुंदर दिखाई देता है।

वाराणसी संस्कृति कला एवं साहित्य से परिपूर्ण है इस नगर से महान भारतीय लेखक एवं विचारक हुए हैं। कबीर, रविदास, तुलसीदास जिन्होंने यहाँ राम चरितमानस लिखी एवं भारतेन्दु हरिश्चंद्र और आधुनिक काल के जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचंद और बहुत सारी विभूतियों ने यहाँ से ज्ञान की पराकाष्ठा पूरी दुनिया में फैलाई।



वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय की टेबल टेनिस इंटरज़ोनल विजेता टीम

मुर्शिदाबाद भ्रमणः

एक सुखद स्मृति

शुभजित चौधुरी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दिसम्बर का महीना अगरतला में गर्मी से राहत लेकर आया था। इस महीने में हमने मुर्शिदाबाद शहर घूमने का निश्चय किया। कोलकाता से लगभग 200 किलोमीटर दूर स्थित मुर्शिदाबाद एक ऐतिहासिक शहर है, जहाँ नवाबों की विरासत और उनके शानदार साम्राज्य के अवशेष आज भी मौजूद हैं। इस शहर को नवाब मुर्शिद कुली खान द्वारा स्थापित किया गया था।

सुबह का समय था जब मैं अपने माता-पिता के साथ अगरतला से कोलकाता के लिए फ्लाइट में सवार हुआ। वैसे तो यह एक छोटी सी उड़ान थी, लेकिन हमें बांग्लादेश के ऊपर से उड़ते हुए हरे-भरे नज़ारों का शानदार दृश्य देखने को मिला, और फिर हमारा विमान कोलकाता के व्यस्त नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। कोलकाता पहुँचते ही हम अपने रोमांचक सफर को शुरू करने के लिए उत्सुक थे, जो अगली सुबह शुरू हुआ। मैंने कोलकाता से मुर्शिदाबाद तक की यात्रा के लिए हज़ारद्वारी एक्सप्रेस चुनी थी।

यह एक एक्सप्रेस ट्रेन है, जो अपनी आरामदायक यात्रा और ऐतिहासिक महत्व के लिए जानी जाती है।

पहला दिन : हज़ारद्वारी एक्सप्रेस, जिसका नाम मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध हज़ारद्वारी महल के नाम पर है, अपने आप में एक खास अनुभव पेश करती है। करीब साढ़े तीन घंटे की यह ट्रेन यात्रा मुझे बंगाल के मनमोहक इलाकों से लेकर गई। कोलकाता से निकलते ही ट्रेन शहर के व्यस्त उपनगरों को पार करती हुई शांत ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवेश कर गई।

रास्ते में हमें सरसों और धान के खेत दिखाई दिए, छोटे-छोटे गाँव और बीच-बीच में हुगली नदी की झलक भी देखने को मिली।

हमने होटल में चेक-इन किया और थोड़ी देर आराम करने और तैयार होने के बाद, शहर घूमने निकल पड़े। मैंने पहले ही मुर्शिदाबाद के प्रमुख स्थलों को देखने के लिए एक टोटो (इलेक्ट्रिक रिक्शा) किराए पर लेने की योजना बना ली थी, जो शहर में घूमने का एक सुगम और किफायती तरीका है। हमारे टोटो चालक, छोटन शेख, ने एक गर्मजोशी भरे मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया। मुर्शिदाबाद के निवासी, छोटन सिर्फ चालक ही नहीं अपितु 2 दिनों की इस यात्रा में हमारा गाइड भी बन चुका था। शहर के प्रति उनकी गहरी जानकारी को देखकर मुझे यह महसूस हुआ कि मेरी यह यात्रा निश्चित ही सुखद और आनंददायक होने वाली है।

हमारा पहला पड़ाव कटरा मस्जिद था, जो नवाब मुर्शिद कुली खां ने 1723 और 1724 ई० के दौरान बनवाई थी। ऊँची मीनारों और भव्य गुम्बदों वाली यह मस्जिद काफ़ी भव्य प्रतीत हो रही थी। मस्जिद की वास्तुकला मुगल और स्थानीय शैली का एक सुंदर मिश्रण है, जिसमें बारीक नक्काशी, मेहराबदार दरवाजे और दीवारों पर सुंदर सुलेख शामिल हैं।

कटरा मस्जिद के बाद हमारा पहला अगला पड़ाव प्रसिद्ध जहानकोषा तोप था। यह विशाल तोप, जो दुनिया की सबसे बड़ी तोपों में से एक है, नवाब मीर कासिम के शासनकाल में 18वीं सदी में ढाली गई थी। "जहान कोषा" नाम, जिसका मतलब है "विश्व विजेता", इसके विशाल आकार और ताकत को सही मायने में दर्शाता है। इसके बाद हम "जाफरागंज क़ब्रिस्तान" पहुंचे। इस क़ब्रिस्तान में मुर्शिदाबाद के अतीत के कई प्रमुख व्यक्तियों की कब्रें हैं, जिनमें शाही परिवार के सदस्य और नवाबों के समय के प्रसिद्ध व्यक्तित्व शामिल हैं। क़ब्रिस्तान का शांत और सुकून भरा माहौल इस क्षेत्र के समृद्ध लेकिन अक्सर उथल-पुथल रहने वाले नवाबों के इतिहास पर विचार करने के लिए एक उपयुक्त स्थान था।

इसके बाद हम लोग जगत सेठ का महल, जो मीर कासिम के काल में काफ़ी प्रभावशाली व्यक्तित्व थे, वहाँ गए। जगत सेठ के महल के बाद हम “नशीपुर महल” पहुंचे, जो मुर्शिदाबाद की शाही धरोहर का एक और सुंदर उदाहरण है। हमारे दिन का आखिरी पड़ाव था “काठगोला महल”। शहर के बीच स्थित ये महले आपको याद दिलाते हैं कि कैसे एक समय में भारत के सबसे प्रभावशाली राज्य की राजधानी के रूप में ये शहर जीवंत रहा होगा।

इस प्रकार मुर्शिदाबाद में हमारा पहला दिन काफ़ी रोमांचक था। इस दौरान हमने शहर के प्रसिद्ध व्यंजन भी खाए। रात को लगभग 8 बजे हमलोग होटल लौट आए।

दूसरा दिन : मुर्शिदाबाद में हमारे दूसरे दिन की शुरुआत हज़ारद्वारी महल से हुई, जो निस्संदेह मुर्शिदाबाद का सबसे प्रसिद्ध स्थल है। यह भव्य महल अपनी विशाल संरचना के साथ-साथ नवाबी काल की भव्यता और ऐश्वर्य की याद दिलाता है। यह महल नवाब नजिम हुमायूँ जहाँ के शासनकाल में 19वीं सदी के प्रारंभ में बनाया गया था। महल को अपनी इतालवी शैली की वास्तुकला और 1000 दरवाजों के लिए जाना जाता है (हालांकि सभी दरवाजे चालू तो नहीं हैं, पर यह इसके डिज़ाइन का एक आकर्षक पहलू है)। शहर के बीचों-बीच स्थित यह महल जो कभी नवाबों का आधिकारिक निवास स्थान था, आज एक भव्य ऐतिहासिक स्मारक के रूप में खड़ा है, जो यहाँ के शाही अतीत की महिमा का प्रतीक है। इसके बाद हमलोग भागीरथी नदी के तट पर पहुँचे। नदी में हमने नौकायात्रा का आनंद लिया और नदी की दूसरी ओर पहुँचे।

हम लोगों का अगला पड़ाव “खोशबाग” था। यह एक ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है और यहाँ बंगाल के अंतिम स्वतंत्र नवाब सिराज-उद्-दौला की कब्र स्थित है। सिराज-उद्-दौला की दुखद मौत से भारतीय इतिहास में एक मोड़ आया, क्योंकि 1757 में प्लासी की लड़ाई में उनकी

हार ने बंगाल में ब्रिटिश शासन की नींव रखी। नवाब की कब्र के पास ही उनके परिवार के लोगों की कब्रें भी मौजूद हैं। आधुनिक भारत के इतिहास के सर्वप्रमुख व्यक्तियों में से एक नवाब सिराज-उद्-दौला के शांत और सादगी भरी कब्र के पास खड़े होकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सारी घटनाएं मेरी आँखों के सामने से गुजर रही हों। वहाँ पर गाइड बता रहे थे कि कैसे नवाब को उनके अपने लोगों ने ही धोखा दिया था।

भारतीय इतिहास के सागर में गोते लगाते हुए, हम अपने अगले पड़ाव की तरफ चल पड़े, जो “किरीटेश्वरी मंदिर” था। यह मंदिर देवी काली को समर्पित है और एक शक्तिपीठ है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ पर माँ सती का मुकुट गिरा था। यहाँ पर माता की मूर्ति की जगह एक काले रंग के पत्थर में उनके रूप की पूजा होती है। किरीटेश्वरी मंदिर के आध्यात्मिक माहौल में सराबोर होने के बाद, हम वापस नदी किनारे लौटे और अपनी वापसी यात्रा के लिए तैयार हुए। हमने होटल पहुँच कर भोजन किया और थोड़ी देर आराम करने के बाद शाम को मोतीझील की तरफ निकल पड़े। मुर्शिदाबाद के दिल के पास स्थित यह खूबसूरत झील, प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व का अद्भुत मिश्रण है। एक जमाने में यह झील नवाब के निजी निवास का हिस्सा थी और इसे शाही महल के लिए एक सजावटी जलाशय के रूप में डिज़ाइन किया गया था। झील के किनारे उठने वाली शीतल हवा, झील में तैरते हुए हंसों का झुंड, शाम के समय ढलता हुआ सूरज, धरती पर मानो स्वर्ग की झलक दे रहा था।

थोड़ी देर में हम लोग होटल लौट गए, ना केवल उन ऐतिहासिक और आध्यात्मिक जगहों की यादों के साथ जिन्हें हमने देखा था, बल्कि हमने शहर की याद में कुछ खास उपहार भी लिया था। रास्ते में, हम कुछ स्थानीय बाजारों में रुके, जहाँ हमें इस क्षेत्र की प्रसिद्ध पारंपरिक कृतियों की एक विविधता देखने को मिली। मैंने कुछ छोटी-छोटी हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ खरीदी, जबकि मेरी माँ ने एक पारंपरिक मुर्शिदाबादी सिल्क साड़ी खरीदी,

जो इस ऐतिहासिक शहर की एक परफेक्ट याद थी। होटल वापस आकर, हमने मुर्शिदाबाद की प्रसिद्ध चिकन बिरयानी खायी। बिरयानी के साथ, हमने "छानाबोड़ा" भी खाया, जो एक स्थानीय मिठाई है और बेहद स्वादिष्ट थी। इस मिठाई में छेना और चीनी की चाशनी का मिश्रण होता है।

दो दिनों की इस अविस्मरणीय यात्रा के बाद शहर को छोड़कर अपने घर वापस लौटने का समय आ गया था। यह छोटी सी पर कभी न भूली जाने वाली यात्रा इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिकता से भरी हुई थी। यहाँ के लोगों की गर्मजोशी, स्थानीय व्यंजनों के समृद्ध स्वाद, और परिदृश्य की सुंदरता, यही कुछ चीजें थीं जिन्होंने इस शहर को इतना खास बना दिया है। वापसी में हमने भागीरथी एक्सप्रेस को चुना। पूरे रास्ते मैं खिड़की से बाहर तो झाँक रहा था, पर इस बार मेरी आँखों के सामने खेत खलिहान नहीं थे, कभी मोतीझील की शाम थी तो कभी शहर की छोटी गलियाँ, मेरे कानों में नवाब की कब्र के पास गाइड के कहे शब्द गूँज रहे थे और मैं खुद में ही मुस्कुरा रहा था।



- ♦ “सम्पूर्ण भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का बड़ा भाग पहले से ही जानता समझता है।”
- महात्मा गाँधी
- ♦ “हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।”
- मैथिलीशरण गुप्त

छठ पूजा में बिहार यात्रा

शुभम कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

“ए भैया, भैया जी सुन रहे हैं?” “हाँ, बोलिए।” “हमारे यहाँ छठ हो रहा है, शाम को सपरिवार खरना का प्रसाद खाने जरूर आना है।” “ठीक है, ठीक है। जरूर आएंगे।”

यही सुनते हुए मेरी “खरना” के दिन की शुरुआत हुई। नींद खुली तो पता चला कि सुबह से ही लगभग 6-7 लोग घर आकर निमंत्रण देकर जा चुके थे। जब व्हाट्सएप खोला, तो दोस्तों के मैसेज भी आए हुए थे। आजकल टेक्नोलॉजी हर जगह अपना असर दिखा रही है। जैसे शहरों में लोग ऐप से खाना और राशन मंगवाते हैं, वैसे ही गाँवों में हमने भी व्हाट्सएप को निमंत्रण देने का जरिया बना लिया है।

हर बार की तरह, इस बार भी छठ पूजा में मैं अपने घर, बिहार में था। छठ के दौरान ट्रेन का टिकट मिलना किसी जंग जीतने जैसा है। पेपर और न्यूज़ में हमेशा ट्रेनों की भीड़ की खबरें आती ही हैं। शुक्रवार की शाम ऑफिस खत्म कर मैं जल्दी से एयरपोर्ट पहुँचा। जाते-जाते सहकर्मियों ने याद दिलाया कि लौटते वक्त छठ का प्रसाद और ठेकुआ जरूर लेते हुए आना। फ्लाइट से कोलकाता पहुँचा, जहाँ से ही माहौल में पर्व की तैयारी महसूस हो रही थी।

हावड़ा स्टेशन पहुँचकर राहत थी कि सीट कन्फर्म थी, लेकिन छठ के दौरान सीट शेयर करना आम बात है। एक ही सीट पर मैं और मेरा एक मित्र दोनों बैठ गए। पिछली बार वेटिंग टिकट पर मैं भी दूसरों की सीट पर घर पहुँचा था, यही सोचकर आगे बढ़ गया। “नहाय-खाय” वाले दिन शाम को घर पहुँचा। लगभग सारे दोस्त पहले से ही आ गए थे। शाम को

बाजार निकले, जो पूरी रौनक से भरा हुआ था। फलों की दुकान, मिठाई की दुकान, और बर्तनों की दुकानों पर जबरदस्त भीड़ थी। अगले 2-3 दिनों के लिए हमारा गाँव दुल्हन की तरह सजा रहने वाला था।

नहाय-खाय से याद आया, आपको छठ पूजा के बारे में थोड़ा बता देते हैं। यह त्योहार सूर्य देव और उनकी बहन छठी मइया को समर्पित है। अक्सर घर की महिलायें व्रत रखती हैं। वैसे तो यह बिहार राज्य का त्योहार है, पर बिहार, झारखंड, बंगाल, और सम्पूर्ण उत्तरी भारत में यह त्योहार मनाया जाता है। यह पूजा चार दिनों तक चलती है जो इस प्रकार होती है:

पहला दिन- नहाय-खाय : बिहार में कई जगह इस दिन को कटू-भात के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन व्रतधारी गंगा नदी या किसी अन्य पवित्र नदी में स्नान करते हैं। घर में भोजन के रूप में शुद्ध और सात्विक भोजन तैयार किया जाता है, जिसमें कटू की सब्जी, भात और चने की दाल शामिल होती है। लोग अक्सर अपने पड़ोसियों और दोस्तों को भी दोपहर में खाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

दूसरा दिन- खरना : इस दिन व्रतधारी पूरे दिन उपवास रखते हैं और शाम को खीर, रोटी, और गुड़ का प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके बाद से 36 घंटे का अन्न-जल ग्रहण किए बिना निर्जला उपवास शुरू होता है।

जिनके घर पूजा हो रही होती है, वो खड़ना का प्रसाद खाने के लिए निमंत्रण देते हैं। हम लोग तो आस पड़ोस के हर घर में जा कर प्रसाद ग्रहण करते हैं।

तीसरा दिन- संध्या अर्घ्य : शाम के समय व्रतधारी और सभी लोग पास के नदी, तालाब या किसी जलाशय के किनारे जाकर अस्त होते सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं। घर के बेटे को छठ की सारी सामग्री एक बाँस के बने डलिये जिसको 'दौरा' भी कहते हैं, उसमें रख कर नदी पर ले जाने का सौभाग्य प्राप्त होता है। घर से निकलने के बाद ये 'दौरा' सीधे नदी घाट पर ही रखना होता है, चाहे रास्ता कितना लंबा हो या कितना ही पथरीला।

चौथा दिन : उषा अर्घ्य (सुबह का अर्घ्य) छठ पूजा का सबसे मनोरंजक दिन उसका आखिरी दिन होता है जिसको सुबह का अर्घ्य या उषा अर्घ्य कहते हैं। पुनः उसी दौरे को लेकर सपरिवार छठव्रती नदी घाट पर पहुँचती हैं। व्रतधारी सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं, घाट पर हवन होता है, और छठव्रती वहीं पर अपना 36 घंटे का उपवास तोड़ती हैं। इसके बाद व्रत का समापन होता है, और व्रतधारी प्रसाद ग्रहण करते हैं, इसके बाद शुरू होता है प्रसाद वितरण का सिलसिला। अक्सर घाट के पास ही मेले का भी आयोजन होता है।

वापस अपनी कहानी पर लौटते हैं। मैं भी खरना का प्रसाद ग्रहण करने शाम को घर से निकला। साथ में 3-4 दोस्त भी थे। हम एक घर से दूसरे घर जा रहे थे। अक्सर जिनके घर छठ पूजा हो रही होती है, उनके परिवार का कोई सदस्य सड़क पर आ-जा रहे लोगों को अपने घर प्रसाद ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करता है। लगभग 2-3 घंटे बाद हम सब अपने घर लौटे।

हमारे गाँव में छठ पूजा के अवसर पर सूर्य भगवान की मूर्ति स्थापित की जाती है। विगत 4-5 वर्षों से इन मूर्तियों को एक नाट्य रूपांतरण में पेश किया जा रहा है जो काफ़ी महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश देता है।

पंडाल के आस पास का माहौल रौनक से भरा हुआ होता है, चाट, फुचका और खिलौने की दुकानों पर बच्चों की भीड़ लगी रहती है। हमारे गाँव से नदी घाट की दूरी लगभग 2 किलोमीटर है। हमारे गाँव की नदी पर नदी-घाटी परियोजना के तहत एक डैम भी बना हुआ है। छठ पूजा के लिए नदी के दोनों किनारों पर जेसीबी की सहायता से घाट तैयार किए गए थे। डैम के कुछ फाटक खोल दिए गए थे, ताकि छठ पूजा के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जा सके। गाँव से नदी तक लड़ी वाली जगमग लाइटें लगाई गई थीं, जो माहौल को और भी खास बना रही थीं।

कहते हैं उगते सूरज को सब प्रणाम करते हैं, पर डूबते सूरज को कोई नहीं परंतु बिहार के इस पवित्र त्योहार में पहले डूबते सूर्य की पूजा की जाती है और उसके बाद उगते सूर्य की। संध्या अर्घ्य के लिए हम लगभग शाम 4 बजे नदी घाट पर पहुँचे। रास्ते में छठव्रती महिलाओं का समूह मंगल गीत गाते हुए चल रहा था।

शाम का समय बेहद मनोरम था। करीब 5 बजे, सूर्यास्त के समय अर्घ्य देना शुरू हुआ। हमने भी अर्घ्य दिया और इसके बाद आम के पत्ते पर दीया जलाकर नदी में समर्पित किया। सूर्यास्त की बेला में नदी के बीच असंख्य दीये जलते हुए अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आकाश के तारे जमीन पर उतर आए हों। लगभग 7 बजे हम घर वापस आ गए।

अगले दिन सुबह 3 बजे हम सभी स्नान कर नदी घाट पर पहुँचे। प्रातः काल का वह मनोरम बेला, हल्की ठंडी हवा, पूरे रास्ते जगमगाती लाइटें और वातावरण में छठ पूजा का अद्भुत माहौल सब कुछ अलौकिक प्रतीत हो रहा था। वैसे तो हम हर दिन इस रास्ते से सुबह टहलने निकलते थे, लेकिन आज यह रास्ता कुछ खास महसूस हो रहा था। कहीं से छठ व्रतियों का मधुर संगीत सुनाई दे रहा था, तो कहीं दूर से बाजे पर गीतकार गीत गाते हुए आगे बढ़ रहे थे। लगभग सुबह 4:30 बजे अर्घ्य अर्पित करना शुरू हुआ। सबसे पहले छठ व्रतियों ने नदी में स्नान किया, फिर उन्होंने दिया जलाया।

इसके बाद छठ के दौरे (सूप) में पूजा सामग्री रखकर भगवान सूर्य को अर्घ्य देना शुरू किया। हमने भी अलग-अलग छठ व्रतियों के साथ भगवान सूर्य को जल और दूध से अर्घ्य दिया। इसके बाद हवन संपन्न हुआ, जिसमें हमने भी आहुति दी। पूजा के समापन के बाद छठ व्रतियों ने अपना 36 घंटे का कठिन उपवास समाप्त किया। इसके बाद सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। मैं भी अपने दोस्तों के साथ विभिन्न जगहों पर जाकर प्रसाद खाने लगा।

छठ घाट पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया था, जो काफी रोचक था। पास में ही एक संस्थान द्वारा मुफ्त चाय की व्यवस्था की गई थी। घाट पर ही दंगल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है। घाट पर लगे मेले में तरह-तरह की मिठाइयाँ, खिलौने और अन्य चीज़ें बिक रही थीं, जो माहौल को और जीवंत बना रही थीं। सुबह के अर्घ्य के समय तो पूरा गाँव नदी घाट पर उमड़ पड़ा था। वहाँ कई पुराने दोस्तों से मुलाकात हो गई, जिनसे बातचीत करते हुए समय का पता ही नहीं चला। हम लोग करीब सुबह 8 बजे घर लौटे।

इस प्रकार, चार दिनों तक चलने वाला यह महापर्व संपन्न हुआ। छठ पूजा केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दूरियों को मिटाने और आपसी सौहार्द बढ़ाने का प्रतीक है। बिहार, जो जात-पात की राजनीति के लिए जाना जाता है, वहाँ छठ पूजा इन भेदभावों को भुलाकर सभी को एकजुट करता है।

नदी घाट पर हर जाति और समुदाय के लोग साथ में पूजा करते हैं और प्रसाद का आदान-प्रदान करते हैं, जो सामाजिक खाई को पाटने का काम करता है। इस पर्व में स्वच्छता और सादगी को विशेष महत्व दिया गया है। घर, सड़क और नदी घाट सभी जगह साफ-सफाई रहती है। यह पाखंड से मुक्त, समर्पण और सामूहिक एकता का त्योहार है। छठ पूजा की कई यादों को समेटते हुए, सहकर्मियों के लिए प्रसाद ले कर मैं वापस लौट आया।



♦ “आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।”

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

सामाजिक न्याय के पुरोधा: जननायक कर्पूरी ठाकुर

संजीत कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

23 जनवरी 2024, आज सुबह उठते ही मैं अपने बरामदे की ओर बढ़ा, कोने में पड़ा अखबार मानो मेरा ही इंतजार कर रहा हो। जागने के बाद चाय की चुस्कियों के साथ अखबार की आदत मुझे शुरू से ही रही है। अखबार खोलते ही मेरी नजर हेडलाइन पर पड़ी, बड़े अक्षरों में लिखा था: “कौन थे कर्पूरी ठाकुर जिन्हें मिलेगा भारत रत्न?”

इस हेडलाइन ने मुझे कुछ दिन पहले हो रही दोस्तों के बीच चर्चा की याद दिला दी। मुद्दा था – दसवीं की परीक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यता का न होना। मेरे दोस्त ने कहा, “जब आगे की पढ़ाई अंग्रेजी में ही है तो दसवीं तक पढ़ाते क्यों नहीं?” बात तो सही थी। इस निर्णय का भुक्तभोगी तो मैं भी रहा हूँ। अंग्रेजी की अनिवार्यता नहीं थी, तो दसवीं तक ध्यान नहीं दिया और बारहवीं में पढ़ाई ही नहीं हो पाई। किंतु क्या इसी कारण से उनके योगदान को नजर-अंदाज किया जा सकता है? क्यों न अंत में आप ही इस पर विचार करें।

आइए, शुरुआत करते हैं उनके जीवन के एक प्रसंग से। साल 1938 की बात है, समस्तीपुर का पिटौझिया गाँव, शाम ढलने को थी। एक नौजवान लड़का शहर से मैट्रिक का परिणाम देखकर लौट रहा था। मैट्रिक में पहले दर्जे से पास हुआ था। यह वो दौर था जब मैट्रिक पास ढूँढ़ने से नहीं मिलते थे, फर्स्ट डिवीजन तो दूर की बात थी। लड़के के पिता ने जमींदार को यह खुशखबरी दी, सोचा कुछ आर्थिक सहायता हो जाएगी, तो उच्च शिक्षा में आसानी होगी। जमींदार के शब्द थे: “चलो, अब पैर दबाओ।” इन शब्दों

की चुभन से मुख्यमंत्री तक का सफर और सरकार बनने के बाद उनके द्वारा लिए गए हर निर्णय में असमानता को पाटने का प्रयास करता रहा।

सन् 1967 के आम चुनाव में कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में संयुक्त समाजवादी दल (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी) (संसोपा) बड़ी ताकत के रूप में उभरी। पहली बार सरकार में आने का मौका मिला। यह वो दौर था जब सरकार का उच्च शिक्षा पर ध्यान था। विश्वस्तरीय उच्च शिक्षा संस्थाओं का निर्माण हो रहा था, किंतु शिक्षा सार्वभौमिक नहीं थी, इसकी पहुँच कुछ वर्गों तक ही सीमित थी। आर्थिक विपन्नता को कर्पूरी जी ने करीब से देखा था। उन्होंने शिक्षा के लोकतंत्रीकरण पर ध्यान दिया। प्राथमिक तथा माध्यमिक तक निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई। बच्चों को निशुल्क पुस्तकें वितरित की गईं। उन्होंने यह पाया कि सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों के लिए कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में सफलता प्राप्त करने में अंग्रेजी दक्षता एक बड़ी बाधा थी। इसी के मद्देनजर, भारत में चल रही अंग्रेजियत की मुहिम के खिलाफ निर्णय लिया गया और मैट्रिक में अंग्रेजी भाषा में पास होने की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया। कई शुद्धतावादियों ने इसे 'कर्पूरी डिवीजन' कहकर उपहास भी उड़ाया। वे जानते थे कि अंग्रेजी की अनिवार्यता ग्रामीण परिवेश के बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए अवरोधक है। उन्हें अंग्रेजी भाषा की उपयोगिता का ज्ञान था, किंतु अशिक्षित बिहार के हालात पर यह कतई मंजूर नहीं था। उनका मानना था कि यह निर्णय अंग्रेजी भाषा के विरोध में नहीं, बल्कि अंग्रेजी में कमजोर छात्रों के उत्थान के लिए था।

हिंदी के प्रति उनका प्रेम सर्वव्यापी था। कार्यालयों में पूरी पत्रावलियाँ हिंदी में हों, राजभाषा परिषद का निर्माण, भारत के अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद, ऐसे अनेक कार्य हिंदी भाषा के उत्थान के लिए उन्होंने किए।

वर्ष 1977 के विधान सभा चुनाव में जनता पार्टी को एक बड़ा जनादेश मिला। कर्पूरी जी को भी दूसरा मौका मिला। इस बार रही-सही कसर पूरी करना चाहते थे। जातीय दंश झेल चुके कर्पूरी जी का मानना था कि एससी-एसटी के अलावा भी एक पिछड़ा वर्ग है और उस पिछड़े वर्ग को उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त होने के लिए आरक्षण की आवश्यकता है। इसके लिए मुंगेरीलाल कमीशन का गठन किया गया। वर्ष 1978 में, कर्पूरी ठाकुर ने बिहार में सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्गों के लिए 26% आरक्षण मॉडल पेश किया। इस स्तरीय आरक्षण व्यवस्था में, अन्य पिछड़ा वर्ग को 12%, सबसे पिछड़ा वर्ग को 8%, महिलाओं को 3% और उच्च जातियों में से आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों (ईबीसी) को राज्य सरकार की नौकरियों में 3% आरक्षण की व्यवस्था की। आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों तथा महिलाओं को दिया जाने वाला प्रतिनिधित्व उनकी सामाजिक संकल्पना का आधार था, जिससे सामाजिक तथा आर्थिक न्याय प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने की सुनिश्चितता की जा सके। इसके अलावा पंचायत व्यवस्था को बेहतर ढंग से लागू करने की बात हो या वृद्धा पेंशन की शुरुआत, मद्यपान निषेध का भी प्रयास किया गया।

ये निर्णय तत्कालीन समाज को स्वीकार्य नहीं थे। सरकार दो वर्षों में फिर से गिर गई और शुरू हुआ राजनीतिक निर्वासन का जीवन। अति पिछड़े समाज के नेता का टैग दे दिया गया। 1984 में समस्तीपुर के लोकसभा चुनाव में भी हार मिली। जिस नेता ने संसाधनों तक की पहुँच का लोकतंत्रीकरण करने का प्रयास किया, जिसने न्याय की हकदारी की बात की, जिसने बेजुबानों को जुबान देने का प्रयास किया, जिसने कलम और कलम के दम पर समाज बदलने की बात कही, जिसका ध्येय था: "हाथों में कलम रहे, जुबान पर किताब रहे, आने वाली पीढ़ियों का भविष्य उज्ज्वल रहे", उसे हाशिये पर रख दिया गया।

कर्पूरी ठाकुर का निधन 64 साल की उम्र में 17 फरवरी, 1988 को दिल का दौरा पड़ने से हुआ था। कर्पूरी ठाकुर को विरासत में कुछ भी नहीं मिला, जाते वक्त भी निजी रूप से अपने परिवार के लिए कुछ नहीं छोड़ा। दो बार के मुख्यमंत्री रहते हुए एक पक्का मकान भी नहीं बना पाए, पर हाँ, सामाजिक न्याय के संघर्षों की ऐसी विरासत जरूर छोड़ी, जिससे सामाजिक न्याय की आवाज को बुलंद करने वाले लोगों की एक पौध निकली। सच में कर्पूरी होना बहुत मुश्किल है।

अंत में आपसे मेरा एक सवाल है: क्या किसी नीति का निर्धारण तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं को देखकर नहीं किया जाना चाहिए? क्या पुरानी नीतियों की व्यवहार्यता का आकलन वर्तमान समय की चुनौतियों के आधार पर किया जा सकता है? क्या पुरानी नीतियों को समयानुसार संशोधन न करना, वर्तमान सरकारी तंत्र की असमर्थता का द्योतक नहीं है? सवाल उस दिन भी था, सवाल आज भी है।



त्रिपुरा के लोकनृत्य कलाकारों के साथ समूह चित्र

कोलकाता के स्ट्रीट फूड्स

सुदीप कुमार घोष

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोलकाता, जिसे 'सिटी ऑफ जॉय' भी कहा जाता है, अपनी समृद्ध और रंगीन संस्कृति, परंपराओं, साहित्य और इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि कोलकाता एक ऐसा शहर है जहाँ कोई भी भूखा नहीं सोता, क्योंकि यहाँ का स्ट्रीट फूड बहुत सस्ता होता है। कोलकाता के स्ट्रीट फूड्स का जादू ऐसा है कि ये न सिर्फ यहाँ के लोगों बल्कि पर्यटकों का भी दिल जीत लेते हैं। अगर आप इस शहर की गलियों में घूमने निकलें, तो हर मोड़ पर आपको छोटे-छोटे स्टॉल दिखेंगे, जो बेहद किफायती दामों में लाजवाब स्वाद परोसते हैं। कोलकाता का स्ट्रीट फूड सिर्फ खाना नहीं, बल्कि अलग-अलग स्वाद, मसालों और बनावट का ऐसा संगम है जो इस शहर की विविधतापूर्ण संस्कृति को बखूबी दर्शाता है। यहाँ आपको भारतीय, चीनी, मुगलई, ब्रिटिश और यूरोपीय फूड्स का अद्भुत मेल मिलेगा, जो हर खाने के शौकीन को खुश कर देता है।

तो चलिए, हम आपको कोलकाता के कुछ खास स्ट्रीट फूड्स के बारे में बताते हैं।

फुचका या पानी पुरी : कोलकाता का फुचका ऐसा स्ट्रीट फूड है, जिसे हर कोई पसंद करता है। चाहे बड़े अमीर लोग हों या आम आदमी, सब इसके दीवाने हैं। इसकी खासियत है इसका खट्टा-मीठा और मसालेदार स्वाद। फुचका दरअसल पानी पुरी का बंगाली वर्जन है। इसमें कुरकुरी पुरी के अंदर मसालेदार इमली का पानी, मसला हुआ आलू, चना और ढेर सारे मसाले डाले जाते हैं। इसका खट्टा-तीखा मजा ऐसा है कि एक बार खाने के बाद बस खाते ही रहना चाहते हैं। सच कहें तो कोलकाता का फुचका

वाकई जबरदस्त होता है! कहते हैं कि फुचकों की शुरुआत मगध साम्राज्य के समय हुई थी, जब राजा-रानी अपने लिए 'फुलकी' नाम की डिश बनवाते थे। यही फुलकी बाद में फुचका के नाम से मशहूर हो गई। आज यह स्ट्रीट फूड इतना पॉपुलर है कि कोलकाता की हर गली में मिल जाता है। लेकिन अगर आपको सबसे लाजवाब फुचका चाहिए, तो विवेकानंद पार्क, न्यू मार्केट और गरियाहाट जैसी फेमस जगहों पर जरूर जाना चाहिए। फुचके के भी कई तरह की वैरायटी होती हैं, जैसे पनीर फुचका, चॉकलेट फुचका, हरी मिर्च फुचका, दम फुचका और दही फुचका। हर वैरायटी का अपना अलग स्वाद और मजा है।

झालमुरी : झालमुरी कोलकाता के स्ट्रीट फूड का एक अहम हिस्सा है, जो हर कोने में आसानी से मिल जाती है। यह फूले हुए चावल का नाश्ता है, जिसमें तीखा, खट्टा और मसालेदार स्वाद होता है। इसे सड़क के दुकानदार ताजा-ताजा बनाकर देते हैं और कागज के कोने या छोटे कटोरे में परोसते हैं। झालमुरी में फूले हुए चावल के साथ मसाले, कटे हुए प्याज, हरी मिर्च, सब्जियाँ और सरसों का तेल डाला जाता है, जो इसे एक बेहतरीन चटपटा नाश्ता बनाता है। कहा जाता है कि 19वीं सदी में जब बिहार और ओडिशा से लोग कोलकाता आए, तो उन्होंने यहाँ झालमुरी बेचना शुरू किया। तब से यह शहर का मशहूर स्ट्रीट फूड बन गया। आज भी, यह कोलकाता की सड़कों पर हर किसी की पसंदीदा डिश है। खासतौर पर व्यस्त इलाकों में जैसे विक्टोरिया मेमोरियल के पास, एस्प्लेनेड, कॉलेज स्ट्रीट, गरियाहाट और हावड़ा ब्रिज जैसे स्थानों पर इसका असली मजा लिया जा सकता है। इन जगहों पर न केवल आपको स्वादिष्ट झालमुरी मिलेगी, बल्कि कोलकाता की सड़कों की जिंदादिली का भी अनुभव होगा।

काठी रोल : काठी रोल की शुरुआत 1930 के दशक में कोलकाता के प्रसिद्ध निज़ाम रेस्टोरेंट से हुई थी, जो न्यू मार्केट के पास था। "काठी"

शब्द उस सख्त लकड़ी की छड़ी से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल मीट को ग्रिल करने के लिए किया जाता था। कोलकाता का काठी रोल सिर्फ यहाँ ही नहीं, बल्कि भारत और विदेशों में भी एक पॉपुलर स्नैक बन चुका है। काठी रोल असल में एक स्टफ्ड पराठा होता है, जिसमें ग्रिल्ड मीट (चिकन, मटन या पनीर), सब्जियाँ, चटनी, प्याज और सलाद जैसी कई चीजें भरी जाती हैं। फिर इसे लपेटकर हाथ में पकड़ा जाता है, जो इसे चलते-फिरते खाने के लिए एकदम सटीक होता है। अगर आप कोलकाता में काठी रोल का असली स्वाद लेना चाहते हैं, तो आपको कुछ खास जगहों पर जाना चाहिए जैसे- निज़ाम रेस्टोरेंट (न्यू मार्केट एरिया), कोलकाता काठी रोल (पार्क स्ट्रीट एरिया), श्री मित्रा का काठी रोल (काशीनाथ दत्ता रोड, साउथ कोलकाता), जोर्बा काठी रोल (हाज़रा रोड, साउथ कोलकाता) और शोभा बाजार।

सिंघाड़ा : सिंघाड़ा कोलकाता का एक बहुत ही प्रसिद्ध स्ट्रीट फूड है, जो समोसा की तरह दिखता है, लेकिन इसमें एक अलग ट्विस्ट होता है। यह त्रिकोण आकार का एक कुरकुरा तला हुआ पेस्ट्री होता है, जो मसालेदार आलू, मटर, प्याज और दाल से भरा जाता है। इसमें जीरा, हल्दी, धनिया जैसे मसाले डाले जाते हैं, जो इसे और भी स्वादिष्ट बना देते हैं। कोलकाता में कुछ जगहों पर मटन सिंघाड़ा भी मिलता है, जो मांसाहारी खाने के शौकीनों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। सिंधारा को आप कोलकाता की सड़कों पर स्ट्रीट फूड स्टॉल्स, चाय स्टॉल्स और लोकल दुकानों पर आसानी से पा सकते हैं। अगर आपको सिंघाड़ा का असली स्वाद लेना है, तो आपको कुछ प्रसिद्ध जगहों पर जाना चाहिए जैसे श्री मिठाई (साउथ कोलकाता), चितपुर (नॉर्थ कोलकाता), कुछ प्रसिद्ध बंगाली स्वीट शॉप्स जैसे बलराम मल्लिक, मिठाईवाला, गरियाहाट मार्केट, टॉलीगंज और पार्क स्ट्रीट।

लूची और आलू दम : लूची-आलू दम, त्योहारों, पारिवारिक मिलन या खास अवसरों पर सुबह के वक्त खाए जाने वाला प्रसिद्ध व्यंजन है। लूची एक तली हुई फ्लैटब्रेड होती है, जो मैदा से बनाई जाती है। तली जाने पर यह फूल जाती है और बाहर से कुरकुरी, जबकि अंदर से मुलायम होती है। आलू दम मसालेदार आलू की करी होती है, जो जीरा, धनिया, गरम मसाला और सरसों के तेल में पकाई जाती है। लूची-आलू दम को आप कोलकाता की गलियों, रेस्टोरेंट्स और लोकल दुकानों पर भी पा सकते हैं। इसे चखने के लिए कुछ प्रसिद्ध जगहें हैं: स्ट्रीट वेंडर्स (चांदनी चौक, एस्प्लेनेड), मैदान इलाका, बड़ा बाजार, शोभा बाजार।

मोमोज : यह एक तिब्बती व्यंजन है, जो कोलकाता में बहुत प्रसिद्ध है। मोमोज के कई प्रकार होते हैं, जैसे स्टीम्ड मोमोज, फ्राइड मोमोज, पैन फ्राइड मोमोज, चीज़ मोमोज आदि। यहाँ के कई चौक-चौराहों पर आपको स्टीम्ड और फ्राइड मोमोज मिल जाते हैं, जो सब्जियों या चिकन से भरे होते हैं। मोमोज को आमतौर पर तीखी लाल चटनी के साथ परोसा जाता है, और कभी-कभी सूप के साथ भी। अगर आप कोलकाता में मोमोज का स्वाद लेना चाहते हैं, तो कुछ बेहतरीन जगहें हैं: डेंजोंग किचन, मोमोज जंक्शन (एस्प्लेनेड और पार्क स्ट्रीट), कोलकाता मोमोज (पार्क स्ट्रीट और न्यू मार्केट के पास), तिब्बत किचन (पार्क स्ट्रीट, बालीगंज और भवानीपुर), मोमोज आय एम (लेक गार्डन) और द ब्लू पॉप्पी (पार्क स्ट्रीट)।

भेलपुरी : भेलपुरी वैसे तो मुंबई का व्यंजन है, लेकिन यह पूरे भारत में, खासकर कोलकाता में, बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ इसके स्थानीय रूप और स्वाद इसे और भी आकर्षक बनाते हैं। भेलपुरी एक मिश्रण है पफ राइस, सेव (क्रिस्पी नूडल्स) और अन्य सामग्री जैसे सब्जियाँ, चटनी और मसाले। इसे आमतौर पर कागज के कोन में परोसा जाता है। यह खट्टा-मीठा सैक

कोलकाता के कई स्ट्रीट फूड हब्स और बाजारों में मिल जाता है। कुछ प्रसिद्ध जगहें जहाँ आप इस स्वादिष्ट स्नैक का आनंद ले सकते हैं, वे हैं: न्यू मार्केट, लोक मार्केट, पार्क स्ट्रीट, श्यामबाजार, और ईडन गार्डेंस क्षेत्र।

चूर्मुर : चूर्मुर, फुचके का ही भाई है, जो कि एक और स्वादिष्ट व्यंजन है जिसमें तीखे मसाले, आलू, पापड़ी और इमली इत्यादि होता है। इसमें आप अपनी पसंद के अनुसार चटनी डाल सकते हैं, जैसे मीठी, खट्टी या मिली-जुली चटनी, जिससे इसका स्वाद और बढ़ जाता है। कोलकाता में जहाँ फुचके मिलते हैं, वहीं चूर्मुर भी मिलता है, लेकिन कुछ बेहतरीन जगहें हैं: दक्षिणापन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, बड़ा फुचकावाला (न्यू अलीपुर), न्यू मार्केट (हॉग मार्केट)।

देशी नूडल्स : देशी नूडल्स एक लोकप्रिय भारतीय स्टाइल स्ट्रीट फूड है, जिसमें नूडल्स को भारतीय रूप दिया जाता है, जो मसालेदार और स्वादिष्ट भारतीय मसालों के साथ मिलकर एक बेहतरीन स्वाद देता है। यह नूडल्स पारंपरिक चीनी हक्का नूडल्स से प्रेरित होते हैं, लेकिन इसमें एक देशी ट्विस्ट होता है, जिसमें मसाले, जड़ी-बूटियाँ और चटनी का मिश्रण होता है। देशी नूडल्स को आप आसानी से फूड जॉइंट्स, स्ट्रीट स्टॉल्स और बड़े रेस्टोरेंट्स में पा सकते हैं, लेकिन इस डिश का असली स्वाद और फ्लेवर आपको चाइना टाउन (तिरेती बाजार) में मिलेगा।

कबाब: कबाब आमतौर पर मसालेदार मांस (चिकन, मटन, या मछली) या शाकाहारी सामग्री (पनीर, सब्जियाँ, या सोया) से बनाए जाते हैं, जिन्हें स्टिक पर लगाकर फिर ग्रिल, रोस्ट या फ्राई किया जाता है। कोलकाता में विशेष रूप से मुस्लिम बहुल इलाकों में ग्रिल्ड कबाब की एक बड़ी विविधता मिलती है। इनमें चिकन तंदूरी, चिकन सीक कबाब, मटन शम्मी कबाब, गलौटी कबाब और रेशमी कबाब शामिल हैं, जो अक्सर नान या परांठे के साथ परोसे जाते हैं। अगर आप कोलकाता में हैं, तो

यहाँ कुछ प्रसिद्ध जगहें हैं जहाँ आप असली कबाब का स्वाद ले सकते हैं: पीटर कैट (पार्क स्ट्रीट), ज़रीन (पार्क स्ट्रीट), भोजोहोरी मन्ना (कई स्थानों पर), निजाम्स (न्यू मार्केट), काठी रोल एक्सप्रेस (साल्ट लेक), कबाब-ए-क्यू (आलमबाजार), शाहबाग (पार्क स्ट्रीट)।

निष्कर्ष : कोलकाता का स्ट्रीट फूड स्वाद, बनावट और स्थानीय संस्कृति का एक विविध उत्सव है। मसालेदार चाट से लेकर रसीले कबाब तक, और कुरकुरी तली हुई नाश्तों से लेकर मीठे पकवानों तक, कोलकाता की गलियाँ अंतहीन खाद्य अनुभवों से भरी हुई हैं। आप जब भी पार्क स्ट्रीट, कॉलेज स्ट्रीट या हावड़ा ब्रिज के पास चल रहे हों, आप यहाँ के स्ट्रीट फूड्स पर विशेष ध्यान रखें, जिससे आप एक अभूतपूर्व अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।



आईए एण्ड एडी इंटरजोनल कैरम टूर्नामेंट प्रतियोगिता के विजेताओं के बीच पुरस्कार वितरण

जयपुर – गुलाबी नगरी

सुनिल बगड़िया
लिपिक

राजस्थान अपने इतिहास, परम्परा, लोक-जीवन, संस्कृति आदि की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। यह पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। आज मैं जयपुर (जिसे गुलाबी शहर भी कहते हैं) के बारे में और इसके मुख्य पर्यटन स्थलों के बारे में आपसे कुछ जानकारी साझा कर रहा हूँ।

जयपुर की स्थापना सन् 1727 में की गई थी। आमेर के राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा इस शहर का निर्माण करवाया गया था। बढ़ती आबादी और पानी की कमी के कारण उन्होंने अपनी राजधानी को आमेर से इस नए शहर जयपुर में स्थानान्तरित कर दिया। इस शहर की बसावट तथा वास्तु, प्रसिद्ध वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के सिद्धान्तों के अनुरूप की गई। 1876 में जयपुर के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया जब प्रिंस ऑफ वेल्स ने भारत का दौरा किया। उनके स्वागत के लिए, तत्कालीन महाराजा रामसिंह ने पूरे शहर को गुलाबी (हिर्मिची) रंग में रंगवाया। आमेर, नाहरगढ़ और जयगढ़ के किले तथा गुलाबी नगर जयपुर स्वागत के लिए तैयार हो गया। सारी दुनिया में अपनी तरह का पहला नियोजित शहर बना जयपुर। अपने रंग-बिरंगे रत्नों और आभूषणों के लिए प्रसिद्ध, राजस्थान की राजधानी अपने वैभवपूर्ण इतिहास के साथ, सबसे बड़ी पर्यटन नगरी बन गया है। पारंपरिक तथा आधुनिकता का सम्मिश्रण, इस शहर की खूबसूरती को चार चाँद लगा देता है।

शहर के कुछ मुख्य पर्यटन स्थल :

आमेर महल : जयपुर से 11 कि.मी. की दूरी पर पुरानी राजधानी आमेर, अपने किले और स्थापत्य के लिए, पर्यटकों का मुख्य आकर्षण है।

यूनेस्को की 'विश्व धरोहर' सूची में शामिल, पूर्व में कच्छवाहा राजपूतों की राजधानी आमेर महल, ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। यह हिन्दू व मुगल शैली का सुन्दर मिश्रण है। आमेर का महल सन् 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने दुश्मनों से मुकाबला और बचाव करने के लिए बनवाया था। आमेर महल का आंतरिक भाग, लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर से बनाया गया तथा इसमें नक्काशी का कार्य बहुमूल्य पत्थरों की जड़ाई, मीनाकारी का काम, पच्चीकारी काम, जगह-जगह लगे बड़े-बड़े दर्पण, इसकी भव्यता को चार चाँद लगाते हैं। मावठा झील में आमेर किले व महल का प्रतिबिम्ब और इसके नीचे की तरफ बनी 'केसर क्यारी' को देखकर पर्यटक आनन्दित होते हैं।

सिटी पैलेस : महाराजा जयसिंह द्वितीय ने सिटी पैलेस की संचरनाओं के निर्माण के साथ साथ, इसकी भव्यता को भी बढ़ाया। परकोटे वाले शहर के बीच स्थित, सिटी-पैलेस की कल्पना और निर्माण करवाने का श्रेय, जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय को जाता है। इसमें मुबारक महल, महारानी का महल तथा कई अन्य छोटे महल, चौक और चौबारे हैं। मुबारक महल में अब महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय बना दिया गया है, जिसमें शाही पोशाकें, अद्भुत पशमीना शॉल, बनारसी साड़ियाँ, रेशमी वस्त्र, जयपुर के सांगानेर प्रिंटेड कपड़े और अन्य बहुमूल्य रत्न जड़ित कपड़े रखे हुए हैं। महारानी पैलेस में सुसज्जित अस्त्र शस्त्र, कवच, ज़िरह-बख्तर आदि रखे हैं। महल की छत सुन्दर पेन्टिंग से सजाई गई है।

जंतर-मंतर : जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा बनवाई गई पाँच खगोलीय वेधशालाओं में सबसे विशाल है, जयपुर की यह वेधशाला। इसे जंतर मंतर कहते हैं। यूनेस्को द्वारा इसे विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है। इसमें बनाए गए जटिल यंत्र, समय को मापने,

सूर्य की गति व कक्षाओं का निरीक्षण तथा आकाशीय पिंडों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हैं।

हवा महल : बाहर की तरफ से भगवान कृष्ण के मुकुट जैसा दिखाई देने वाला यह महल अनूठा है। सन् 1799 ई. में महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा बनवाया गया यह महल पाँच मंजिला है तथा इसका डिज़ाइन वास्तुकार लालचंद उस्ताद द्वारा तैयार किया गया था। गुलाबी शहर का हवा महल, बलुआ पत्थर से राजस्थानी वास्तुकला और मुगल शैली का मिश्रण है। इसकी दीवारें सिर्फ़ डेढ़ फुट चौड़ी हैं तथा बेहद सुन्दर आकर्षक छोटे-छोटे कई आकार के झरोखे हैं। इसे बनाने का मूल उद्देश्य था कि शहर में होने वाले मेले-त्योहार तथा जुलूस को महारानियाँ इस महल के अन्दर बैठकर देख सकें। हवा महल गर्मी के मौसम में भी इन झरोखों के कारण वातानुकूलित रहता है। इसके आँगन में पीछे की तरफ एक संग्रहालय भी है।

अल्बर्ट हॉल (सेंट्रल म्यूजियम) : सन् 1876 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स ने इसकी आधारशिला रखी थी। इसका नाम लंदन के अल्बर्ट संग्रहालय के नाम पर रखा गया था। सर स्विन्टन जैकब द्वारा इसका डिज़ाइन बनवाया गया था तथा इंडो-सार्सेनिक स्थापत्य शैली के आधार पर इसका निर्माण करवाया गया। रामनिवास बाग के बीच में यह अल्बर्ट हॉल की अभूतपूर्व और मनमोहक इमारत, हर मौसम में पर्यटकों को आकर्षित करती है। इसमें जयपुर कला विद्यालय, कोटा, बूंदी, किशनगढ़ और उदयपुर शैली के लघु चित्रों का बड़ा संग्रह है। धातु की वस्तुएं, लकड़ी के शिल्प, कालीन, मूर्तियाँ, हथियार, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दाँत का सामान- सभी कुछ दर्शनीय हैं।

नाहरगढ़ का क़िला : अंधेरी रात में, तारों की छाँव में, नाहरगढ़ किले से जयपुर शहर का विहंगम, अभूतपूर्व, अद्भुत और मदमस्त नज़ारा, सारी दुनिया में और कहीं नहीं मिलेगा। शहर की रोशनी को देखकर लगता है, तारे जमीन पर उतर आए हैं। नाहरगढ़ यानि शेर का किला। इस किले में बनाए गए माधवेन्द्र भवन को ग्रीष्म काल में महाराजा के निवास के रूप

में काम में लिया जाता था। रानियों के लिए आरामदेय बैठक तथा राजा के कक्षों का समूह, आलीशान दरवाजों, खिड़कियों और भित्तिचित्रों से सजाया गया, नाहरगढ़ अतीत की यादों को समेटे शान से खड़ा है।

जयगढ़ दुर्ग : सन् 1726 में, महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा यह किला, आमेर की सुरक्षा के लिए बनवाया गया था। इसमें बने शस्त्रागार, अनूठा शस्त्र संग्रहालय, तोपें बनाने का कारखाना तथा विश्व की सबसे बड़ी तोप 'जयवाण' के कारण, राजस्थान में आने वाला प्रत्येक पर्यटक, जयपुर आकर इस तोप को जरूर देखना चाहता है। इस तोप को एक बार ही चलाया गया था जिससे शहर से 35 कि.मी. दूर एक तालाब का गड्ढा बन गया था। इसकी लम्बाई लगभग 31 फीट तथा वजन 50 टन है।

बिड़ला मंदिर : लक्ष्मी नारायण मंदिर, जो कि बिड़ला मंदिर नाम से अधिक लोकप्रिय है, मोती डूंगरी की तलहटी में स्थित है। ऊँचे भू-भाग पर अपेक्षाकृत आधुनिक रूप से निर्मित यह मंदिर पूरी तरह से श्वेत संगमरमर का बना है। यह मंदिर भगवान विष्णु, जिन्हें नारायण भी कहते हैं, को समर्पित है। उनके साथ ही धन और सौभाग्य की देवी लक्ष्मी हैं। यह मंदिर कला की एक नायाब रचना है। कई पौराणिक विषयों को शामिल करती अति सुंदर नक्काशी और मूर्तियाँ भी यहाँ शामिल हैं। रात में इस पर की गई रोशनी बेहद आकर्षक लगती है। मुख्य मंदिर के अतिरिक्त एक संग्रहालय है जो बिड़ला परिवार के पूर्वजों की यादगार को दर्शाता है।

जल महल : मानसागर झील के बीच में बना अद्भुत जलमहल, पानी पर तैरता प्रतीत होता है। इसकी पाल (किनारे) पर रोजाना स्थानीय तथा विदेशी पर्यटक मनमोहक नज़ारा देखने आते हैं। रात के समय जलमहल रंग बिरंगी रोशनी में परी लोक सा लगता है। महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा 18वीं सदी में बनवाया गया, 'रोमांटिक महल' के नाम से भी जाना जाता है। इसके चारों कोनों पर बुर्जियाँ व छतरियाँ बनी हैं। बीच में बारादरी, संगमरमर के स्तम्भों पर आधारित है।

सांभर झील : जयपुर से सिर्फ 70 किलोमीटर दूर यह देश की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। पर्यटन की दृष्टि से भी यह एक अत्यन्त आकर्षक स्थल है। शाकम्भरी माता मंदिर, देवयानी कुंड, शर्मिष्ठा सरोवर, नमक संग्रहालय, सर्किट हाउस, आदि भी महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल हैं। हज़ारों की संख्या में प्रवासी पक्षियों को देखने हेतु भी यह एक उपयुक्त स्थान है।

इसी श्रेणी में बहुत लंबी सूची है लेकिन अगर आपको भी घूमने का मौका मिले तो जीवन में एक बार जरूर जयपुर पधारे और इन कुछ प्रमुख स्थलों का भ्रमण जरूर करें। एक कवि ने भी जयपुर के बारे में स्थानीय भाषा में लिखा है:-

**“लिखबा गर बैठू तो, जाणे किती किताबा भर जावें
जैपुरियां रो बखाण मगर, सम्पूर्ण ना कोई कर पावें”**



नराकास बैठक के दौरान महालेखाकार महोदय पुरस्कार ग्रहण करते हुए

मेरा शहर: मोतिहारी

सूरज किशोर
सहायक लेखा अधिकारी

मैं इस लेख के माध्यम से अपने प्यारे शहर मोतिहारी के बारे में आप सबके साथ अपनी अंतर्दृष्टि साझा करना चाहता हूँ। मेरा प्यारा शहर मोतिहारी, जोकि मेरी जन्मभूमि है, बिहार राज्य के पूर्वी चंपारण जिले का एक प्रमुख शहर है। पूर्वी चंपारण में छह अनुमंडल (सब डिवीज़न) और 27 ब्लॉक हैं। जिले के सभी हिस्सों में भोजपुरी बोली जाती है, लेकिन हिंदी और उर्दू शिक्षा के माध्यम हैं। मोतिहारी नाम इसके दो प्राचीन राजाओं, यथा मोती सिंह और हरि सिंह के नामों से लिया गया है। इसी प्रकार चंपारण का अर्थ है चंपा के पेड़ों से भरा जंगल। चम्पक का मतलब है चंपा, पीले रंग का सुगन्धित फूल जबकि अरण्य का मतलब है जंगल।

मोतिहारी और भारत के पड़ोसी देश नेपाल की दूरी 151 किलोमीटर है। सड़क मार्ग से दूरी 182 किलोमीटर है। मोतिहारी, मुजफ्फरपुर से 80 कि. मी. पश्चिम की ओर एवं बिहार राज्य की राजधानी पटना से 152 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर पश्चिम में स्थित है। मोतिहारी राष्ट्रीय राजमार्ग एनएच 28 और एनएच 31 पर स्थित है, जो इसे भारत के विभिन्न प्रांतों से जोड़ता है। यहाँ के रेलवे स्टेशन को बापूधाम रेलवे स्टेशन के नाम से जाना जाता है, जो विभिन्न शहरों से मोतिहारी को जोड़ता है। यह स्टेशन हमारे प्यारे बापू महात्मा गाँधी के नाम से जाना जाता है। सत्याग्रह आंदोलन के समय राष्ट्रपति महात्मा गाँधी द्वारा भारत की स्वतंत्रता में योगदान के लिए एक विशेष श्रद्धांजलि के रूप में चंपारण स्टेशन का नाम मोतिहारी रेलवे स्टेशन से बदलकर बापूधाम मोतिहारी रेलवे स्टेशन कर दिया गया।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी इसे काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी समय में मोतिहारी राजा जनक के साम्राज्य का अभिन्न अंग था। स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महात्मा गाँधी ने तो अपने राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत यहीं से की थी। इस आंदोलन को चंपारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। चंपारण जिले के नील कृषकों को यूरोपीय उत्पादकों (ब्रिटिश) के शोषण से मुक्ति दिलवाने के लिए गाँधी जी ने राजेन्द्र प्रसाद की सहायता से एक अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन चलाया। इससे बिहार सरकार ने क्रोधित होकर गाँधीजी को बंदी बना लिया। सन् 1917 में गाँधीजी के प्रयासों से चंपारण कृषि अधिनियम पारित किया गया। इसके द्वारा नील का उत्पादन करने वाले कृषकों को राहत मिली। चंपारण भूमि पर आना और सत्याग्रह करना महात्मा गाँधी की पहचान बन गया। मोतिहारी में ही महात्मा गाँधी की याद में गाँधीवादी मेमोरियल स्तंभ बनाया गया है, जिसे शांति निकेतन के प्रसिद्ध कलाकार, नंदलाल बोस द्वारा डिजाइन किया गया था।

स्तंभ की आधारशिला 10 जून 1972 को तत्कालीन राज्यपाल, श्री डी. के. बरूच द्वारा रखी गई थी। यह 48 फीट लंबा पत्थर का स्तम्भ है, और उसी स्थान पर स्थित है जहाँ महात्मा गाँधी को अदालत में पेश किया गया था। ये हमारे मोतिहारी शहर में ही है। मुझे खुशी है कि देश की आजादी के लिए महात्मा गाँधी ने समय-समय पर कई लड़ाईयां लड़ीं। उनमें से एक मेरे प्यारे शहर मोतिहारी का भी सत्याग्रह था, जोकि आजादी के इतने वर्षों बाद भी, जब भी जिक्र होता है, चंपारण सत्याग्रह का नाम जरूर आता है। यह सत्याग्रह जो इतिहास के पन्नों में दर्ज है, युगों युगों तक दर्ज रहेगा। इससे मेरे शहर मोतिहारी के ऐतिहासिक महत्त्व का अभी पता चलता है।

मेरा बचपन मेरे शहर में गुजरा है, जिसकी अमिट छाप मेरे मन-मस्तिष्क पर हमेशा रहेगी। मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक प्रसन्नता का समय बचपन ही होता है। बचपन चिंताओं और कष्टों से मुक्त रहता है। वह

इतना निर्दोष होता है कि सांसारिक जीवन की बुराइयों से अनभिज्ञ रहता है। वह अक्सर स्वप्न-जगत में रहता है। जब मैं अपने बचपन के दिनों को याद करता हूँ, तो मुझे मेरा शहर मोतिहारी याद आ जाता है। मेरे बचपन की कुछ स्मृतियाँ अभी भी मेरे मन में ताज़ी हैं। उनमें से कुछ अत्यंत मधुर हैं। मुझे लगता था जैसे मुझे अपने शहर, अपने माता-पिता, भाई-बहन, घर, अपने शहर से कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा। मेरे दादाजी अक्सर मुझे अपने शहर के बारे में जानकारी देते थे, मुझे साथ लेकर घूमा करते थे। यहाँ अंग्रेजों के समय का बनाया हुआ कॉलेज, मुंशी सिंह महाविद्यालय भी है, जहाँ अंग्रेजों ने बहुत लोगों को काले पानी की सजा दी हुई थी। कॉलेज के दूसरे हिस्से के एक प्रांगण में तहखाना है, जो पूरी तरह से ताला बंद कर दिया गया है। जब मैं इस कॉलेज में पढ़ा, तब मुझे इसके बारे में जानकारी प्राप्त हुई। अंग्रेजों की बर्बरता का उदाहरण मेरी आँखों के सामने था।

मोतिहारी के निकट एक केंद्रीय विश्वविद्यालय भी खोला गया है, जहाँ विभिन्न स्थानों से बच्चे आकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। प्रतिभा के क्षेत्र में भी मेरा शहर अग्रणी रहा है। सोनी टीवी का शो, *कौन बनेगा करोड़पति*, जिसे अमिताभ बच्चन होस्ट करते हैं, उसके विजेता सुशील कुमार भी मेरे शहर के ही हैं। 2011 में उन्होंने केबीसी में 5 करोड़ रुपये जीते और हर घर में चर्चित हो गए थे। वह इस शो में 5 करोड़ रुपये जीतने वाले पहले विजेता थे।

यहाँ का चंपारण-मटन मांसाहारी व्यंजन पसंद करने वाले लोगों के बीच बहुत ही लोकप्रिय है। यह भारत प्रसिद्ध तो है ही, इसके साथ-साथ देश ही नहीं, विदेशों में भी आपको चंपारण-मटन नाम से दुकानें देखने को मिल सकती हैं। केसरिया बौद्ध स्तूप, जो विश्वख्यात है, वह भी हमारे मोतिहारी शहर के पास में ही अवस्थित है, जोकि दुनिया का सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप है। और भी बहुत कुछ है जो मुझे अपने शहर से जोड़े रखता है। समय के साथ, भले ही मैं अपने शहर से दूर हूँ, फिर भी वहाँ की याद हमेशा

आती है। अपने शहर से दूर दूसरे शहर की भीड़-भाड़, चकाचौंध, किसी के साथ अपनत्व का लगाव नहीं, सभी बस पैसा कमाने की मशीन हो गए हैं। लेकिन, आज भी मेरे शहर में वो अपनत्व है, जो लोगों को एक दूसरे से जोड़े रखता है। मोतिहारी की जनसंख्या भी अब बढ़ गयी है, बहुत लोग गाँव से शहर में बसने आ गए हैं। पहले कुल आबादी लगभग 1,26,158 थी। इसमें पुरुषों की संख्या लगभग 67,861 और महिलाओं की संख्या 58,297 थी। तदनुरूप, लिंगानुपात 859 था (यह आंकड़ा 2011 के अनुसार है)।

मोतिहारी के बारे में पुराण में वर्णित है कि यहाँ के राजा उत्तानपाद के पुत्र, भक्त ध्रुव ने यहाँ के तपोवन नामक स्थान पर ज्ञान प्राप्त के लिए घोर तपस्या की थी। चंपारण की भूमि “देवी सीता” की शरण-स्थली होने के कारण भी पवित्र मानी जाती है। प्रसिद्ध सोमेश्वरनाथ मंदिर भी मोतिहारी शहर से थोड़ी दूरी पर स्थित है, जहाँ सावन मास में मेला लगता है। लोग डाकबम लेकर जाते हैं। अरेराज स्थान में प्रसिद्ध सोमेश्वरनाथ मंदिर है जो बिहार भर में प्रसिद्ध है। पूर्वी चंपारण पूरा भक्तिमय शहर है। यहाँ, नरसिंह बाबा हनुमान मंदिर भी है, जहाँ लोग पूजा-पाठ करने दूर-दूर से आते हैं। प्रवचन देने के लिए भी इस प्रांगण में लोगों को बुलाया जाता है।

चक्षु महाराज जैसे ज्ञानी भी मेरे शहर की पावन धरती पर अपना प्रवचन देने के लिए आए हुए थे। अंग्रेजी साहित्य के विश्व विख्यात उपन्यासकार, जॉर्ज ऑरवेल का जन्म 25 जून, 1903 ईसवी को मोतिहारी शहर में अवस्थित गोपाल साह उच्च विद्यालय के निकट हुआ था। दरअसल, ऑरवेल के पिता ब्रिटिश राज में भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी थे। ऑरवेल का पूरा नाम एरिक आर्थर ब्लेयर था। ऑरवेल एक ऐसे राजनीतिक साहित्यकार थे जो अपनी रचनाओं के जरिये, समाज की बुराइयों को स्पष्ट रूप से सभी के सामने ला रहे थे।

ऐसे तो बहुत सारी बातें हैं, जो मेरे शहर मोतिहारी के बारे में हैं, जो इस शहर को दूसरे शहरों से अलग एक विशेष पहचान देती हैं। मैं इसकी जितनी तारीफ करूँ कम ही है। मुझे गर्व है कि मैंने इस शहर में जन्म लिया है। ये मेरी जन्मभूमि है। मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली मानता हूँ कि इसके बारे में कुछ बातें मैं लोगों से साझा कर सकता हूँ। भले ही मैं अपने देश के किसी भी हिस्से में चला जाऊँ, मगर मेरा शहर मोतिहारी हमेशा मेरे मन मस्तिष्क में विराजमान रहता है।



कार्यालय परिसर में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देशभक्ति
गीत की प्रस्तुति

भारतीय समाज: आधुनिक या उपनिवेशित

सौरभ राज

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के सामाजिक ढाँचों और भारतीय परंपरा से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा करते हुए हम 'आधुनिक' और 'तार्किक' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं परन्तु समय के साथ मुझे अहसास हुआ है कि इन शब्दों का उद्भव यूरोपीय उपनिवेशवाद से ही हुआ है। लेकिन क्या ये उपनिवेशिकता है और इसका उपनिवेशवाद और उपनिवेशन से क्या सम्बन्ध है ? इन शब्दों और सिद्धांतों का ऐतिहासिक सन्दर्भ क्या है और क्या इस सन्दर्भ के बाहर वे अर्थहीन हैं?

उपनिवेशवाद वह प्रक्रिया है जिसके तहत किसी देश के लोग दूसरे देश में उपनिवेश स्थापित करते हैं और उनका दोहन व शोषण करते हैं जिससे कि उपनिवेशकों के देश और उनका लाभ हो सके। उपनिवेशन की इस प्रक्रिया को उपनिवेशन कहते हैं और उपनिवेशन का प्रयोग अपनी सांस्कृतिक पहचान बढ़ाने के लिए करने की प्रक्रिया को उपनिवेशवाद कहते हैं। चार प्रकार के उपनिवेशवाद जाने जाते हैं जैसे कि दोहनात्मक उपनिवेशवाद, अधिवासी उपनिवेशवाद, प्रतिनिधि उपनिवेशवाद, आंतरिक उपनिवेशवाद। दोहनात्मक उपनिवेशवाद में उपनिवेश करने वाला देश अपने आर्थिक विकास के लिए पीड़ित देश के संसाधनों का दोहन करता है परन्तु उस देश के समाज का हिस्सा नहीं बनते और न ही उसमें बसते हैं।

अधिवासी उपनिवेशवाद में औपनिवेशिक लोग अपनी मातृभूमि से सम्बन्ध बनाए रहते हुए उपनिवेशित समाज में भी बड़ी संख्या में बस जाते हैं और देश व समाज के हर पहलू पर अधिकार जमाकर वहाँ के मूल निवासियों को द्वितीय स्तर का नागरिक बना देते हैं।

‘उपनिवेशिकता’ उस प्रक्रिया को कहते हैं जिससे कि उपनिवेशित समाज को मानसिक रूप से भी दास बनाया जाता है। उनकी संस्कृति और विचारधारा पर सम्पूर्ण वर्चस्व स्थापित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, उपनिवेश की उस नीति को ‘उपनिवेशिकता कहते हैं जिसमें उपनिवेशित समाज के मस्तिष्क को नियंत्रित कर के उसे उपनिवेशवादी समाज की तरह ढाला जा सके और साथ में उपनिवेशन का लक्ष्य भी प्राप्त हो। उपनिवेशिकता इस प्रकार से सांस्कृतिक उपनिवेशिकता भी है। वैसे तो यूरोपीय उपनिवेशवाद में पहले भी दूसरे उपनिवेशवाद हुए हैं परन्तु ‘उपनिवेशिकता’ शब्द का प्रयोग यूरोप के सम्बन्ध में ही किया जाता है। इस प्रकार से ‘उपनिवेशिकता’ का अर्थ मूलतः ‘यूरोपीय उपनिवेशिकता’ ही है। पीड़ित समाज के द्वारा अपनी सांस्कृतिक चेतना पर पुनः अपना वर्चस्व स्थापित करने के प्रयत्न को वि-उपनिवेशिकता कहते हैं। अभी तक यह प्रयत्न अधिकतर लैटिन अमेरिकी देशों में ही हुआ है।

विद्वान मानते हैं कि वि-उपनिवेशिकता की परिभाषाएं अलग-अलग संदर्भ में भिन्न भी हो सकती हैं परन्तु आमतौर पर अभी तक पश्चिमी यूरोपीय उपनिवेशवाद जैसी कोई दूसरी शक्ति नहीं देखी गयी है जो इतनी शक्तिशाली हो। यह उपनिवेशिकता इतनी विस्तृत, सर्वव्यापी और टिकाऊ रही है कि यह अभी तक पीड़ित समाज को प्रभावित करती है और यही नहीं बल्कि इसका प्रभाव बाकी के विश्व पर भी बहुत गहरा हुआ है। जब हम यूरोपीय उपनिवेशवाद की बात करते हैं तो हम पश्चिमी साम्राज्यवाद की भी बात करते हैं क्योंकि इसका जन्म यूरोपीय उपनिवेशवाद से ही हुआ था। विद्वानों ने यूरोपीय उपनिवेशवाद से सम्बन्धित उपनिवेशिकता का और पश्चिमी साम्राज्यवाद का अध्ययन करने का प्रयत्न किया है। इनके बारे में एक शब्द का प्रयोग करें तो इसे ‘यूरो केंद्रीयता’ कहते हैं।

‘यूरो-केंद्रीयता’ का जन्म 15वीं शताब्दी के ‘खोज के युग’ में हुआ। यह युग तब प्रारम्भ हुआ जब क्रिस्टोफर कोलंबस ‘नए विश्व’ को खोजने

के लिए 1492 में जहाजी बेड़ों में निकला था। यह 'नया विश्व' अधिकतर गैर-ईसाई ही था। कोलंबस की यात्रा से उपनिवेशवाद के एक नए युग का प्रारम्भ हुआ जिसने यूरोपीय इतिहास का एक नया पन्ना लिखा। इस घटना के बाद समय, स्थान और व्यक्तिपरकता की हमारी परिभाषाओं में जमीन-आसमान का अंतर आया। परन्तु जो परिभाषा सबसे अधिक बदली, वह थी 'दूसरे' की परिभाषा जिसे हम सांस्कृतिक और सभ्यता के रूप में प्रयोग करते हैं। सांस्कृतिक 'दूसरा' अर्थात् ऐसा व्यक्ति और समुदाय जो हमारे धर्म, देश, परिस्थिति और काल के अनुभव से बिल्कुल भिन्न हो। ऐसा माना जाता है कि मध्य युग की 'नवचेतना' में ही 'खोज के युग' के बीज थे। खोज के युग के बाद 'नवचेतना' का युग आया और उसके बाद 'चर्च सुधार' का युग आया जिसका निष्कर्ष 'वेस्टफालिया अनुबंध' में हुआ। तत्पश्चात 'ज्ञानोदय' का युग और 'औद्योगिक क्रान्ति' का युग आया जिसे कि यूरोपीय सभ्यता का चरम कहा जाता है।

'नवचेतना', 'सुधार', और 'ज्ञानोदय' जैसे शब्दों का प्रयोग वैश्विक संदर्भ में ऐसे किया जाता है जैसे कि यूरोप का इतिहास और चेतना पूरे विश्व का इतिहास और चेतना हों। आधुनिक काल के इतिहास के बारे में यह और भी सही है। यह यूरोपीय उपनिवेशिकता की सफलता का ही एक नमूना है। ऐसा माना जाता है कि 15वीं से 19वीं शताब्दी के बीच 'आधुनिकता' और 'आधुनिक विचारों' का उद्भव हुआ। इसे न केवल यूरोपीय देश अपितु उपनिवेशित देश भी अकाट्य सत्य मान के चलते हैं। समसामयिक संभाषण भी 'आधुनिकता' की इन्हीं परिभाषाओं पर टिका हुआ है। इन 'आधुनिक' विचारों का प्रभाव हम पर बहुत गहरा पड़ा है। प्रकृति, ब्रह्माण्ड, मनुष्यता, धर्म, रस, भाषा, समाजों का राजनैतिक व्यवस्थापन, राज्य की प्रकृति, उसके धर्म के साथ सम्बंध, मानवीय अधिकारों के सिद्धांत, विज्ञान, विकास अथवा सिद्धांतों को हम कैसे देखते हैं इस पर 'आधुनिक' विचारों का प्रभाव बहुत गहरा पड़ा है और इनकी परिभाषा और देखने के ढंग को बहुत

गहराई से बदला जा चुका है। उपनिवेशवाद के उस युग में यूरोप के देहाती और प्रांतीय विचारों को वैश्विक आवरण पहना कर पूरे विश्व पर बलपूर्वक थोपा गया और साथ ही साथ उपनिवेशित समाज की विचारधाराओं और दृष्टिकोणों को नष्ट किया गया।

वैसे तो एशियाई देशों को इस सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए था क्योंकि एशिया में अभी भी कई मूल संस्कृतियां जीवित हैं जिन्होंने कई प्रकार के उपनिवेशवाद को हरा दिया है। सफलता से कई उपनिवेशी शक्तियों को हराने के कारण ही यह सारे समाज इस युग में उपनिवेशिकता के सबसे बड़े शिकार हैं। इस कारण से एशियाई वाणी इस चर्चा में और भी महत्वपूर्ण है। परन्तु फिर भी एशिया की वाणी इस चर्चा में कहीं भी नहीं सुनाई पड़ती। इसका एक ही कारण है कि एशियाई समाज भारी रूप से उपनिवेशिकता से ग्रसित है और इस बात से वह अनभिज्ञ है। भारत और फिलिस्तीन में इस कारण से ही उत्तर उपनिवेशवादी विचार का बोलबाला रहा है।

एशियाई समाज बहुत विविध है और उपनिवेशवाद को लेकर उसका अनुभव भी भिन्न रहा है। इन सबका अध्ययन वांछनीय है। इस कारण से एशियाई समाजों और देशों को उपनिवेशिकता की परिभाषाएं अपने अनुसार गढ़ना चाहिए।



- ♦ “भारतेन्दु और द्विवेदी ने हिंदी की जड़ पाताल तक पहुँचा दी है; उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा।”

- शिवपूजन सहाय

- ♦ “हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।”

- राजेंद्रप्रसाद

कल्कि अवतार

स्वाती कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

रामायण तथा महाभारत दोनों की गणना धार्मिक ग्रंथों में की जाती है। हालांकि महाभारत का युग रामायण के बाद का माना जाता है। युगों का विभाजन चार भाग में किया गया है। प्रथम है- सतयुग, द्वितीय है- त्रेतायुग, तृतीय है- द्वापरयुग तथा चतुर्थ है- कलयुग। प्रत्येक युग के गुण उनके नाम के साथ जुड़े हुए हैं। चूँकि सतयुग आध्यात्मिक रूप से सबसे उन्नत था जबकि कलयुग सबसे भौतिकवादी है। कलयुग में लोग बाहरी चमक-दमक व दिखावे की ओर ज्यादा आकर्षित नजर आते हैं। कहते हैं कि जब भी किसी युग में धरती पर पाप अत्यधिक बढ़ जाता है और धर्म की हानि होने लगती है तब ईश्वर को धर्म की रक्षा के लिए यहाँ अवतरित होना पड़ता है।

भागवत पुराण के अनुसार भगवान विष्णु के असंख्य अवतार हुए हैं। परंतु उनके दस प्रमुख अवतार हैं- 1. मत्स्य, 2. कूर्म, 3. वराह, 4. नरसिंह, 5. वामन, 6. परशुराम, 7. राम, 8. कृष्ण 9. वेंकटेश्वर और 10. कल्कि। उनके इन दस अवतारों को दशावतार (दश+अवतार) की संज्ञा दी गई है। इनमें से सतयुग में पहले तीन अवतार मत्स्य, कूर्म व वराह अवतरित हो चुके हैं। त्रेतायुग में नरसिंह, वामन, परशुराम व राम ने धरती पर अवतार लिया। द्वापरयुग में भगवान श्री कृष्ण अवतरित हुए व उनके पश्चात् भगवान वेंकटेश्वर का अवतार हुआ।

हालांकि तत्कालीन समय कलयुग है। अतः भागवत पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार इस युग के अंत में धर्म की रक्षा करने के लिए भगवान श्री विष्णु का कल्कि अवतार होगा। इससे अन्याय और अनाचार का अंत होगा और न्याय का शासन होगा ताकि सत्य युग की फिर से स्थापना की जा सके।

श्रीमद्भागवत महापुराण के 12वें स्कंद के अनुसार भगवान श्री विष्णु का कल्कि अवतार कुछ इस प्रकार होगा-

**सम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।**

अर्थात् सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक ब्राह्मण होंगे। उनका हृदय बहुत ही उदार व भगवत-भक्ति से परिपूर्ण होगा। उनके घर ही भगवान कल्कि का अवतार होगा। चूँकि कल्कि भगवान विष्णु का दसवां अवतार होगा। उनके छठवें अवतार भगवान परशुराम कल्कि के गुरु होंगे। उन्हें अमरत्व का वरदान प्राप्त है। वे उन्हें युद्ध की शिक्षा प्रदान करेंगे। वे ही उन्हें भगवान शिव की तपस्या करके उनके दिव्यास्त्र को प्राप्त करके अधर्म का अंत करने का उपदेश देंगे।

भगवान कल्कि की माता का नाम सुमति और पिता का नाम विष्णुयश होगा। अल्पायु में ही वे वेदादि शास्त्रों का पाठ करके महापंडित हो जाएंगे। कुछ समय पश्चात् वे जीवों के दुःख से कातर हो जाएँगे। उसके बाद वे महादेव की उपासना पूर्ण करके उनसे शस्त्रविद्या प्राप्त करेंगे। उनका विवाह बृहद्रथ की पुत्री पद्मादेवी के साथ होगा। भगवान कल्कि देवदत्त नामक सफेद घोड़े पर आरूढ़ होंगे। उनके पास सुदर्शन चक्र व हाथ में चमचमाती तलवार होगी। इसी से वे समस्त दुष्टों और पापियों का संहार करेंगे। तत्पश्चात् ही सतयुग आरंभ होगा।

धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु के कल्कि अवतार को उनका भावी एवं अंतिम अवतार माना जाएगा। भगवान का यह अवतार “निष्कलंक भगवान” के नाम से भी जाना जाएगा। यह जानकर सबको बहुत आश्चर्य होगा कि भगवान श्री कल्कि 64 कलाओं से परिपूर्ण निष्कलंक अवतार होंगे। युग परिवर्तनकारी भगवान श्री कल्कि के अवतार का प्रयोजन विश्वकल्याण बताया गया है।

भगवान हरि का 'कल्कि' अवतार कलयुग के अंतिम चरण में होगा। पुराणों के अनुसार कलयुग की आयु 4,32,000 वर्ष होगी। कल्कि अवतार के साथ ही कलयुग का अंत एवं सतयुग की शुरुआत होगी। अर्थात् यह कलयुग और सतयुग का संधिकाल होगा। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कल्कि अवतार में सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को सम्भल नामक ग्राम में अवतरित होंगे। रामावतार के समान ही वे कुल चार भाई होंगे। उनके अन्य भाइयों के नाम सुमंत, प्राज्ञ और कवि होंगे। चारों मिलकर धर्म की स्थापना करेंगे।

कल्कि अवतार के बारे में यह भी कहा जाता है कि वे धरती पर प्रलय लाएँगे। उसके बाद एक नई सृष्टि की स्थापना होगी। उनके जन्म का उद्देश्य धर्म की क्षति को रोकना और कलि राक्षस का वध करना होगा। सभी पापी और अधर्मी जन उनके शत्रु होंगे। कल्कि अवतार का विवरण कल्कि पुराण और अग्नि पुराण में मिलता है।

एक कथा यह भी प्रसिद्ध है कि देवी वैष्णवी यानि माता वैष्णो देवी भगवान श्री राम से विवाह करना चाहती थीं। लेकिन श्री राम ने अपने पत्नीव्रत के कारण मना कर दिया। हालांकि शर्त के अनुसार उन्हें श्री राम को उनके बदले हुए वेश में पहचानना भी था। परंतु उनकी भक्ति में लीन माता उनको पहचान नहीं पाई। अंत में उन्हें ये वरदान दिया कि अपने कल्कि अवतार में वे उनसे विवाह अवश्य करेंगे। वे रामावतार के समय से ही अपने मन में भगवान से विवाह की मनोकामना लेकर घोर तपस्या में लीन हैं। उनकी तपस्या भी कल्कि भगवान पूर्ण करेंगे और उनसे विवाह करेंगे। इस अवतार में उनके चार पुत्र होंगे जिनके नाम जय, विजय, मेघमाल और बलाहक होंगे।

लोगों की ऐसी मान्यता है कि वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ मेले में भगवान कल्कि स्वयं भी सम्मिलित होंगे। महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक होगा। महाकुंभ

दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक मेला है। इस महाकुंभ के दौरान कुल छः शाही स्नान होंगे। चूंकि यह 144 साल वाला महाकुंभ है, इसलिए इसका विशेष अर्थ होगा। 12 X 12 साल होने के कारण ही इसे महाकुंभ की संज्ञा दी गई है। इसमें लगभग 40 करोड़ श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना जताई जा रही है।

प्रयागराज में पवित्र नदियों गंगा, यमुना व पौराणिक सरस्वती के संगम स्थल पर महाकुंभ का आयोजन होगा। यानि यों कहें तो इसकी महत्ता तो ऐसे भी सर्वाधिक है। साथ ही पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान निकले अमृत कलश से अमृत की बूंदें चार अलग-अलग स्थानों पर गिरी थीं। उनमें से प्रयागराज भी एक पवित्र स्थल है। बाकी के अन्य तीन स्थान हैं- हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इन चारों ही जगहों पर कुम्भ का आयोजन किया जाता है।

भगवान श्री कल्कि का प्राचीन कल्कि विष्णु मंदिर उत्तर प्रदेश के शम्भल जिले में स्थित है। हिन्दू धर्मावलम्बी कल्कि जयंती को एक त्योहार के रूप में मनाते हैं। यह भगवान कल्कि के अनुमानित जन्मदिवस के अवसर पर मनाते हैं। अंततः यह कहना अतिशयोक्ति बिल्कुल भी नहीं होगी कि कल्कि अवतार के जरिए भगवान विष्णु धरती से पापियों का नाश करेंगे और यहाँ धर्म की पताका लहराएँगे।

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं श्रीजाम्यहम्॥**

अर्थात्- "हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप में लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।"



भगवान पर भरोसा रखो



हिमांशु खोखर
डी.ई.ओ. ग्रेड 'बी'

एक राज्य में एक राजा रहता था, वह बहुत दयालु था। वह प्रजा की मन से सेवा किया करता था। उसके राज्य में प्रजा बहुत प्रसन्न रहती थी। प्रजा को किसी प्रकार की कोई परेशानी होती थी तो राजा तुरंत परेशानी दूर कर देता था। राजा की कोई संतान नहीं थी। एक दिन राजा ने सोचा कि मेरे बाद इस राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा क्योंकि मेरी तो कोई संतान नहीं है। इसी सोच में राजा परेशान रहने लगा। उसके दरबारियों ने कारण पूछा तो उसने बताया कि उनकी परेशानी का कारण यह है।

राजा के दरबारियों ने पूजा-पाठ, आदि की सलाह दी। सब कुछ किया गया, परंतु फिर भी कोई संतान नहीं हुई। तब एक पुरोहित ने उनको सलाह दी कि यदि आप किसी बच्चे की बलि चढ़ायें तो आपको संतान हो सकती है। यह सुनकर राजा ने राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो अपने बच्चे को मुझे देगा उसे राज्य के राजकोष से बहुत सारी धन-दौलत, मकान तथा जमीन दे दी जाएगी। सभी जगह चर्चा होने लगी परंतु कोई राजा को पुत्र देने के लिए तैयार नहीं हुआ। इसी खोज-बीन के दौरान राजा के सिपाहियों को एक ऐसा गरीब परिवार मिला जिनके यहाँ बहुत गरीबी थी। उस परिवार में पाँच बच्चे थे, जो पढ़ने-लिखने में काफी होशियार थे। यद्यपि, पाँचवाँ बच्चा पढ़ता लिखता नहीं था, उसका भगवान की भक्ति की तरफ ज्यादा झुकाव था। वह प्रतिदिन मंदिर जाता था और भगवान की पूजा किया करता था। लेकिन पढ़ाई-लिखाई में बिल्कुल कमजोर था। माता-पिता ने विचार किया कि हमारा यह बच्चा पढ़ता-लिखता तो है नहीं, इधर-उधर फालतू का घूमता रहता है। क्यों न इसे राजा को दे दिया जाए, बाकी चार बच्चे तो हैं ही,

बदले में बहुत सारा धन, जमीन, आदि मिल जाएगी और हमारी गरीबी दूर हो जाएगी। यह सोचकर उस बच्चे के माता-पिता बच्चे को राजा को देने के लिए तैयार हो गए।

बच्चे को राज दरबार में लाया गया और उसे नहला-धुलाकर अच्छे नये वस्त्र पहनाए गए। अच्छा खाना खिलाया गया। बच्चा बहुत खुश था। उस बेचारे बच्चे को क्या पता कि उसके साथ आगे क्या होने वाला है। बच्चे को तिलक करने के पश्चात् माला पहनाई गई। फिर बच्चे को बताया गया कि “तुम्हारी बलि दी जाएगी, बताओ तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?” बच्चा सोच में पड़ गया और काफी देर तक मौन रहा। राजा ने एक बार फिर पूछा, “बताओ, तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?” बालक ने जवाब दिया, “महाराज, यदि आप हमारी इच्छा ही पूरी करना चाहते हैं, तो मेरे लिए बालू मंगवा दी जाए। राजा की आज्ञा से बालू का इंतजाम किया गया। बच्चे ने उस बालू से चार छोटे घर बनाए। सब लोग बड़े ही आश्चर्य से उस बालक को देख रहे थे और मन में सोच रहे थे कि आखिर यह लड़का क्या कर रहा है? चारों घर बनाकर वह लड़का पहले घर के सामने खड़ा हो गया और कुछ सोचता रहा, फिर, उस घर को पैर मारकर तोड़ दिया। फिर दूसरे के सामने खड़ा होकर और कुछ सोचकर उसे भी तोड़ दिया। इसी प्रकार तीसरे घर के सामने खड़ा हुआ और कुछ देर बाद उसको भी तोड़ दिया। अंत में चौथे घर के पास गया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कुछ देर बाद राजा से बोला, “महाराज, मैं अब तैयार हूँ। अब आप मेरी बलि दे सकते हैं।”

राजा ने यह सुनकर उस बालक से पूछा, “पहले मुझे यह बताओ कि ये तुमने चार बालू के घर बनाए और उसमें से तीन घरों को तोड़ दिया और चौथे के सामने हाथ जोड़े और उसको नहीं तोड़ा।” अब उस बालक ने राजा को बताया कि पहला घर मेरे माता-पिता का था, जिन्होंने मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा और बड़ा किया, लेकिन मुझे आपको सौंपते हुए यह भी नहीं सोचा कि हमारे पुत्र की हत्या हो जाएगी। उनको मुझ से अधिक धन

प्यारा लगा और उन्होंने उसको महत्त्व दिया। ऐसे माता-पिता के साथ रहने से क्या फायदा।

दूसरा घर हमारे सगे-संबंधी, रिश्तेदारों का था, जिन्होंने हमारे माता-पिता को यह कार्य करते हुए रोका नहीं कि अपने प्यारे पुत्र को धन के लालच में क्यों मौत के मुँह में भेज रहे हो। बच्चा यह कह कर शांत हो गया, राजा ने फिर पूछा, “तीसरा घर किसका था जिसको तुमने तोड़ा ?” बालक ने जवाब दिया, “महाराज, यह घर आपका था, जिसको मैंने यह सोचकर तोड़ा कि जिस राजा को अपने राज्य की प्रजा की रक्षा करनी चाहिए उस राजा ने स्वार्थ में आकर अपनी संतान को पाने के लिए प्रजा की हत्या करने का आदेश दे दिया। अतः मैंने घर तोड़ दिया और अंत में मेरे पास कोई मेरी रक्षा के लिए नहीं बचा। तो मैंने भगवान को ही अपना सहारा माना और उनके घर के सामने बैठकर प्रार्थना की। भगवान अब मुझे आप का ही सहारा है। भगवान मेरी रक्षा करो।”

राजा बालक की बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने जमीन पर घुटने टेककर, हाथ जोड़कर भगवान से माफी मांगी और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। फिर, वह कहने लगा कि- “हे भगवान, मैं स्वार्थ में अंधा होकर अपनी प्रजा की हत्या करने जा रहा था।” उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और गले से लगा लिया।

राजा ने राज्य में ऐलान करवा दिया कि-

“मैं आज से इस बालक को गोद लेता हूँ, और हमारे राज्य का उत्तराधिकारी यही बालक होगा।”

राजा के इस निर्णय से सारी राज्य की प्रजा प्रसन्न हो गयी।



राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधान

संविधान के लागू होने के साथ ही 26 जनवरी, 1950 से संविधान की धारा 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह उल्लिखित है कि भारत सरकार का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। तत्पश्चात् राष्ट्रपति जी ने सन् 1952 तथा 1955 और 27 अप्रैल, 1960 को राजभाषा हिंदी से सम्बंधित विस्तृत आदेश जारी किए। तदुपरांत संविधान में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित, 1967) तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 की शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987) बना। राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है-

राजभाषा अधिनियम धारा, 1963 (यथासंशोधित, 1967) की धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये जाने वाले कागजात:

निम्नलिखित दस्तावेज आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जायें- संकल्प, साधारण आदेश, नियम, अधिसूचनायें, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति, संसद के किसी सदन या सदनो के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागज पत्र, संविदाओं और करारों का निष्पादन, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र और निविदा के लिए नोटिस और प्रारूप।

राजभाषा नियम, 1976 (यथासंशोधित, 1987, 2007, 2011) के प्रमुख नियम:

नियम 5- हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिन्दी में दिया जाना: हिंदी में पत्र आदि का उत्तर चाहे वे किसी भाषा क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी

राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिया जाए।

नियम 6- हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग: अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाए एवं ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 7- आवेदन, अभ्यावेदन आदि की भाषा: कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है। यदि कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करता है या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

नियम 7 (3)- सेवा संबंधी आदेश या सूचना: यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाई भी है) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसको कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, हिन्दी या अंग्रेजी में होना चाहिए, तो वह उसे किसी विलम्ब के बिना उसी भाषा में दिया जाए।

नियम 8- नियम बनाने की शक्ति:

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी।
2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो

सकेगी। यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात् वह ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा। यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात् यह निष्प्रभावी हो जाएगा। किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभावी होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नियम 9- हिन्दी में प्रवीणता: यदि किसी कर्मचारी ने

1. मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या
2. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या
3. यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

नियम 10- हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान:

यदि किसी कर्मचारी ने मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता

है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
2. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
3. केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 10 (4) एवं 8 (4)

केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों को जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और जो राजभाषा नियम 10 (4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के

अंतर्गत टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 11- मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि:

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी; परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12- अनुपालन का उत्तरदायित्व:

1. केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह-
 - i. यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है; और
 - ii. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

2. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

राजभाषा संबंधी भारतीय संविधान के अनुच्छेदों का संक्षिप्त परिचय:

अनुच्छेद 343- संघ की भाषा

अनुच्छेद 344- राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

अनुच्छेद 345- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं

अनुच्छेद 346- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347- किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

अनुच्छेद 348- उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियम, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 349- भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

अनुच्छेद 350- व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

अनुच्छेद 351- हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

अनुच्छेद 120- संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा

अनुच्छेद 210- विधानमण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा



वर्ष 2024 के दौरान कार्यालयीन गतिविधियों की कुछ झलकियाँ:



ऑडिट दिवस के अवसर पर महालेखाकार
महोदय संबोधित करते हुये



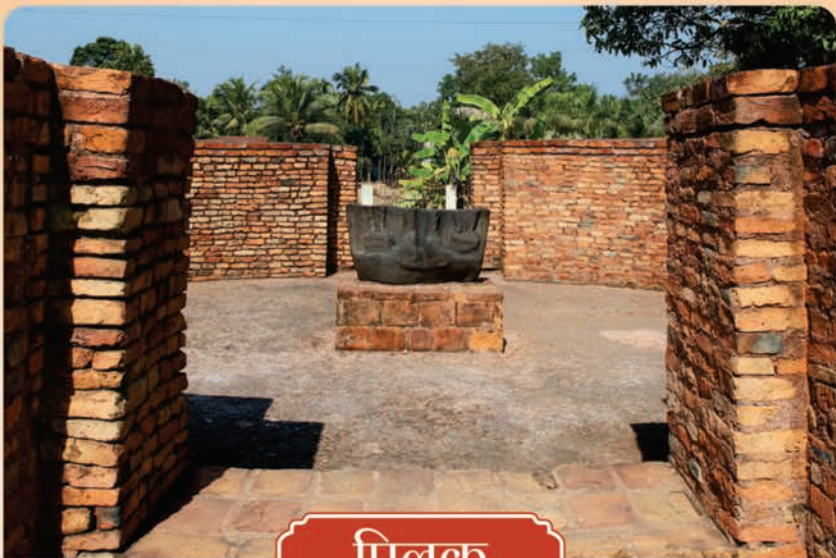


नोआतिया जनजाति

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अधिकतर आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं। त्रिपुरा में लगभग 19 जनजातियाँ हैं जिनमें से नोआतिया जनजाति एक है। यह जनजाति त्रिपुरा राज्य के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों में निवास करती है, इनका संबंध तिब्बती-बर्मा भाषा परिवार से माना जाता है। इनकी भाषा कोकबरोक है। कुछ लोग बंगाली भी बोलते हैं। इनकी



संस्कृति में पारंपरिक लोकगीत तथा लोकनृत्य जैसे होजागिरी, गरिया आदि हैं। यह समुदाय मुख्य रूप से कृषि, वन उत्पादों और हस्तशिल्प कार्यों से अपनी जीविका चलाते हैं। अब कई लोग छोटे व्यवसाय तथा सरकारी नौकरियाँ भी करने लगे हैं। नोआतिया जनजाति के लोगों ने हिन्दू तथा पारसी धर्म को अपनाया है, ये प्रकृति पूजा में विश्वास रखते हैं। यह समुदाय त्रिपुरी आदिवासियों के पारंपरिक त्योहारों जैसे खारची पूजा, गंगोराई पूजा और लंप्रा पूजा बड़े धूमधाम से मनाता है। त्रिपुरा सरकार द्वारा नोआतिया जनजाति को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई प्रयास किए हैं। विभिन्न योजनाएँ चलायी जा रही हैं।



पिलक

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने साल 1998 से लगभग तीन साल तक दक्षिण त्रिपुरा जिला का पिलक इलाके में खुदाई करने के बाद श्याम सुंदर टीले पर एक जले हुए ईंटों से बने बौद्ध मठ की खोज की। यह पूरा मठ धन (+) के चिह्न जैसे आकार में बना है, जिसका केंद्र एक मुख्य कमरे (गर्भगृह) के चारों ओर फैला हुआ है। हालाँकि, इसका ऊपरी हिस्सा पूरी तरह टूट चुका है। मठ का मुख्य कमरा चारों दिशाओं से जुड़ा हुआ है। मठ की बाहरी दीवारों के नीचे मिट्टी की बनी सजावटी पट्टियाँ (टेराकोटा) लगी हैं।

यहाँ बौद्ध देवी-देवताओं के साथ-साथ कार्तिक, गणेश, नर्तक, संगीतकार, तीरंदाज, योद्धा, गंधर्व, किन्नर, पौराणिक जानवरों की मूर्तियाँ, सूरजमुखी, कमल और तरह-तरह के पशु-पक्षियों की आकृतियाँ भी मिली हैं। खुदाई में मिट्टी की कई सजावटी पट्टियाँ भी निकली हैं। मठ के सबसे ऊपरी हिस्से में अवलोकितेश्वर की पत्थर की मूर्ति है, जिसके दाएँ-बाएँ तारा और हयग्रीव की आकृतियाँ बनी हैं। मठ के बीचोंबीच एक पत्थर की टूटी हुई मूर्ति के अवशेष हैं, जिसमें अब सिर्फ देवता के पैर ही बचे हैं। इस मठ की बनावट देखकर पता चलता है कि इसे 9वीं से 10वीं शताब्दी ईसवी के बीच बनाया गया होगा।